वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़
तर्कशील पथ
TARKSHEEL
अक्तूबर 2021
COVID-19
CORONAVIRUS
VACCINE
अंदर पढ़े :
• आसा राम को जेल के पीछे (4)
• कोरोना वैक्सीन-वैज्ञानिक समझ... (15)
• राजनीति में बढ़ता अपराधीकरण (25)
• आस्था से नहीं विज्ञान से देश आगे बढ़ेगा (31)
₹20
जो बात समझ नहीं पडती उस की पूजा की जाती है या उस से डरा जाता है।...एलिस वाकर
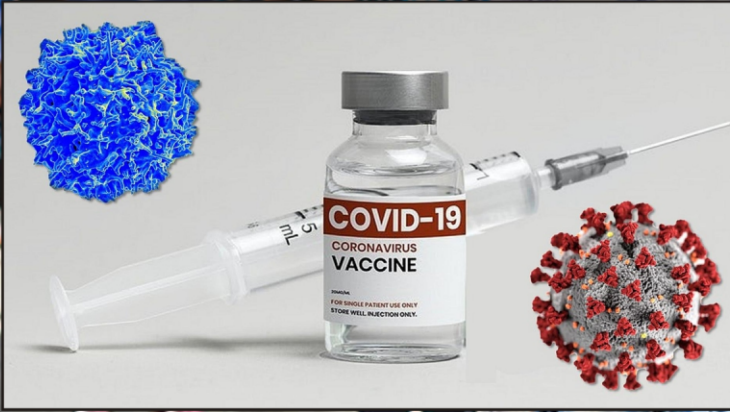
समर शेष है

–जयपाल

उन हाथों के लिए
जो जंजीरों में जकड़े हैं
प्रतिरोध में उठते हैं

उन पैरों के लिए
जो महाजन के पास गिरवी हैं
जलूस में शामिल हैं

उन आँखों के लिए
जो फोड़ दी गई हैं
सपने देखती हैं

उस जुबान के लिए
जो काट दी गई है
बेजुबान नहींविनोद हुई

उन होठों के लिए
जो सिल दिए गए हैं
फड़फड़ाना नहीं भूले

उस सिर के लिए
जो सदियों से कटा है
पैरों में नहीं गिरा

उस दिल के लिए
जिसे हर युग में तोड़ा गया
टूटता भी रहा
धड़कता भी रहा

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर,

नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

https://tarksheelpath.blogspot.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

आगामी मीटिंग के बारे

करोना महामारी के चलते तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग अनिश्चित है। जैसी भी स्थिति होगी, तर्कशील साथियों को समय-समय पर सूचित कर दिया जायेगा।

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ कुरुक्षेत्र (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

जातिवादी मानसिकता

हरिद्वार के पास रोशनाबाद गांव में भारतीय हॉकी टीम की खिलाड़ी वंदना कटारिया के घर के सामने कुछ असामाजिक तत्वों ने नंगा डांस किया, पटाखे चलाए और नस्लीय गालियां दीं. उन्होंने कहा कि टोक्यो ओलंपिक के सेमीफाइनल में भारतीय महिला हॉकी टीम की हार का कारण दलित खिलाड़ी थे। इस शर्मनाक सत्य की निंदा करने के लिए शब्द बहुत कम हैं। जीदा गांव का एक वीडियो सामने आया, जिसमे गांव के कुछ धर्मी लोग तार चोरी का आरोप लगाते हुए कुछ लोगों को लाठियों से बेरहमी से पीट रहे हैं. सिरसा जिले के एक गांव से नौवीं कक्षा की बच्ची के अपहरण के पांच दिन बाद खेत में जला हुआ शव मिला. राष्ट्रीय राजधानी में एक श्मशान में सामूहिक बलात्कार के बाद एक 9 वर्षीय लड़की एक मंदिर के सामने भीख मांगने वाली महिला की बेटी है। ये तीनों हालिया घटनाएं हैं और पीड़ित तथाकथित दलित जातियों के हैं। असमानता और लूटपाट के आधार पर इस व्यवस्था द्वारा इन घटनाओं पर कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। सरकारें व प्रशासन ऐसे अवसरों पर मौन धारण कर लेते हैं। कहने को भारत को विश्व गुरु होने के दावे किए जाते हैं। जबकि अपने ही देश में हाशिए के लोग उनके एजेंडे में नहीं हैं। अल्पसंख्यकों, दलितों, महिलाओं पर हमले होने पर कितने एक्शन होते हैं, समझ से परे है। इसके अलावा दिल्ली विश्वविद्यालय ने साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता और पद्म विभूषण पुरस्कार विजेता लेखिका महाश्वेता देवी की कहानी 'द्रोपदी' को बी.ए. (ऑनर्स) अंग्रेजी पाठ्यक्रम से निकाल दिया गया है, क्योंकि यह एक आदिवासी दलित महिला के बारे में है। उसी विश्वविद्यालय ने दो दलित लेखकों, बामा और सुकीर्तरिणी को पाठ्यक्रम से हटा दिया गया है और तथाकथित उच्च जाति की लेखिका रमाबाई को शामिल कर लिया। ये निर्णय, घटनाएँ सामान्य नहीं हैं, इनके पीछे एक नियमित दलित विरोधी मानसिकता, जातिवादी कट्टरता और वर्ग दबाव और एक नियमित राजनीतिक एजेंडा है। समतावादी समाज के निर्माण का आह्वान करने वाले जनहितैषी संगठनों, बुद्धिजीवियों को इस मानसिकता और राजनीति को गंभीरता से लेना चाहिए और उस रणनीति पर गंभीरता से विचार और अमल करना चाहिए जो इस अमानवीय जाति व्यवस्था को जन्म देती है। हमें एक जातिविहीन व वर्ग विहीन व्यवस्था की जरूरत है। केवल इन अमानवीय घटनाओं के विरोध से कोई सार्थक परिणाम नहीं निकलेगा, बल्कि वैज्ञानिक जीवन पद्धति को जीवन के हरेक क्षेत्र में लागू करना होगा।

आसाराम को जेल की सलाखों के पीछे पहुंचाने वाले वकील पी.सी. सोलंकी

15 मिनट में जज ने अपना फैसला सुना दिया था. वे 15 मिनट मेरी जिंदगी के सबसे भारी 15 मिनट थे. एक-एक पल जैसे पहाड़ की तरह बीत रहा था. पूरे समय मेरी आंखों के सामने पीड़िता और उसके पिता का चेहरा घूमता रहा. जज साहिब जब फैसला सुनाकर उठे तो लोग मुझे बधाइयां देने लगे. मेरा गला रुंध गया था. मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी. मैं वकील हूं, मुकदमे लड़ना, कोर्ट में पेश होना मेरा पेशा है. लेकिन जिंदगी में आखिर कितने ऐसे मौके आते हैं, जब आपको लगे कि आपके होने का कोई अर्थ है. उस क्षण मुझे लगा था कि मेरे होने का कुछ अर्थ है.

आसाराम को जेल की सलाखों के पीछे पहुंचाने वाले वकील पी.सी. सोलंकी के इस आत्मकथन को पढ़कर मेरे रोयें खड़े हो गए, समझ आया कि ये देश किसके सहारे चल रहा है। सलाम सोलंकी जी, आप हो इस देश के हीरो! (और जो हीरो नहीं है उनके नाम जानने हों तो उन नामी गिरामी वकीलों की लिस्ट

मेरा जीवन सार्थक हो गया. मेरा जन्म राजस्थान के एक साधारण परिवार में हुआ था. घर में तीन बहनें थीं और आर्थिक तंगी. पिता रेलवे में मैकेनिक थे. मैंने भी बचपन से सिलाई का काम किया है. मां एक दिन में 30-40 शर्ट सिलती थीं. पिता बेहद साधारण थे और मां अनपढ़. लेकिन दोनों की एक ही जिद थी कि बच्चों को पढ़ाना है और सिर्फ लड़के को नहीं, लड़कियों को भी. मेरी तीनों बहनों ने आज से 30 साल पहले पोस्ट ग्रेजुएशन किया और नौकरी की. मेरी एक बहन नर्स और एक टीचर है. जब मैंने इस पेशे में आने का फैसला किया तो मेरे गुरु ने कहा था कि वकालत बहुत जिम्मेदारी का काम है. इस पेशे की छवि समाज में बहुत अच्छी नहीं, लेकिन अपनी छवि हम खुद बनाते हैं और अपनी राह खुद चुनते हैं. हमेशा ऐसे काम करना कि सिर उठाकर चल सको और किसी से डरना न पड़े.

जब मैंने आसाराम के खिलाफ पीड़िता की तरफ से यह मुकदमा लड़ने का फैसला किया तो बहुत धमकियां मिलीं. पैसों का लालच दिया गया. तमाम कोशिशें हुईं कि किसी भी तरह मैं यह मुकदमा छोड़ दूं. लेकिन हर बार मुझे वह दिन याद आता, जब पीड़िता के पिता पहली बार मुझसे मिलने कोर्ट आए थे. साथ में वो लड़की थी. बेहद शांत, सौम्य और बुद्धिमान. उसकी आंखें गंभीर थीं और चेहरे पर बहुत दर्द. पिता बेहद निरीह थे, लेकिन इस दृढ़ निश्चय से भरे हुए कि उन्हें यह लड़ाई लड़नी ही है. मैं यह लड़ाई इसलिए लड़ पाया क्योंकि पीड़िता और उसका परिवार एक क्षण के लिए अपने फैसले से डिगा नहीं. लड़की ने बहुत बहादुरी से कोर्ट में खड़े होकर बयान दिया. 94 पन्नों में उसका बयान दर्ज है. तकलीफ बहुत थी, लेकिन वो पर्वत की तरह अटल रही. लड़की की मां 19 दिनों तक कोर्ट में खड़ी रही और 80 पन्नों में उनका बयान दर्ज हुआ. पिता रोते रहे और बोलते रहे. 56 पन्नों में उनका बयान दर्ज हुआ. जब एक बेहद साधारण सा परिवार इतने ताकतवर आदमी के खिलाफ इस तरह अटल रह सकता था तो मैं कैसे हार मान सकता था. 2014 में जिस दिन वकालतनामे पर साइन किया, उस दिन के बाद से यह मुकदमा ही मेरी जिंदगी हो गया.

साढ़े चार साल ट्रायल चला. इन साढ़े चार सालों में मैं रोज कोर्ट गया. 8 बार सुप्रीम कोर्ट में पेशी हुई. 1000 बार से ज्यादा ट्रायल कोर्ट में पेश हुआ. जितना मामूली पीड़िता का परिवार था, उतना ही मामूली वकील था मैं. इस तरफ मैं था और दूसरी

तरफ थे देश की राजधानी में बैठे कद्दावर वकील. सबसे पहले आसाराम को जमानत दिलवाने के लिए आए राम जेठमलानी. जमानत याचिका रद्द हो गई. फिर आए के.टी.एस. तुलसी, लेकिन आसाराम को कोई राहत नहीं मिली. फिर आए सुब्रमण्यम स्वामी. न्यायालय में 40 मिनट तक इंतजार किया, लेकिन फैसला हमारे पक्ष में आया. फिर आए राजू रामचंद्रन लेकिन जमानत याचिका फिर खारिज हो गई. सिद्धार्थ लूथरा ने अभियुक्त की तरफ से कोर्ट में पैरवी की. इस केस में आसाराम की तरफ से देश का तकरीबन हर बड़ा वकील पेश हुआ. पूर्व अटॉर्नी जनरल मुकुल रोहतगी ने आसाराम की पैरवी की. सुप्रीम कोर्ट के जज यूयू ललित आए. सलमान खुर्शीद, सोली सोराबजी, विकास सिंह, एसके जैन, सबने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया.

तीन बार सुप्रीम कोर्ट से आसाराम की जमानत याचिका खारिज हुई. कुल छह बार अभियुक्त ने जमानत की कोशिश की और हर बार फैसला हमारे पक्ष में आया. लोग कहते हैं, तुम्हें डर नहीं लगता. मैं कहता हूं, मेरी 80 साल की मां और 85 साल के पिता को भी डर नहीं लगता. जब आप सच के साथ होते हैं तो मन, शरीर सब एक रहस्यमय ऊर्जा से भर जाता है. सत्य में बड़ा बल है. आत्मा की शक्ति से बड़ी कोई शक्ति नहीं. उनके पास धन, वैभव, सियासत का बल था, मैं अपनी आत्मा के बल पर खड़ा रहा. मेरा परिवार मेरे साथ था. मेरी मां पढ़ी-लिखी नहीं हैं. वे बस इतना समझती हैं कि एक आदमी ने गलत किया. बच्ची को न्याय मिले. मुझे सच की लड़ाई लड़ता देख मेरे पिता की बूढ़ी आंखों में गर्व की चमक दिखाई देती है. वे मुझसे भी ज्यादा निडर हैं. 85 साल की उम्र में भी बिलकुल स्वस्थ. तीन मंजिला मकान की अकेले सफाई करते हैं.

पत्नी खुश है कि मैं एक लड़की के हक के लिए लड़ा.

(यह लेख पी.सी. सोलंकी के साथ बातचीत पर आधारित है.)

25 हजार करोड़ की संपत्ति के मालिक आसाराम जितना खरीद सकते थे खरीद रहे थे।

उन दिनों सारा हिंदुत्व इसे अंतरराष्ट्रीय साजिश के तहत सनातन संस्कृति पर हमला बता रहा था। पीड़िता और पीड़िता के पिता के पहले मददगार बने, ए सी पी लांबा और दूसरे मददगार बने वकील पीसी सोलंकी ।

आसाराम के गुर्गों बनाम भक्तों द्वारा अनेक गवाहों पर जानलेवा हमले करते हुए उन्हें मौत के घाट उतार देने के बावजूद पीसी सोलंकी हिमालय की तरह अटल रहे।

दस लाख दोगुने करने का लालच देखकर थमा दी चिल्ड्रेन मनी से भरी पोटली

कुरुक्षेत्र । गांव बारना में जागरण करने आए एक युवक ने महिला को पैसा दोगुना करने का लालच देकर 10 लाख रुपये और दो लाख रुपयये के जेवर की ठगी को अंजाम दिया। पुलिस ने महिला की शिकायत के आधार पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

थाना केयूके में दी शिकायत में गांव बारना निवासी सुनीता ने बताया कि दिसंबर 2019 में उनके पड़ोस में जींद के गांव दनौरी का कृष्ण भगवती जागरण करने के लिए आया था। जिसने कहा कि वे जितने पैसे उसे देगी वह उसे दोगुने कर देगा। वह उसकी बातों में आ गई। शिकयत में बताया कि उसके घर पर अपने बेटे को विदेश भेजने के लिए 10 लाख रुपये जोड़े थे। इसके अलावा चार सोने की अंगूठी एक जोड़ी सोने की बाली, एक जोड़ी सोने के झुमके और दो लॉकेट कृष्ण की बातें में आकर दिए थे। कृष्ण ने एक काले कपड़े में लपेटकर रुपये व सोने के जेवरात उसको दे दिए। और कहा कि पांच से छह महीने के बाद इसे खोलना। पांच माह बाद उसने पोटली खोलकर देखी। उसमें से उसे दो-दो हजार रुपये की चिल्ड्रेन मनी मिली। जस पर उसे सोने के जेवरात पर भी शक हुआ। उसने सुनार के पास जोकर जेवर की जांच कराई तो वह भी नकली मिले ।

(अमर उजाला, 7-7-2020)

शहीद भगतसिंह के जन्मदिव पर विशेष

वर्ण और जाति व्यवस्था पर धावा

''हम वर्तमान ढांचे के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के पक्ष में हैं। हम वर्तमान समाज को पूरे तौर पर एक नये सुगठित समाज में बदलना चाहते हैं। इस तरह मनुष्य के हाथों मनुष्य का शोषण असंभव बनाकर सभी के लिए सब क्षेत्रों में पूरी स्वतंत्रता विश्वसनीय बनायी जाये। जब तक सारा सामाजिक ढांचा बदला नहीं जाता और उसके स्थान पर समाजवादी समाज स्थापित नहीं होता, हम महसूस करते हैं कि सारी दुनया एक तबाह कर देने वाले प्रलय-संकट में है।''

(भगतसिंह-अदालत एक ढकोसला है....)

भारत में सामंती समाज व्यवस्था का आधार वर्ण-व्यवस्था का आधार वर्ण-व्यवस्था और जाति व्यवस्था थी जिसमें श्रम विभाजन के चलते वर्ण और जातियों के पेशे जन्म अथवा वंश परम्परा से तय हो गये थे। यहां इस बात को स्पष्ट किया जाना उचित होगा कि जातियों के आधार पर पेशे नहीं बल्कि पेशों के आधार पर विभिन्न जातियां अस्थित्रत्त्व में आईं थीं। यानी आदिकाली श्रम विभाजन ने भारत में जात-पात यवस्था को जन्म दिया था और बाद में जन्म के आधार पर ही श्रम विभाजन, यानी पेशे कठोर नियमें से बांध दिये गये थे। एक जाति में जन्म लिया हुआ बच्चा अपनी ही जाति के लिए निर्धारित श्रम अथवा पेशे को अपनाने के लिए जीवन भर के लिए बाध्य था। बाद में चलते-चलते कुछ जातियों को अछूत बना दिया गया था। भारत में अंग्रेजी शासन के दौरान, सदियों से चली आने वाली उस जाति आधारित श्रम व्यवस्था पर चोटें पड़नी शुरू हुईं थीं। जिसका कारण सामंतवाद के गर्भ में नई पूंजीवादी भौतिक परिस्थितियों का पैदा हो जाना था। गांधी जी ने उस जाति आधारित श्रम व्यवस्था पर चोट न चला कर मात्र यह ऊपरी अभियान चलाया था कि जातियों के बीच छूआछूत नहीं रहनी चाहिए लेकिन गांधी जी की यह मान्यता कायम रही कि पेशे अथवा काम तो जातियों और जन्म के आधार पर ही रहने चाहिएं। उन्होंने अछूतों मात्र हरिजन की संज्ञा देकर समस्या का निदान करने का रास्ता निकाला था। आर्यसमाज ने भी अछूतों को आर्यसमाजी बनाने के लिए 'शुद्धि' आंदोलन चलाया था। लेकिन आर्यसमाज वर्ण-व्यवस्था के उन्मूलन का मार्ग नहीं अपनाया था। बल्कि आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद जी महाराज की मान्यता थी कि वर्ण-व्यवस्था गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित है, जन्म पर नहीं। वर्ण-व्यवस्था के संबंध में गांधीजी और आर्यसमाज द्वारा अपनायी गई इन स्थितियों के विपरीत भगतसिंह ने वर्ण व्यवस्था-जाति व्यवस्था को समूल रूप से उखाड़ फेंकने का सैद्धांतिक-व्यवहारिक मार्ग अपनाया था। भगतसिंह न ेजून, सन् 1928 में विद्रोही नाम से 'किरती' नामक पत्रिका में 'अछूत का सवाल' शीर्षक से जो लेख लिखा था उसे यहां ज्यों का त्यों प्रकाशित किा जा रहा है। भगत सिंह लिखते हैंः

''हमारे देश-जैसे बुरे हालात किसी दूसरे देश के नहीं हुए। यहां अजब-अजब स्वाल उठते रहते हैं। एक अहम् सवाल अछूत-समस्या हैं समस्या यह है कि 30 करोड़ की जनसंख्या वाले देश में जो छः करोड़ लोग अछूत कहलाते हैं, उनके स्पर्श मात्र से धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। उनके मंदिरों में प्रवेश से देवगण नाराज हो उठेंगे। कुएं से उनके द्वारा पानी निकालने से कुआं अपवित्र हो जाएगा। ये सवाल बीसवीं सदी में किये जा रहे हैं, जिन्हें कि सुनते भी शर्म आती है।

हमारा देशबहुत अध्यात्मवादी है, लेकिन हम मनुष्य को मनुष्य का दर्जा देते हुए भी झिझकते हैं जबकि पूर्णतया भौतिकवादी कहलाने वाला यूरोप कई सदयों से इन्कलाब की आवाज उठा रहा हैं उन्होंने अमेरिका और फ्रांस की क्रांतियों के दौरान

ही समानता की घोषण कर दी थी। आज यूरोप ने भी हर प्रकार भेद-भाव मिटाकर क्रांति के लिए कमर कस ली है। हम सदा ही आत्मा-परमात्मा के वजूद को लेकर चिंतित होने तथा इस जोरदार बहस में उलझे हुए हें कि क्या अछूत को जनेऊ दे दिया जाएगा? वे वेद शास्त्र पढ़ने के अधिकारी हैं बथवा नहीं? हम उलाहना देते हैं कि हमारे साथ विदेशों में अच्छा सलूक नहीं होता। अंगेजी शासन हमें अंग्रेजों के समान नहीं समझता। लेकिन क्या हमें यह शिकायत करने का अधिकार है?

सिंध के एक मुस्लिम सज्जन श्री नूर मुहम्मद ने, जो बंबई कौंसलों के सदस्य हें, इसविषय पर 1926 में खूब कहा -"If the Hindu Society refuses to allow other humanbeings, fellow ceatures so that to attend public schools, and if----the president of local board representing so many lakhs of people inthis house refuses to allow his fellows and brothers the elementary human rigjht of having water to drink] what right have they to ask for more rights from the bureaucracy\ Before we accuse people coming from other lands we should see how we ourselves behave toward our own pleople-----how can we ask for greater politicar rights when we ourselves deny elementary rights of human beings."

वे कहते हैं कि जब तुम एक इन्सान को पीने के लिए पानी देने से भी इन्कार करते हो, जब तुम उन्हें स्कूल में भी पढ़ने नहीं देते तो तुम्हें क्या अधिकार है कि अपने लिए अधिक अधिकारों की मांग करो? जब तुम एक इन्सान को समान अधिकर देने से भी इन्कार करते हो तो तुम अधिक राजनैतिक अधिकार मांगने के कैसे अधिकारी बन गये?

बात बिल्कुल खरी है। लेकिन यह क्योंकि एक मुस्लिम ने कही है इसलिए हिन्दू कहेंगे कि देखो, वह उन अछूतों को मुसलमान बनाकर अपने में शामिल करना चाहते हैं।

जब तुम उन्हें इस तरह पशुओं से भी गया-बीता समझोगे तो वह जरूर ही दूसरे धर्मों में शामिल हो जाएंगे, जिनमें उन्हें अधिक अधिकार मिलेंगे, जहां उनसे इन्सानों जैसा व्यवहार किया जाएगा।फिर यह कहना कि देखो जी, ईसाई और मुसलमान हिन्दू कौम को नुकसान पहुंचा रहे हें, व्यर्थ होगा।

कितना स्पष्ट कथन है, लेकिन यह सुनकर सभी तिलमिला उठते हैं। ठीक इसी तरह की चिन्ता हिन्दुओं को भी हुई। सनातनी पंडित भी कुछ न कुछ इस मामले पर सोने लगे। बीच-बीच में बड़े 'युगान्तकारी' कहे जाने वाले भी शामिल हुए। पटना में हिन्दू महसभा का सम्मेलन लाला लाजपतराय जो कि अछूतों के बहुत पुराने समर्थक चले आ रहे हैं-की अध्यक्षता में हुआ, तो जोरदार बहस छिड़ी। अच्छी नारेंक-झोंक हुई। समस्या यह थी कि अछूतों को यज्ञोपवीत धारण करने का हक है आिवा नहीं? क्या उन्हें वेद-शास्त्रों का अध्ययन करने का अधिकार है?

बड़े-बड़े समाज-सुधारक तमतमा गये, लेकिन लाला जी ने सबको सहमत कर दिया तथा यह दो बातें स्वीकृत कर हिन्दूधर्म की लाज रख ली वरना जरा सोचो, कितनी शर्म की बात होती। कुत्ता हमारी गोद में बैठ सकता है। हमारी रसोई में निःसंग फिरता है। लेकिन एक इन्सान का हमसे स्पर्श हो जाए तो बस धर्म भ्रष्ट हो जाता है। इस समय मालवीय जी-जैसे बड़े समाज-सुधारक, अछूतों के बड़े प्रेमी और न जाने क्या-क्या पहले एक मेहतर के हाथों गले में हार डलवा लेते हैं, लेकिन कपड़ों सहित स्नान किये बिना स्वयं को अशुद्ध एमझते हैं। क्या खूब यह चाल है। सबको प्यार करने भगवान की पूजा करने के लिए मंदिर बना है लेकिन वहां अछूत जा घुसे तो वह मंदिर अपवित्र हो जाता है। भगवान रुष्ट हो जाता है। घर की जब यह स्थिति हो तो बाहर हम बराबरी के नाम पर झगड़ते अच्छे लगते हैं? तब हमारे इस रवैये में कृतघ्नता की भी हद पाई जाती है। जो निम्नतम काम करके हमारे लिये सुविधाओं को उपलब्ध कराते हैं उनहें ही हम दुरदुराते हैं। पशुओं की हम पूजा कर सकते हैं, लेकिन इन्सान को पास नहीं बिठा सकते।

आज इस सवाल पर बहुत शोर हो रहा है। उन विचारों पर आजकल विशेष ध्यान दिया जा रहा है। देश में मुक्ति-कामना जिस तरह बढ.रही है, उसमें साम्प्रदायिक भावना में और कोई लाभ पहुंचाया हो अथवा नहीं लेकिन एक लाभ जरूर पहुंचाया है। अधिक अधिकारों की मांग के लिए अपनी-अपनी

कौम की संख्या बढ़ाने की चिन्ता सभी को हुई। मुस्लिमों ने जरा ज्यादा जोर दिया। उन्होंने अछूतों को मुसलमान बनाकर अपने बरासबर अधिकार देने शुरू कर दिये। इससे हिन्दुओं के अहम् को चोट पहुंची। स्पर्धा बढ़ी। फसाद भी हुए। धीरे-धीरे सिखों ने भी सोचा कि हम पीछे न रह जायें। उन्होंने भी अमृत छकाना अरम्भ कर दिया। हिन्दू-सिखों के बीच अछूतों के जनेऊ उतारने या केश कटवाने के स्वालों पर झगड़े हुए। अब तीनों कौमें अछूतों को अपनी-अपनी और खींच रही हैं। इसका बहुत शोर-शराबा है। उधर ईसाई चुपचाप उनका रुतबा बढ़ा रहे हैं। चलो, इस सारी हलचल से ही देश के दुर्भाग्य की लानत दूर हो रही है।

इधर जब अछूतों ने देखा कि उनकी वजह से इनमें फसाद हो रहे हैं तथा उन्हें हर कोई अपनी-अपनी खुराक समझ रहा है तो वे अलग ही क्यों न संगठित हो जाएं? इस विचार के अमल में अंग्रेजी सरकार का हाथ हो या न हो लेकिन इतना अवश्य है कि इस प्रचार में सरकार मशीनरी का काफी हाथ था। 'आदि धर्म मण्डल' जैसे संगठन उस विचार के प्रचार का परिणाम हैं।

अब एक सवाल और उठता है कि इस समस्या का सही निदान क्या हो? इसका जवाब बड़ा अहम है। सबसे पहले यह निर्णय कर लेना चाहिए कि सब इन्सान समान हैं। तथा न तो जन्म से कोई भिन्न पैदा हुआ है तथा न कार्य विभाजन से। अर्थात क्योंकि एक आदमी गरीब मेहतर के घर पैदा हो गया है, इसलिए जीवन-भर मैला ही सॉ करेगा और दुनिया मेंकिसी तरह के विकास का काम कर पाने का उसे कोई हम नहीं है, ये बातें फिजूल हैं। इस तरह हमारे पूर्वज आर्यो ने इनके साथ ऐसा अन्यायपूर्ण व्यवहार किया तथा उन्हें नीच कहकर दुत्कार दिया एवं निम्न कोटि के कार्य करवाने लगे। साथ ही यह भी चिन्ता हुई कि कहीं यह विद्रोह न कर दें, तब नुर्जन्म के दर्शन का पचार कर दिया क यह तुम्हारे पूर्व जन्म के पापों का फल है। अब क्या हो सकता है? चुपचाप दिन गुजारो। इस तरह उन्हें धैर्य का उपदेश देकर वे लारेग उन्हें लम्बे समय तक के लिए शांत करा गये। लेकिन उन्होंने बड़ा पाप किया। मानव के भीतर की मानवीयता को समाप्त कर दिया। आत्मविश्वास एवं स्वावलम्बन की भावना को समज्ञपत कर दिया। बहुत दमन और अन्याय किया गया। आज उस सबक प्रायश्चित का वक्त है।

इसके साथ एक दूसरी गड़बड़ हो गयी। लोगों के मनों में आवश्यक कार्यो के प्रति घृणा पैदा हो गयी। हमने जुलाहे को भी दुत्कारा। आज कपड़ा बुनने वाले भी अछूत समझे जाते हैं। चू.पी. की तरफ कहार को भी अछूत समझा जाता है। इससे बड़ी गड़बड़ी पैदा हुई। ऐसे में विकास की प्रक्रिया में रुकावटें पैदा हो रही हैं।

इन तबकों को अपने समक्ष रखते हुए हमें चाहिए कि हम न अछूत कहें और न समझें। .. समस्या हल हो जाती है। नौजवान भारत सभा तथा नौजवान कांग्रेस ने जो ढंग अपनाया है, वह काफी अच्छा है। जिन्हें आज तक अछूत समझा, कहा जा रहा है, उनसे अपने इन पापों के लिए क्षमा-याचना करनी चाहिए तथा उन्हें अपने-जैसा इन्सान समझना, बिना अमृत छकाये, बिना कलमा पढ़ाये या शुद्धि किये उन्हें अपने में शामिल करके उनके हाथ से पानी पीना, यही उचित ढंग है। और आपस में खींच तान करना और व्यवहार में कोई भी हम न देना, कोई ठीक बात नहीं है।

जब गांवों में मजदूर-प्रचार शुरु हुआ तो उसमें किसानों को सरकार आदमी यह बात समझा कर भड़काते थे कि देखो, यह भंगी-चमारों को सिर पर चढ़ा रहे हैं और तुम्हारा काम बन्द करवायेंगे। बस किसान इतने में ही भड़क गये। उन्हें याद रहना चाहिए कि उनकी हालत तब तक नहीं सुधर सकती जब तक कि वे इन गरीबों को नीच और कमीन कह कर अपनी जूती के नीचे दबाये रखना चाहते हैं। अक्सर का जाता है कि वह साफ नहीं रहते। इसका उत्तर साफ है। वे गरीब हैं। गरीबी का इलाज करो। ऊंचे-ऊंचे कुलों के गरीब लोग भी कोई कम गन्दे नहीं रहते। गन्दे काम करने का बहाना भी नहीं चल सकता, क्योंकि माताएं बच्चों का मैला साफ कारने से मेहतर तथ अछूत तो नहीं हो जातीं।

लेकिन यह काम उतने समय तक नहीं हो सकता जितने समय तक कि अछूत कौमें अपने आप को संगठित न कर लें। हम तो समझते हें कि उनका स्वयं को अलग संगठनबद्ध करना तथा मुस्लिमों के बराबर गिनती में होने के कारण उनके बराबर अधिकारों की मांग करना बहुत आशाजनक संकेत

है। या तो साम्प्रदायिक भेद का झंझट ही खत्म करो, नहीं तो उनके अलग अधिकार उन्हें दे दो। कौंसिलों और असेंबलियों का कर्तव्य है कि वे स्कूल-कॉलेज, कुएं तथा सड़क के उपयोग की पूरी स्वतंत्रता उन्हें दिलायें। जबानी तौर पर ही नहीं, वरन् साथ ले जाकर उनहें कुंओं पार चढ़ाएं। उनके बच्चों को स्कूलों में प्रवेश दिलायें। लेकिन जिस लेजिस्लेटिव में बाल-विवाह के विरुद्ध पेश किये गये बिल तथा मजहब के बहाने हाय-तौबा मचायी जाती है, वहां के अछूतों को अपने साथ शामिल करने का साहस कैसे कर सकते हैं?

इसलिये हम मानते हैं कि उनके अपने जन-प्रतिनिधि हों वे अपने लिये अधिक अधिकार मांगें। हम तो साफ कहते हैं कि उठो, अछूत कहलाने वाले असली जन-सेवकों तथा भाइयो उठो। अपना इतिहास देखो। गुरुगोबिन्द सिंह की फौज की असली शक्ति तुम्हीं थे। शिवाजी तुम्हारे भरोसे पर ही सब कुछ कर सके, जिस कारण उनका नाम आज भी जिन्दा है। तुम्हारी कुर्बानियां स्वर्णाक्षरों में लिखी हुई है। तुम जो नित्यप्रति सेवा करके जनता के सुखों में बढ़ौतरी करके और जिन्दगी सम्भव बनाकर यह बड़ा भारी अहसान कर रहे हो, उसे हम लोग नहीं समझते। लैंड-एलेनेशन एक्ट के अनुसार तुम धन एकत्र कर भी जमीन नहीं खरीद सकते। तुम पर इतना जुल्म हो रहा है कि मिस ऐयो मनुष्यों से भी कहती है -उठो, अपनी शक्ति पहचानो। संगठनबद्ध हो जाओ। असल में स्वयं कोशिश किये बिना कुछ भी न मिल सकेगा। (Those who would be be free must themselves strike the blow) स्वतंत्रता के लिए स्वाधीनता चाहने वालों को यत्न करना चाहिए। इन्सान की धीरे-धीरे कुछ ऐसी आदतें हो गयी हैं कि वह अपने लिये तो अधिक अधिकार चाहता है, लेकिन जो उनके मातहत हैं उन्हें वह अपनी जूती के नीचे ही दबाये रखना चाहते हैं। कहावत है, 'लातों के भूत बातों से नहीं मानते।'। अर्थात संगठनबद्ध हो अपने पैरों पर खड़े होकर पूरे समाज को चुनौती दे दो।। तब देखना, कोई भी तुम्हें तुम्हारे अधिकार देने से इन्कार करने की जुर्ररत न कर सकेगा। तुम दूसरों की खुराक मत बनो। दूसरों के मुंह की ओर न ताको। लेकिन ध्यान रहे, नौकरशाही के झांसे में मत फंसना।यह तुम्हारी कोई सहायता नहीं करना चाहती, बल्कि तुम्हें अपना मोहरा बनाना चाहती है। यही पूंजीवादी नौकरशाही तुम्हारी गुलामी और गरीबी का असली कारण है। इसलिये तुम उसके साथ कभी न मिलना। उसकी चालों से बचना। तब सब कुछ ठीक हो जाएगा। तुम असली सर्वहारा हो...संगठनबद्ध हो जाओ। तुम्हारी कुछ भी हानि न होगी। बस गुलामी की जंजरें कट जाएंगी। उठो, ओर वर्तमान व्यवस्था के विरुद्ध बगावत खड़ी कर दों धीरे-धीरे होने वाले सुधारों से कुछ नहीं बन सकेगा। सामाजिक आंदोलन से ांति पैदा कर दो तथा राजनीतिक और आर्थिक क्रांति के लिये कमर कस लो। तुम ही तो देश के मुख्य आधार हो, वास्तविक शक्ति हो। सोये हुए शेरो! उठो, और बगावत खडी कर दो।' (जगमोहन-चमनलाल, 1986, पेज 237-241)

जमादार में मां के दशनः

वीरेन्द्र सिंधु ने अपनी पुस्तक 'युगद्रष्ठा भगत सिंह' में भगतसिंह की अंतिम इच्छा का वर्णन वीरेंद्र सिंधु ने इस प्रकार लिखा हैः

'उनकी काल-कोठरी में जो भंगी सफाई करने आता था, उसे बेबे कहा करते थे, जैसे कि अपनी मां को बेबे जी कहते थे। जब वह कोठरी में आता, तो भगतसिंह कुछ भी कर रहे हों उससे जरूरी बातचीत करते और लाड़ से बेबे-बेबे पुकारते रहते। उनके इस व्यवहार से जमादार का प्रभावित होना तो स्वाभाविक ही था।'आप इसे बेबे क्यों कहते हैं?' एक दिन किसी जेल अधिकारी ने पूछा, तो बोले-'जीवन में दो को मेरी गन्दगी उठाने का काम मिला है। एक मेरी बचपन की मां और एक यह जवानी की जमादार मां। इसलिए दोनों बेबे जी ही हैं मेरे लिए।'

फांसी से पहले जेलर खान बहादुर मुम्मद अकबर अली ने उनसे पूछाः

'आपकी कोई खास इच्छा हो तो बताइये। मैं उसे पूरी करने की कोशिश करूंगा।

भगतसिंह का उत्तर था-हां, मेरी एक खास इच्छा है और आप उसे पूरा कर सकते हैं।'

'बताइये।'

'मैं बेबे के हाथी की रोटी खाना चाहता हूं।' जेलर ने इसे उनका मातृ-प्रेम समझा, पर उनकी मन्शा भंगी भाई से थी। जेलर ने उसे बुलाकर

भगतसिंह की बात कही, तो वह स्तब्ध रह गयाः

'सरदार जी मेरे हाथ ऐसे नहीं है कि उनसे बनी रोटी आप खाएं।'

भगतसिंह ने प्यार से दोनों कन्धे थथपाते हुए कहा–'मां जिन हाथों से बच्चों का मल साफ करती है, उन्हीं से तो खाना बनाती हैं बेबे, तुम चिन्ता मत करो और मेरे लिए रोटी बनाओ।' भंगी भाई ने रोटी बनाई और भगतसिंह ने आनन्द से, अपने स्वभाव के अनुसार उठते–मटकते हुए खाई।' (युगद्रष्टा भगतसिंह, 1983, पेज 275)

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द भी किसी अछूत के हाथ का बनाया हुआ भोजन खाने को वर्जित बताते थे। उनसे एक बार इस विषय में जब एक प्रश्न किया गया कि किसी भी मनुष्य के हाथ का बनाया हुआ भोजन खाने में क्या दोष है? तो उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के दशम समुल्लास में उत्तर दिया' 'दोष है..क्योंकि चाण्डाल का शरीर दुर्गन्ध के परमाणुओं से भरा हुआ होता है वैसा ब्राह्मण आदि वर्णो का नहीं इसलिये ब्राह्मण आदि उत्तम वर्णो के हाथ खाना और चाण्डाल आदि नीच भंगी चमार आदि न खाना।'

अत' स्पष्ट है कि भतसिंह ने भारत में वर्ण और जाति व्यवस्था के उन्मूलन का जो मार्ग–अपनाया था उसमें उन्होंने गांधी जी और आर्यसमाज के रारस्ते से सिद्धांत और व्यवहार के दोनों पहलुओं से अपना पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था औरइस मामले में गांधी जी और आर्यसमाज कोबहुत पीछे छोड़ दिया था।

सन् 1947 में सत्त हस्तांतरण होने के बाद भारत को शासन व्यवस्था का जो संविधान रचा गया उसमें जाति अथवा जन्म पर आधारत श्रम विभाजन अथवा पेशे को समाप्त कर दिया गया। अब भारत में किसी भी जाति का व्यक्ति कोई भी पेशा पाने के लिए स्वतंन्त्र है इस हद तक भारत की सामंती व्यवस्था का आर्थिक आधार पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया गया हैं जो लोग अभी अपने जातिगत पेशे को अपनाने के लिए विवश हैं उसका कारण भारत की पूंजीवादी व्यवस्था में भारी बेरोजगारी का होना हैं क्योंक विकल्प में कहीं कोई रोजगार नहीं मिल पाता इसलिए असंख्य लोग आज भी अपना पुराना पेशा अपनाने को बाध्य हैं; परंतु उनकी इस विवशता का कारण पुरानी सामंती व्यवस्था नहीं बल्कि उसके स्थान पर आई नई पूजीवादी समाज व्यवस्था है। आज भारत के दलितों के सामने वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध संगठित होने और इसे उखाड़ फैंकने का मुख्य कार्यभार है जिसका आह्वान भगत सिंह ने अपने उक्त लेख के अंतिम भाग में किया है। जो वामपंथी दल आज भी दलितों को सामंतवाद के विरु लड़ने के लिए संगठित होने की बात कहते हैं वे जाने अनजाने दलितों का ध्यान उनकी वर्तमान मुख्य शत्रु से हटाना चाहते हैं। वर्तमान दौर में सामंतवाद के खिलाफ त्तंति का नारा देना, मरे हुए सांप को ही मुख्य शत्रु के रूप में दिखाने जैसा है। अअब समाज के आर्थिक क्षेत्र उत्पादन प्रणाली में कहीं भी सामंतवाद शेष नहीं है। सिर्फ रीति रिवाजों और सोचविचार के तरीके में वह बचा हुआ है जिसका फायदा पूंजीपति वर्ग उठाता हैं आज मात्र अरक्षण की नीति से तमाम दलितों का उद्धार होने वाला नहीं है। लेकिन शासक पूंजीपति वर्ग शोषित पीड़ित आम जनता, दलितों व महिलाओं को अपने आरक्षण के ही कुचक्र में उलझाये रखना चाहता है ताकि उनकी एकता कायम न हो सके और वे पूंजीवाद को उखाड़ने के लिए संगठित न हो जाएं। अज अपने संघर्षो को जातियों के आधार पर संचालित करना, अपनी शक्तियों को बरबाद करने के अलावा और कुछ नहीं है। पूंजीपति वर्ग की स पूंजीवादी व्यवस्था के कारणही आज रोजगार के दरवाजे बन्द हैं यदि एक हजार नये रोजगारों की घोषणा होती है तो दूसरी तरफ एक लाख मजदूरों कर्मचारियों को रोजगार से बाहर किया जा रहा है। पूंजीपति वर्ग चन्द नये रोजगारों पर आम जनता को उसी तरह लड़वाने में सफल होता जा रहा है जिस तरह रोटी के एक टुकड़े पर को भी व्यक्ति दस कुत्तों को लड़वाता देखा जाता हैं अतः दलितों के सामने आज सबसे गंभीर और महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि उनके मुक्ति संघर्ष की बुनियादी दिशा क्या हो? दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध दलित नेता रामासामी नायकर जो ई.वी. रामासामी पेरियार के नाम से विख्यात हैं और जिन्होंने दलितोद्धार के लिए ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म के खिलाफ अत्यंत कड़ा एवं

शेष पृष्ठ 21 पर

कोरोना वैक्सीनः वैज्ञानिक समझ एवं अविश्वास

-डॉ. श्यामसुंदर दीप्ति
98158 08506

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान (एलोपैथी) के पास यदि एक चीज गर्व करने योग्य है तो वह है-वैक्सीन। यह सम्मान दिया जाना बनता है कि यह लोगों के लिए ऐसी वस्तु है जो कि रोग होने से पूर्व व्यक्ति को बचाव के लिए दी जाती है। इसलिए एडवर्ड जेनर का धन्यवाद करना बनता है, जिस ने अपनी सूझबूझ के साथ एक मामूली आम रोग काऊपाक्स के जरिये सुरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) को पहचाना तथा चेचक जैसी महामारी के लिए वैक्सीन बनाई, जिस से हम इस घातक रोग को विश्व में से समाप्त करने में सफल हुए हैं। इसी समझ एवं तकनीक के कारण हम पोलियो जैसी नामुराद तथा रेबीज जैसी जानलेवा बीमारियों को खत्म करने के रास्त पर गये तथा आज सौ के करीब वैक्सीन भिन्न-भिन्न बीमारियों के लिए उपलब्ध हैं।

वर्तमान संदर्भ में वैक्सीन जो कि स्वास्थ्य विज्ञान का एक चमत्कारी आविष्कार है, कार्पोरेट जगत ने इसे विशाल स्तर पर मुनाफे का जरिया बनाया है। रोगों को लेकर हमारे सामने दो तस्वीरें हैं कि जब भी महामारी फैलती है तो कुछेक लोग प्रभावित होते हैं और काफी बड़ी संख्या में लोग सुरक्षित रहते हैं। यह ठीक है कि वह एक पीड़ादायक माहौल होता है। टीकाकरण द्वारा उस स्थिति से बचाव होता है, परंतु रोग के फैलाव में स्वास्थ्य सुविधाओं की आवश्यक्ता पड़ती है। दोनों की तुलना करें तो टीकाकरण, जो कि सभी के लिए होता है, होना चाहिए, अधिक खर्च वाला होता है, परंतु इसके साथ पीड़ा का दौर नहीं आता। कार्पोरेट अथवा दवा सेक्टर की इच्छा रहती है कि अधिक से अधिक लोगों को कैसे टीकाकरण के दायरे में लाया जा सके। कोरोना के मामले में भी सच्चाई यही है। रोगी अथवा पॉजिटिव केस डेढ़ करोड़ हैं, गंभीर केस लगभग 5-6 लाख थे तथा लगभग अढ़ाई लाख लोगों की मृत्यु हुई है और अब टीकाकरण की तैयारी सौ करोड़ लोगों के लिये है। जब सभी के लिए हो जाएगी तब यह संख्या 140 करोड़ बनेगी।

आओ, इस स्तरीय आविष्कार के बारे में कुछ अन्य वैज्ञानिक पक्षों के बारे में समझतें हैंः-

यह दवा कंपनियों द्वारा बनाई गई वह वस्तु है जो कि वास्तव में दवाई नहीं है। दवाई वास्तव में बीमारी के बाद में दी जाती है जबकि वैक्सीन, रोग के खतरे को भांपते हुए, रोग से बचाव के लिए रोग होने से पूर्व ही दी जाती है। जैसे कि बच्चों में खसरा, काली खांसी, पोलिया, हैपेटाइटस-बी इत्यादि तथा बालिगों में भी हैपेटाटस-ए, टाइफाइड तथा किशोरियों को सर्वाईकल कैंसर के लिए।

<u>वैक्सीन कार्य कैसे करती है?</u>

जिस प्रकार एडवर्ड जेनर ने बात की, उसी संदर्भ में यदि समझें कि शरीर में एक अत्यन्त शानदार प्रणाली है-सुरक्षा प्रणाली। उसका अपना कार्य दिन प्रतिदिन के बैक्टीरिया/वायरस के होने वाले हमलों से शरीर को सुरक्षित रखना है। जब भी किसी कीटारणु का हमला होता है, तब हमारा शरीर उनके विरूद्ध एंटीबॉडीज़ (सुरक्षा सेनाएं) तैयार करके भेजता है। वैकसीन के द्वारा हम एक विशेष रोग, जिससे हम बचाव चाहते हैं, के कीटाणु, जो कि इस प्रकार से तैयार किये जाते हैं जो कि वे बीमारी नहीं करते, केवल एंटीबाडीज़ पैदा करते हैं; वह भेजते हैं। वे शरीर में एक तो यह सेना तैयार रखते हैं तथा दूसरे सुरक्षा-प्रणाली उन कीटाणुओं की शक्ल पहचान लेती है तथा हमले के समय तत्काल सक्रिय हो जाती है। इस प्रकार व्यक्ति रोग के हमले स`बच जाता है।

<u>वैक्सीन कैसे बनती है?</u>

वैक्सीन के लिए उसी रोग के कीटाणु प्रयोग में लाए जाते हैं जिससे हमने बचाव करना हैं। चाहे हैपेटाइटस, चाहे खसरा, चाहे चेचक। इसलिए महत्वपूर्ण है कि वे कीटाणु शरीर में जाएं, परंतु रोग

पैदा न करें तथा साथ ही वे अपना एंटीबाडीज़ पैदा करने वाला गुण कायम रखें। इसके लिए तीन तरीके प्रयोग में लाये जाते हैं तथा एक तरीका नया है जो कि वैक्सीन के लिए कोरोना में प्रयोग में लाया गया है।

★ एक तरीका है कि किसी रासायनिक तत्व के साथ कीटाणुओं/वायरसों को रोग के पक्ष से नाकारा कर दिया जाता है। उनको मृत विषाणु (killed virus) कहा जाता है जैसे कि काली खांसी, टाइफाइड इत्यादि। यह वैक्सीन मृत वायरसों से बनाई जाती है।

★ दूसरे प्रकारी की वैक्सीन में वायरसों को बार-बार लैबोरेटरी में बढ़ाया-पैदा किया जाता है, जब तक उनकी मारक क्षमता समाप्त नहीं हो जाती है। इन को जीवित वायरस कहा जाता है। जैसे कि खसरा इत्यादि। दूसरे प्रकार की वैक्सीन ऐसे कमजोर वायरसों से बनाई जाती है।

★ अब जो तीसरे प्रकार की वैक्सीन हैउसमें साधारण वायरस को लेकर इसमें से आवश्यक जीन निकाल कर वैक्सीन बनाई जाती है। यह वैक्सीन शरीर में एक प्रकार की संदेश वाहक होती है जो कि शरीर में पहुंच कर एंटीबाडीज़ के लिए पयोग में लाये जाने वाले प्रोटीन को इस कार्य के लिए संदेश देती है तथा यह कार्य करवाती है।

कोरोना के लिए प्रयोग में लाए जा रहे वैक्सीनः

वैसे तो दुनिया भर में कई दर्जन कंपनियों ने यह कार्य शुरू किया है और अभी भी कर रही हैं। परंतु अभी तक जिनको सफलता मिली है वे हैः

- भारत बायोटेक कंपनी की 'कोवैक्सिन'

-एस्ट्राजेनिकाकंपनी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी- यू.के. जिनकी साझेदारी से भारत में 'कोविशील्ड' वैक्सीन मिल रही है।

-मॉडर्ना, फाईज़र एवं जॉनलन-अमेरिकी कंपनियां हैं, जिनको इस में सफलता मिली है तथा वे अमेरिका में लग रही हैं।

-'साईकोवैक' चीन की एवं 'स्पूतनिक' रूस की कंपनियां हैं।

भारत में इस समय दो वैक्सीन विशाल स्तर पर प्रयोग में लाई जा रहीं हैं। एक किल्ड वैक्सीन है (कोवैक्सिन) तथा दूसरी जीन तकनीक से तैयार बिल्कुल नई किस्म से बनी हुई, प्रथम बार प्रयोग में लाई जा रही वैक्सीन है-'कोविशील्ड'।

वैक्सीन कोजनसाधारण तक पहुंचाने, प्रयोग में लाने के कौन-कौन से पड़ाव हैं?

जिस प्रकार से बार-बार कहा जा रहा है कि वैक्सीन में रोग के कीटाणु प्रयोग में लाए जाते हैं तथा उनकी मारक क्षमता (नुकसान पहुंचाना) को खत्म किया जाता हैं क्या दूसरा आवश्यक गुण मौजूद है अथवा वह कितना सा चाहिए कि वह रोग के साथ लड़ सके, आदि के लिए परख की जाती है। इसलिए आम लोगों को वालंटियर के रूप में भर्ती किया जाता है। परंतु इससे पूर्व दो परख पड़ाव जानवरों में होते हैं-जिनकी बनावट मनुष्यों के साथ मेल खाती है जैसे कि चूहे, गिनीपिग, हैमस्टर आदि। तत्पश्चात् मनुष्यों में चार परख पड़ाव पर करके ही वैक्सीन मार्केट में आती है। इन अलग-अलग पड़ावों के दौरान वैक्सीन की बचाव क्षमता, उसके बुरे प्रभाव, उसके कारगर रहने का समय, वैक्सीन की मात्रा इत्यादि कई पहलुओं से उसकी परख की जाती है।

कोरोना वैक्सीन एक वर्ष से भी कम समय में तैयार हो गई है, जबकि सुना जाता है कि इस को तैयार करने में कई-कई साल लग जाते हैं।

क्या सभी परख पड़ाव संपूर्ण हुए हैं?

यह ठीक है कि वैक्सीन की पृष्ठभूमि में जाएं तो दस-दस साल लगते रहे हैं, परंतु अब हमारे पास अनुभव भी है तथा कई नई तकनीकें भी विकसित हुई हैं। इस बार राजनीतिक इच्छाशक्ति भी मौजूद थी। परंतु फिर भी आवश्यक चार परख पड़ाव किसी भी वैक्सीन ने पार नहीं किये हैं। इसीलिए 'कोवैक्सिन' के दो पड़ावों तथा 'कोविशील्ड' के तीन पड़ावों के बाद ही इनको 'आपातकालीन प्रयोग' के नाम पर मंजूरी दे दी गई। यद्यपि अब हमने 18 वर्ष से ऊपर के सभी नागरिकों के लिए खोल दिया है।

वैक्सीन के प्रभाव, इसके बुरे एवं अच्छा प्रभाव तथा बदल रहे स्ट्रेन के दृष्टिगत अनेक शंकाएं हैं, वे

शेष पृष्ठ 30 पर.
....

खरी खोटी

विवेक पर विवेकहीनता का हमला

-डॉ. रणवीर सिंह दहिया

(डॉ.रणवीर सिंह दहिया द्वारा लिखे गये इस लेख में हरियाणवी बोली के आंचलिक शब्दों का समावेश है जो इसको और भी सुन्दर बनाता है। प्राप्त इस लेख को यहां ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जा रहा है।) -संपादक।

तर्क, युक्ति, विवेक, अनुसंधान, प्रयोग और परीक्षण के बिना विज्ञान का विकास नहीं हो सकता। शुरू से ही विज्ञान अपने इन पुख्ता आधारां पर खड़ा होके आगै बढ़ा है। इनके आधार पर वैज्ञानिकां में ये मानकर चलने का नैतिक बल और साहस आता है कि वे अब तक सही समझे जाने वाले सिद्धान्तों को चुनौती दे पाएं और नये सिद्धान्त प्रतिपादित कर पाएं अर इस बात के लिए तैयार रहें कि इन्हीं आधारों पर उनके सिद्धांतों को भी चुनौती दी जा सकती है और नये सिद्धांत उसके सिद्धांतों को गल्त साबित कर सकते हैं, पर आज के दिन ये बात देख कर हैरानी होती है कि खुद विज्ञान के क्षेत्र में विज्ञान के इन आधारों को नष्ट करने का काम बेशर्मी के साथ किया जा रहा है। इससे भी ज्यादा हैरानी की बात यह है कि ये काम विज्ञान के विरोधी तो करें सो करें बल्कि वैज्ञानिक कहें और माने जाने वाले लोग भी ये काम करण मंडरे (काम करने में लगे) हैं और बड़े पैमाने पर कर रहे हैं। अगर एक हरफी बात करनी हो तो यह इस विवेक पर विवेकहीनता का हमला कहा जा सकता है, और यह हमला इतना जबरदस्त है कि विज्ञान विवेक की दिशा में आगे जन सापेक्ष लक्ष्यों की तरफ बढने की बजाय उससे पीछे को हटता हुआ दिखाई दे रहा है। सोचने की बात है कि ऐसा क्यूं हो रहा है और इसके संसार और मानवता पर कितने बुरे असर पड़ रहे हैं और आगे और भी ज्यादा पड़ेंगे। पर सोचने की फुरसत किसे है? अगर कोई सोचना समझना चाहता है तो उसके लिए पढने के वास्ते एक अच्छी किताब है 'साइंस एंड दि रिट्रिट फ्रॉम रीजन' जो मर्लिन प्रैस लन्दन से 1995 में छपी है। यह किताब लंदन के दो लेखकों जॉन गिलैट अर मनजीत कुमार ने मिलकर लिखी है । जॉन गिलैट गणितज्ञ हैं और मनजीत कुमार भौतिकी और दर्शन के विद्वान हैं।

पहले विज्ञान की प्रगति को समाज की प्रगति की नींव मान्या जाया करता। साथ में ये विचार कि मानवता को विज्ञान के द्वारा पूर्णतर बनाया जा सकता है, प्रगति का आधार था। यो विचार सबसे पहले अठारवीं सदी में एक फ्रांस के गणितज्ञ और दार्शनिक कोंदोर्से ने अपनी किताब 'मानव मस्तिष्क की प्रगति की एक ऐतिहासिक झांकी' (1794) मैं व्यक्त किया था। फेर ब्रूनो नै जिन्दा जलावण वाले हरेक युग मैं हुए हैं और आज भी हैं। एक अंग्रेज पादरी था माल्थस जिसको फांचर ठोक कह दें तो गलत बात नहीं। उसने कोंदोर्से के विचार का विरोध किया 'ऐस्से ऑन दि प्रिंसीपल ऑफ पापुलेशन' (1798) मैं अपनी किताब छपवा करके। इसके बावजूद पीछे सी तक कोंदोर्से का सिद्धांत काम किया करता। उस बख्त लोगां के दिल में ये आस थी, ये विश्वास था कि विज्ञान के दम पर समाज की प्रगति, मानवता की प्रगति बहोत आगे तक की जा सकती है। उनको उम्मीद थी कि वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक प्रगति भी हो सकती है और होएगी और आम आदमी की जिन्दगी मैं खुशहाली आएगी। हरित क्रांति के दौर मैं हरियाणा के लोगों ने भी खूब सपने देखे थे। पर कितने लोगां के सपने पूरे हुए और कितनों के सपने टूट कर चूर-चूर हो गए? वैज्ञानिक प्रगति से आर्थिक विकास तो हुया फेर सामाजिक विकास पिछड़ता चला गया। आम आदमी के मन मैं विज्ञान के प्रति मोह भंग के हालात पैदा होगए । क्यों?

सोचने की बात है ।

भारत मैं भी विकास का यही मॉडल तबाही मचावण लागरया है। भारत को महाशक्ति बणाण के सपने देखैं हैं फेर 80 प्रतिशत जनता का गला घोंट के महाशक्ति बण बी जायेगा तो क्या फायदा? एक बार फिर विवेक पर विवेकहीनता की जीत का मौका आ जायेगा। भारत बहोत बड़ी आबादी वाला देश है इस कारण यहाँ कुशल श्रमवाली, कम पूंजी वाली और म्हारे प्राकृतिक संसाधनां को नुकसान ना पहोंचाने वाली प्रौद्योगिकी को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। फेर इसकी जगह हम कैपिटल इंटेंसिव प्रौद्योगिकी अपनाने से एक तरफ तो हम अपने देश के बहोत से श्रमिकों को बेरोजगार बनाते हैं और दूसरी तरफ नई प्रौद्योगिकी बाहर से लाने पर अपनी औकात से फालतू खर्च करके कर्ज के शिकंजे मैं फंस ज्यावां सां और फेर विश्व बैंक, अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन बरगी संस्थावां की उन शर्तां को माणण नै लाचार हो ज्यावां सां। ये शर्त म्हारे देश की अर्थव्यवस्था के प्रतिकूल ही र3ही हैं। यह बात साफ है कि अगर हम ज्यादा श्रम आली और स्थानीय ज्ञान प्रणालियां पर आधारित प्रौद्योगिकी को विकसित करांगे तो हमारे काम से रोजगार बधैंगे, जनता के जीवन में खुशहाली आएगी। जनता हमको अपना मित्र और हितचिंतक मानेगी और एक बेहतर जीवन दृष्टि अपना कर अज्ञान और अंधविश्वास फैलाने वाली अवैज्ञानिक ताकतों के खिलाफ लड़ने में सक्षम हो सकेगी। बिल्कुल अनपढ़ अर गरीब किसान भी जानता है कि अपने खेत मैं उसनै जो फसल पैदा करनी है वह खाद बीज पानी वगैरह के साथ ही हो सकती है। या फसल ना तै हिन्दुत्व, भारतीयता और या सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के नारयां तै पैदा होगी और ना किन्हीं अंधविश्वासों अर कर्म काण्डों से। जब हटकै विवेक अपनी जगह बनायेगा तभी जनपक्षीय विज्ञान का विकास होगा। और फिर जिससे समाज में आम जनता का विकास होगा। काम आसान नहीं। फेर मुश्किल भी नहीं अगर जनता की समझ में आ जाये तो। समझल्यो तावले से मेरे बीरा। मनै बेरा सै विवेक खत्म करने को अन्धविश्वास फैलाये जा रहे हैं । बचियो!!!

तमिलनाडु सरकार का फैसला

मंदिरों की जमीन पर खुलेंगे कॉलेज

चेन्नई, एजेंसियां, तमिलनाडु के धार्मिक मामलों के मंत्री पी.के.शेखर बाबू ने एक बयान में कहा है कि राज्य के विभिन्न मंदिरों के स्वमित्व वाली जमीनों पर कॉलेज और शिक्षा संस्थानों की स्थापना की जाएगी, श्रम कल्याण मंत्री सी.वी.गणेशन के साथ श्रीनिवास पेरूमल मंदिर का निरीक्षण दौरा करने के बाद उन्होंने कहा कि शिक्षा संस्थओं कें मंदिर परिसर में स्थापित होने के बाद मंदिरों को इनसे नियमित आय हो सकेगी। इससे मंदिरों की जमीनों पर अतिक्रमण पर भी रोक लग सकेगी। साथ ही समाज का भी भला होगा। पूनामलई हाई रोड पर 50000 वर्ग फीट की भूमि पर एक व्यावसायिक ढांचा तैयार किया जाएगा जो कि अगमोर पेरूमल मंदिर के अधीन आता है। मंत्री ने अधिकारियों से यहां से अतिक्रमण को तुरंत हटाने को कहा। उन्होंने इसी के साथ 15 वर्षों से लंबित भनई मातम के जल्द निर्माण पर भी बल दिया।

जादू और चमत्कार

जादू है यह, कोई चमत्कार नहीं।
अंधविश्वास का कोई प्रचार नहीं।।
कितने होते हैं सच्चे जादूगर अपने।
शो दिखाते हैं, ठगी का व्यापार नहीं।।
सीखो ट्रिक और सिखाओ सबको।
पाखंड चलने के अब आसार नहीं।।
तर्क और समझ से लें काम सभी हम।
जादू-टोने में फंसे अब संसार नहीं।।
छोड़ो वास्तु, राशि, और ग्रहों के चक्कर।
विज्ञान जैसा कोई होता मददगार नहीं।।

---- मनोज मलिक
9463432405

चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या क्यों जरूरी है?

-वेद प्रिय
हरियाणा विज्ञान मंच

एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला में कोई प्रयोग करता है तो उसके सामने एक स्पष्ट लक्ष्य होता है, कुछ नया सीखने का या कुछ नया खोजने का। इससे उसे जानकारी रूपी नई संपत्ति मिलती है। वह इस संपत्ति को पाने के बाद इसके प्रयोग करने के बारे में सोचता है । वह इसको तकनीक में ढालकर व्यवसाय कर सकता है। इससे और आगे बढ़े हुए ज्ञान की ओर जा सकता है। इसके प्रयोग का प्रकार चाहे कैसा भी हो यह जानकारी सार्वजनिक होती है। यह और आगे ज्ञान का आधार बनती है। यह बच्चों के लिए शिक्षा का पाठ्यक्रम बनती है। यह जानकारी मानवजाति की धरोहर बन जाती है। इससे मानव सभ्यता व संस्कृति आगे बढ़ती है।

जब कोई जादूगर इन्हीं जानकारियों के आधार पर स्टेज पर कोई प्रयोग करता है तो वह इस प्रयोग को प्रत्यक्ष नहीं करता। वह इसे रूपांतरित करता है। इसमें अपनी कला का पुट देता है। वह इसमें सौंदर्यशास्त्र के रंग भरता है । इनमें ध्वनि, प्रकाश, संगीत व साज-सज्जा की चासनी डालता है । वह जनमानस का मनोरंजन करता है । इससे वह अपनी रोजी-रोटी भी देखता है। वह एक प्रयोग की नाना प्रकार की प्रस्तुतियां देता है। वह अपनी कल्पना के मिश्रण से कला को नई उच्चाइयाँ प्रदान करता है। इतना ही नहीं, कई बार जादूगरों ने कुछ बड़े काम भी किए हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों की सहायता भी की है। जब परीक्षण के बिना विज्ञान का विकास नहीं हो सकता। शुरू से ही विज्ञान अपने इन पुख्ता आधारों पर खड़ा होके आगे बढ़ा है। इनके आधार पर वैज्ञानिकों में ये मानक भौतिकविद नरसिंहमैया , साईं बाबा की चालाकी को समझने में असमर्थ रहे तो उन्होंने जादूगर पीसी सरकार की सहायता से ही इन्हें समझा था। यूरी गैलरी की Psycho Kinetic Power पीके पावर का पर्दाफाश भी जादूगर जेम्स रैंडी ने ही किया था, जबकि बहुत से वैज्ञानिक इसे समझने में असमर्थ रहे थे।

लेकिन जब कोई स्वयम्भू देव पुरुष इसी प्रकार का कोई प्रयोग करता है तो उसके अपने लक्ष्य भी स्पष्ट होते हैं। वह इनकी रहस्यमयी व्याख्या करता है। इनके पीछे के कारण को दिव्य शक्ति या कोई सिद्धि बताता है। वह हमारी आस्था का दोहन करता है और इस प्रकार व्यक्तियों का ब्लैकमेल करता है। वह अपने स्वार्थ सिद्ध करता है। वह शोषण करता है। वह अपने भक्त बनाता है। वह आमजन को ज्यादा अंधविश्वासी बनाता है। वह मानवजाति की तरक्की में इस प्रकार बड़ी बाधा बनता है। आम आदमी इन्हें समझते नहीं। वे इनसे भय खाते हैं। इन्हें जांचने या पड़ताल करने की उनकी हिम्मत नहीं होती और न ही उनकी क्षमता कि वे ऐसा कर सकें। अज्ञानता उनके आड़े आती है ।

ऐसा वातावरण हम अपने आसपास बहुधा देखते हैं। यहाँ कभी गणेश जी दूध पीते हैं तो कहीं मूर्तियां रोती हैं। कहीं चोटियां कटती है तो कहीं घरों में आग लगने की घटनाएं घटती हैं। कहीं देवियां प्रकट होती हैं तो कहीं ओपरी -पराई के साए मंडराते हैं। कहीं कोई भभूत बाँटता होता है तो कहीं कोई तिलस्मी ताबीज देता है । कहीं कोई समाधि लेता फिरता है तो कहीं कोई नबज बंद कर दिखाता है।

हमारा समाज इन सब घटनाओं का गवाह है। हमारा समाज कम पढ़ा- लिखा है। हमारी शासन व्यवस्था सामाजिक सुरक्षा की गारंटी कम देती है। रूढ़िवाद की जड़े मजबूत हैं। यह सब ऐसे चमत्कारों को फलने-फूलने के लिए उर्वरा जमीन तैयार करते हैं। इनसे मनुष्य अपना आत्मविश्वास खो बैठता है। व्यक्ति का विवेक जाता रहता है वह स्वयं को अदृश्य शक्ति के हाथों कठपुतली मान बैठता है। वह और दरिद्रता में धंसता चला जाता है।

ऐसे में वैज्ञानिकों की सबसे बड़ी जिम्मेवारी बनती है कि वे ऐसी घटनाओं पर अधिक ध्यान दें। वे इनके पीछे छिपे विज्ञान से जनता को अवगत कराएं। यदि वैज्ञानिक ऐसा नहीं करते हैं तो

अधिकांश लोग इस बात को मूक सहमति मान बैठते हैं । वैज्ञानिकों की यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वे ऐसी घटनाओं से होने वाले नुकसान से जनता को बचाएं । यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो जालसाजों के और हौसले बुलंद होते हैं। हम प्रायः देखते हैं कि अधिकांश पढ़े-लिखे व्यक्ति चुप रहना पसंद करते हैं जोखिम उठाना नहीं चाहते। हम रणनीतिक तरीके से काम कर सकते हैं। हम विज्ञान संप्रेषण के और तौर तरीके प्रयोग कर सकते हैं। ऐसा करके हम वैज्ञानिक मानसिकता का प्रचार- प्रसार करने का अपना संवैधानिक और नैतिक दायित्व ही निभाते हैं, हम किसी पर एहसान नहीं करते हैं। यदि कोई जानकार व्यक्ति यह कहकर चुप रहता है कि मैं ही क्यों, तो यह उसका पलायनवादी नजरिया है ।

अंधविश्वास एक भयंकर जंगल की आग है। यह समाज के लिए हानिकारक है। आज नहीं तो कल इसकी तपन को सब महसूस करेंगे और कर भी रहे हैं। इसलिए चमत्कारों का पर्दाफाश करना एक माननीय जिम्मेवारी है। इस क्षेत्र से जुड़े कार्यकर्ताओं और स्रोत व्यक्तियों को चाहिए कि वे सब कुछ स्पष्ट करें जैसे, कब, किसने और कहां-कहां किन चमत्कारों से कितनी जनता को ठगा या बेवकूफ बनाया ।किस वैज्ञानिक ने कब और कैसे उनका पर्दाफाश किया। ऐसा करने में उन्हें किस-किस प्रकार की दिक्कतें आई आदि आदि। कई बार हमारे साथी आधी-अधूरी जानकारी ही सामने रखते हैं। इससे यह गतिविधि सस्ता मनोरंजन बन कर रह जाती है और गंभीर बहस नहीं बनती।

जीवाणुओं से होने वाली बीमारियों तथा टीके के सिद्धांत के खोजकर्ता

लुई पास्चर

लुई पास्चर फ्रांस के एक रसायनशास्त्री तथा सूक्ष्म जीव शास्त्री थे। उन्होने जीवाणुओं से होने वाली बीमारियों तथा टीके के सिद्धांत की खोज की थी। फ्रांस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक लुई पास्चर का जन्म सन् 1822 ई. में नैपोलियन बोनापार्ट के एक व्यवसायी सैनिक के यहां हुआ था।

कर्म-क्षेत्रः रसायन शास्त्र, सूक्ष्म जीव शास्त्र

शिक्षा: École Normale Supérieure
विशेष खोजः रैबीज वैक्सिन
कार्यः स्ट्रासबर्ग विश्वविद्यालय, लील्ले विज्ञान तथा तकनिकी विश्वविद्यालय, cole Normale Supérieure]पास्चर इंस्टीट्युट
पुरस्कार-उपाधिः लीवेनहोएक मेडल, मान्ट्यान पुरस्कार, कापली मेडल, रमफर्ड मेडल, अलबर्ट मेडल
सम्मानः लुई पास्चर के सम्मान मे ही दूध को 60 डीग्री सेल्सीयस तक गर्म कर कीटाणु रहित करने की प्रक्रिया को 'पास्चराइजेशन' कहते है।

उन्होंने वास्तव में मानव जाति को यह अनोखा उपहार दिया है। आपके देशवासियों ने आपको सब सम्मान एवं सब पदक प्रदान किए। उन्होंने आपके सम्मान में पास्चर इंस्टीट्यूट का निर्माण कियाः किन्तु कीर्ति एव ऐश्वर्य से आप मे कोई परिवर्तन नहीं आया। आप जीवनपर्यन्त तक सदैव रोगों को रोक कर पीड़ा हरण के उपायों की खोज में लगे रहे। सन् 1895 ई में आपकी निद्रावस्था में ही मृत्यु हो गई।

फ्रांस के मदिरा तैयार करने वालों का एक दल, एक दिन लुई पास्चर से मिलने आया। उन्होंने आप से पूछा कि हर वर्ष हमारी शराब खट्टी हो जाती है। इसका क्या कारण है?

लुई पास्चर ने अपने सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा मदिरा की परीक्षा करने में घण्टों बिता दिए। अंत में आपने पाया कि जीवाणु नामक अत्यन्त नन्हें जीव मदिरा को खट्टी कर देते हैं। अब आपने पता लगाया कि यदि मदिरा को 20-30 मिनट

तक 60 सेंटीग्रेड पर गरम किया जाता है तो ये जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। ताप उबलने के ताप से नीचा है। इससे मदिरा के स्वाद पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। बाद में आपने दूध को मीठा एवं शुद्ध बनाए रखने के लिए भी इसी सिद्धान्त का उपयोग किया। यही दूध पास्चरित दूध कहलाता है।

एक दिन लुई पास्चर को सूझा कि यदि ये नन्हें जीवाणु खाद्यों एवं द्रव्यों में होते हैं तो ये जीवित जंतुओं तथा लोगों के रक्त में भी हो सकते हैं। वे बीमारी पैदा कर सकते हैं। उन्हीं दिनों फ्रांस की मुर्गियों में 'चूजों का हैजा' नामक एक भयंकर महामारी फैली थी। लाखों चूजे मर रहे थे। मुर्गी पालने वालों ने आपसे प्रार्थना की कि हमारी सहायता कीजिए। आपने उस जीवाणु की खोज शुरू कर दी जो चूजों में हैजा फैला रहा था। आपको वे जीवाणु मरे हुए चूजों के शरीर में रक्त में इधर-उधर तैरते दिखाई दिए। आपने इस जीवाणु को दुर्बल बनाया और इंजेक्शन के माध्यम ?स्वस्थ चूजों की देह में पहुँचाया। इससे वैक्सीन लगे हुए चूजों को हैजा नहीं हुआ। आपने टीका लगाने की विधि का आविष्कार नहीं किया पर चूजों के हैजे के जीवाणुओं का पता लगा लिया।

इसके बाद लुई पाश्चर ने गायों और भेड़ों के ऐन्थ्रैक्स नामक रोग के लिए बैक्सीन बनायी। पर उनमें रोग हो जाने के बाद आप उन्हें अच्छा नहीं कर सके। किन्तु रोग को होने से रोकने में आपको सफलता मिल गई। आपने भेड़ों के दुर्बल किए हुए ऐन्थ्रैक्स जीवाणुओं की सुई लगाई। इससे होता यह था कि भेड़ को बहुत हल्का ऐन्थ्रैक्स हो जाता था, पर वह इतना हल्का होता था कि वे कभी बीमार नहीं पड़ती थीं और उसके बाद कभी वह घातक रोग उन्हें नही होता था। आप और आपके सहयोगियों ने महीनों फ्रांस में घूमकर सहस्रों भेड़ों को यह सुई लगाई। इससे फ्रांस के गौ एवं भेड़ उद्योग की रक्षा हुई।

आपने तरह-तरह के सहस्त्रों प्रयोग कर डाले। इनमें बहुत से खतरनाक भी थे। आप विषैले वाइरस वाले भयानक कुत्तों पर काम कर रहे थे। अंत में आपने इस समस्या का हल निकाल लिया। आपने थोड़े से विषैले वाइरस को दुर्बल बनाया। फिर उससे इस वाइरस का टीका तैयार किया। इस टीके को आपने एक स्वस्थ कुत्ते की देह में पहुँचाया। टीके की चौदह सुइयाँ लगाने के बाद रैबीज के प्रति रक्षित हो गया। आपकी यह खोज बड़ी महत्त्वपूर्ण थी, पर आपने अभी मानव पर इसका प्रयोग नहीं किया था। सन् 1885 ई. की बात है। लुई पाश्चर अपनी प्रयोगशाला में बैठे हुए थे। एक फ्रांसीसी महिला अपने नौ वर्षीय पुत्र जोजेफ को लेकर उनके पास पहुँची। उस बच्चे को दो दिन पहले एक पागल कुत्ते ने काटा था। पागल कुत्ते की लार में नन्हे जीवाणु होते हैं जो रैबीज वाइरस कहलाते हैं। यदि कुछ नहीं किया जाता, तो नौ वर्षीय जोजेफ धीरे-धीरे जलसंत्रास से तड़प कर जान दे देगा।

आपने बालक जोजेफ की परीक्षा की। कदाचित् उसे बचाने का कोई उपाय किया जा सकता है। बहुत वर्षो से आप इस बात का पता लगाने का प्रयास कर रहे थे कि जलसंत्रास को कैसे रोका जाए? आप इस रोग से विशेष रूप से घृणा करते थे। अब प्रश्न था कि बालक जोजेफ के रैबीज वैक्सिन की सुईयाँ लगाने की हिम्मत करें अथवा नहीं। बालक की मृत्यु की सम्भावना थी। पर सुइयां न लगने पर भी उसकी मृत्यु निश्चित् है। इस दुविधा में आपने तत्काल निर्णय लिया और बालक जोजेफ का उपचार करना शुरू कर दिया। आप दस दिन तक बालक जोजेफ के वैक्सीन की बढ़ती मात्रा की सुइयाँ लगाते रहे और तब महान आश्चर्य की बात हुई। बालक जोजेफ को जलसंत्रास नही हुआ। इसके विपरीत वह अच्छा होने लग गया। इतिहास में प्रथम बार मानव को जलसंत्रास से बचाने के लिए सुई लगाई गई।

साहबजादी की करनी

–नरेन्द्र दाभोलकर

सतारा में मेरे घर के सामने वाली गली में साहबजादी नामक एक शिक्षित और गूंगी मुस्लिम महिला रहती थी। जब हम उसके चमत्कार की खोज में लगे थे तब उसने हमारी सतर्कता का मानो घमंड ही चकनाचूर कर दिया था। मुस्लिम समाज के नायब तहसीलदार के घर में न जाने वह कहां से प्रकट हुई और सात दिनों में वह गूढ़ चमत्कार के आकर्षण का केंद्र बन गई। उसके पास जाने वालों को वह अपने घर की मिट्टी, बर्तन, पानी और इन चीजों के साथ नींबू भी लाने को कहती थीं। बाद में उस व्यक्ति या उसके घर पर करनी हुई है या नहीं, इसका पता लगाने के हेतु जमा नींबू में से दो–तीन काटकर बर्तन के पानी में डालती। उस व्यक्ति द्वारा लाई गई अपने घर की मिट्टी उस पानी में मिलाती। गूंगी होने के कारण उसका भुनभुनाना बंद रहता। कुछ चेष्टाएं करती और दूबारा नींबू काटकर उस पानी के बर्तन में डालती। फिर संबंधित व्यक्ति को पानी में हाथ डालकर नींबू निचोड़ने को कहती। आश्चर्य यह होता कि तब नींबू निचोड़ने वाले व्यक्ति के हाथ में कील और पिन के साथ तावीज आ जाते। इसका मतलब यह माना जाता कि घर की करनी दूर हो चुकी है। और फिर उस औरत को बिना मांगे भारी मात्रा में पैसों की प्राप्ति होती।

स्थानीय केबल द्वारा इस चमत्कार का प्रसारण किया गया। फिर तो इसे दैवी चमत्कार मान लेने का पक्का वातावरण तैयार हो गया।

चुनौती का मसौदा निश्चत हुआ। दोनों ओर से हस्ताक्षर हुए। सुबह दस बजे का समय तय हुआ था, लेकिन संबंधित नायब तहसीलदार को इतना भरोसा था कि सुबह साढ़े नौ बजे से ही फोन कर वे मुझे जल्दी आने का आग्रह कर रहे थरे। मैं अपने साथियों के साथ पहुंच गया। पुलिस भी आई थी। चुनौती का प्रक्रिया में पहले ही कह दिया गया था कि वह चमत्कार यदि फरेब सिध्द हुआ तो जिस नायब तहसीलदार के घर में यह कार्यक्रम हुआ, उसे भी इस फरेब की साजिश में (सहयोगी) शामिल माना जाएगा। लेकिन संबंधित तहसीलदार का साहबजादी पर इतना अटूट विश्वास था कि उन्होंने इस बिलकुल नज़रअंदाज कर दिया।

सबसे पहले एक औरत सामने बैठी और अपने घर से लाए नींबू, मिट्टी आदि चीजें साहबजादी के सामने रख दीं। फिर एक बर्तन में पानी मंगाया गया। पहले बर्तन में दो नींबू काटकर डाले गये। उसमें थोड़ी मिट्टी भी डाली गई। बाद में कुछ और नींबू काटकर डाले गए और वहां आई औरत को बर्तन के पानी में हाथ डालकर नींबू निचोड़ने को कहा गया। और के हाथ में कील, तावीज तथा पीन आ गये जो उसने बाहर निकाले। कमरे में सिर्फ साहबजादी और उस पर नजर रख रहे 'अंनिस' के कार्यकर्ता और पुलिस थी। सूक्ष्म निरीक्षण के बावजूद यह सब आया कहां से, इसका पता किसी को भी न लगा। इसके बाद चुनौती प्रक्रिया शुरू हुई।

पूना से 23 वर्ष की एक लड़की आई थी। उसे लग रहा था कि पिछले चार–पांच वर्षो से उसके सिर में पीन चुभोए जा रहे हैं। उसे सामने बिठाया गया। फिर एक बार वही सिलसिला आरम्भ हुआ–नींबू, पानी, मिट्टी तथा बर्तन।

प्रक्रिया शुरू होने ही वाली थी कि मैंने कहा, 'साहबजादी की तलाशी लेनी चाहिए।' दो महिला कार्यकर्ताओं ने अंदर जाकर उसकी तलाशी ली। बाहर आकर सिर पर लगी करनी निकालने की शुरूआत होने वाली थी कि मैंने उसके सामने रखे सारे नींबू बदलकर हमारी ओर से लाए गए बारह नींबू वहां रखे। कार्यक्रम शुरू हुआ। साहबजादी नींबू काटकर लड़की के सिर पर जोर–जोर से रगड़ने लगी। 12 नींबू खत्म हुए। साहबजादी ने और मांग की। उसका अंदाजा गलत हुआ। उसे लगा था कि अब उसे उसके सामने से उठाए गए नींबू मिलेंगे।, लेकिन हमारे पास अभी भी एक दर्जन नींबू थे, जो हमने उसे दिए। लड़की के सिर पर उन्हें भी काटकर

रगड़ दिए गए। एक बार फिर नींबू की मांग हुई। अब हम दौड़-धूप कर बाजार से और एक दर्जन नींबू लेकर आए। फिर एक बार वही सिलसिला शुरू हुआ। कुल 38 नींबू काटकर लड़की के सर पर रगड़ दिए गए। उसके बाल नींबू के रस से लथपथ हो गए। चेहरे पर भी रस ढलक आया था। आंखों में नींबू का रस जाने से लड़की चिल्लाने लगी।

साहबजादी ने कुरान की मांग की। कुछ पढ़ने का नाटक कर कार्यक्रम अगले दिन करने का फैसला सुनाया। उस समय मैंने यह मांग की कि सिर में अक्सर पिन चुभन का अहसास होना एक मानसिक बीमारी है। साहबजादी इस बीमारी का दैवी इलाज कर रही है, जो कानूनन अपराध है। इस कारण इसे गिरफ्तार कर उसका सामान भी जब्त कराया जाए।

मेरे यह कहने पर घर से उसकी थैली मंगाई गई। जिसमें नींबू निकले। इसका अलावा कार्यक्रम की शुरुआत में जब्त किए नींबू भी थे जिन्हें पत्रकारों और पुलिस के सामने काटा गया। उसमें से चार नींबुओं में अच्छी तरह से अंदर चुभकर रखी गई पीन, कील, तावीज आदि के साथ पुड़िया मिल गई। साहबजादी कार्यक्रम के लिए बैठते समय अपनी साड़ी में, कमर के पास ये नींबू छुपाकर रखती थी और सामने वाले व्यक्ति द्वारा लाए गए 15-20 नींबू में उन्हें मौका निकाल कर मिला देती थी। पहले मामले में उसने इतनी सफाई से यह काम किया था कि उससे बिलकुल चिपककर बैठी महिला कार्यकर्ताओं, सूक्ष्म निरीक्षण करने वाले पुरुष कार्यकर्ताओं और पुलिस को भी उसकी चालाकी का पता नहीं चला था।

गिरफ्तारी के बाद जुर्म कुबूल करते समय उसने बताया कि वह साड़ी में नींबू कैसे छुपाती थी और की सफाई से कैसे उन्हें निकालती थी। उसने अपने हाथ की सफाई करके दिखाई, जिस देख हम सभी हक्का-बक्का रह गए। पल्लू के पीछ हाथ ले जाकर साड़ी में छुपाई जगह से नींबू निकालना, मुट्ठी में लेना और सामने वाले नींबू के ढेर में मिलाने जैसी बातें वीडियो कैमरे में आने का प्रश्न ही नहीं उठता था, क्योंकि वह कपड़ा और बंद मुट्ठी के पीछे की सृष्टि थी।

दूसरी बार जांच करने के लिए अंदर ले जाते समय उसे मजबूरन छिपाए हुए दो नींबू हू-ब-हू मिलाकर रखे थे। ऐन मौके पर हमने उसके सामने के सारे नींबू अपने कब्जे में ले लिए जिससे उसकी पोल खुल गई। फिर उसे आशा थी कि हमारे द्वारा बदलकर दिए गए दर्जन भर नींबू खत्म होने पर हम उसे पहले वाले नींबू देंगे और वह बड़ी सफाई से सिर की करनी बाहर निकालेगी। हम ऐन वक्त पर 38 नींबू बाहर से ले आएंगे, इसकी कल्पना भी उसने नहीं कीथी। जिस समय उसे इस बात का अहसास हुआ कि उसके अपने नींबू नहीं मिलेंगे, तब मजबूरन उसे करनी निकालने का कार्यक्रम दूसरे दिन करने के लिए विवश होना पड़ा। सारी महिला कार्यकर्ताएं उसके इतनी करीब बैठी थीं कि ऐसी अवस्था में वह कमर के पास छुपाए नींबू इन सभी से नज़र बचाकर चालाकी से हाथ में लेंगी, इसकी कल्पना तक हमने नहीं की थी। इसी कारण महिला कार्यकर्ताओं द्वारा जांच-पड़ताल करने की आवश्यकता हम में से किसी को भी महसूस नहीं हुई थी। फिर भी 'चमत्कार करनेवाले बदमाश होते हैं', इस धारणा को मानकर हमने उसकी जांच की। नहीं तो कार्यकर्ता, पुलिस, पत्रकार तथा वीडियो कैमरे के सामने वह अपना चमत्कार साबित कर देतीं।

साहबजादी पर मुकदमा दर्ज हुआ, साथ ही अपराध करने के लिए जगह देने वाले नायब तहसीलदार के परिवार वालों पर भी मुकदमा दर्ज हुआ। साहबजादी की करनी का उसे भारी नुकसान उठाना पड़ा।

(डॉ. नरेंद्र दोभोलकर की पुस्तक 'अंधविश्वास उन्मूलन -आचार' में से साभार)

जी, ईश्वर के भरोसे खुशी मिली नहीं,
तर्कशीलता से सुख मिला,
भटकाव से मुक्त मिली, यथार्थ से
साक्षात्कार हो गया
अब अहसास हुआ कि शक्ति भक्ति में
नहीं,
अंतर्निहित शक्ति से,
विमुख होकर अंधविश्वास के अंधेरे में
बर्बाद हुआ हूं मैं भी।

‘भारत के प्रख्यात नास्तिक

माणिक सरकार

–मोहम्मद हुसैन कुरैशी

भारतीय राजनीति ने पिछले कुछ वर्षो से अवाम के सामने अपना भ्रष्टतम् कुरूप चेहरा प्रस्तुत किया है। देश के दोनों बड़े राजनीतिक दलों के शीर्षस्थ नेता भ्रष्टाचार में लिप्त पाए गए हैं। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्षों पर भ्रष्टाचार के गहरे आरोप लगे हैं। वहीं कांग्रेसनीत गठबंधन के कई मंत्री भ्रष्टाचार के आरोपों चलते जेल की सलाखों के पीछे पहुंचे। कई विधायक एवं सांसद करोड़ों की संपति के मालिक हैं। जनसेवा के नाम पर राजनीति में प्रवेश करने वाले फकीर भी चंद वर्षो में राजा बन बैठे हैं। ऐसे में भारत का मतदाता एक ईमानदार राजनीतिक नेतृत्व की तलाश में रहा है। उसकी यह तलाश पूरी हो सकती है, यदि उसे त्रिपुरा के मुख्यमंत्री एवं वामपंथी नेता माणिक सरकार के जीवन के बारे में बतलाया जाए।

22 जनवरी, 1949 को जन्मे माणिक सरकार स्वच्छतम छवि वाले और सबसे गरीब मुख्यमंत्री रहे हैं। उनके पास चल एवं अचल संपति को मिलाकर केवल 2.5 लाख रुपये की संपति है। त्रिपुरा के धनपुर विधान सभा क्षेत्र में निर्वाचित माणिक सरकार ने त्रिपुरा विधान सभा चुनाव 2013 के लिए भरे गए शपथ–पत्र में बतलाया था कि उनके पास मात्र 1080 रुपये नकद, तथा 9720 रुपये बैंक बैलेंस है। वह मात्र 432 वर्गफीट के मकान में रहते हैं। जिसका बाजार मूल्य 2,20,000/– रुपये मात्र है। जो उन्हें उनकी माता श्रीमती अंजली सरकार से विरासत में मिला है। यद्यपि उनकी पत्नी श्रीमती पांचाली भट्टाचार्य जो कि एक सेवानिवृत सरकारी ऑफिसर हैं, के नाम पर 23,58,380 रूपये स्थायी जमा तथा 72,000 रूपये मूल्य का 20 ग्राम सोना है, किंतु यह पूंजी उन्हें सेवा निवृति पर मिलने वाली पेंशन परिलाभों से प्राप्त हुई है। इस प्रकार अपनी पत्नी की परिसम्पतियों को मिलाकर करीब 26,00,000/– रूपये की चल एवं अचल संपति है, जबकि त्रिपुरा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष समीर रंजन बर्मन की संपति 16.41 मिलियन है।

माणिक सरकार को मुख्यमंत्री तौर पर 9200/– रूपये मासिक वेतन मिलता है, (मिलता था, क्योंकि अब 2019 में वे मुख्यमंत्री नहीं हैं) जो वे अपने दल, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के फंड में जमा करवा देते हैं और पार्टी उन्हें 5000 रूपये मासिक देती है। सी.पी.एम त्रिपुरा इकाई के मुख्य सचिव बिजनधर कहते हैं कि ‘माणिक सरकार को कभी भी अपनी संपति बढ़ाने की भूख नहीं रही। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन पार्टी और समाज को समर्पित कर दिया।’ यह माणिक सरकार का ही व्यक्तित्व है कि उनके प्रतिपक्षी दलों के नेता भी उनकी ईमानदारी एवं बेदाग छवि को सलाम करते हैं। त्रिपुरा कांग्रेस के प्रवक्ता तपस दास ने स्वयं अपने बयानों में कहा है कि ‘हमें उनकी ईमानदार छवि पर कोई संशय नहीं है।’

आज के दौर में यह विश्वास करना ही दुस्साहस–सा लगता है कि एक प्रांत का मुख्यमंत्री रह कर भी माणिक सरकार के पास स्वयं का कोई वाहन नहीं है। साधारण जीवन व्यतीत करते हुए माणिक सरकार एवं उनकी पत्नी रिक्शा या ऑटो का प्रयोग करते हैं। स्वयं माणिक सरकार अवश्य ही सरकारी कार्यो से आने–जाने हेतु सरकारी वाहन का प्रयोग करते हैं, किंतु उनकी पत्नी इसका प्रयोग नहीं करती। यदि वे तथा उनकी पत्नी एक ही कार्यक्रम में जा रहे हों, तब भी माणिक सरकार स्वयं सरकारी वाहन में जाते हैं एवं उनकी पत्नी रिक्शा में जाती

है।

त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं प्रदेश में कम्युनिस्ट आंदोलन की जमीन तैयार करने वाले श्री नृपेन चक्रवर्ती के नक्शे कदम पर चलते हुए माणिक सरकार ने लगातार तीन विधान सभा चुनावों में सी.पी.एम. का नेतृत्व करते उस प्रदेश में भारी बहुमत से जीत दिलवाई। हाल ही में सम्पन्न त्रिपुरा विधासभा चुनावों में 96 प्रतिशत मतदान हुआ, जो एक रिकार्ड हैं अक्सर राजनीतिक विश्लेषक इतने भारी मतदान को सदैव सत्ता विरोधी रुख के रूप में देखते हैं, किंतु त्रिपुरा में माणिक सरकार को और सी. पी.एम. को रिकार्ड मत प्राप्त हुए और वे लगातार तीसरी बार मुख्यमंत्री बने। वस्तुतः त्रिपुरा में लोक उत्थान की उनकी नीतियों के साथ-साथ पर्यटन को गति देने एवं शरणार्थियों की समस्या के प्रति मानवीय रुख अपनाने के कारण उन्हें यह विजय मिली है।

अफसोस करने वाले मौजूदा हालातों में हमें इस बात पर अफसोस नहीं होना चाहिए कि आज माणिक सरकार जैसे नेताओं का कोई प्रचार-प्रसार नहीं है। वस्तुतः पूंजीपतियों के हाथों खेलने वाले मीडिया को कट्टर साम्प्रदायिक एवं पूंजीपतियों के परम हितैषी, अमेरिका जाने को लालायित नरेंद्र मोदी में गांधी नज़र आता है, मोदी अपने झूठ को सच बनाकर वोटों के बाजार में बेचने के लिए अमेरिकी प्रचार कम्पनी को करोड़ों रुपये में अनुबंधित करते हैं...ऐसे दौर में गांधी जैसा जीवन जीने की कोशिश करने वाले माणिक सरकार जैसे नेता किसी को दिखलाई नहीं देते, किंतु हां, वे गांधी जी के साथ-साथ केरल के पूर्व मुख्यमंत्री और आजाद भारत में पहली बार कांग्रेस को धूल चटाने वाले कम्युनिस्ट नेता ई.एम.एस. नम्बूदरिपाद की याद दिलाते हैं जिन्होंने मुख्यमंत्री आवास में केवल एक कमरे को अपनी घर बनाया था और बाकी पूरे मुख्यमंत्री आवास को पुस्तकालय में तब्दील कर दिया था।

(यह लेख तब लिख गया था जब वे मुख्यमंत्री थे)

(2015 में प्रकाशित डा.रणजीत की पुस्तक 'भारत के प्रख्यात नास्तिक' में से)

पृष्ठ 10 का शेष (वर्ण और जाति)

समझौता ही संघर्ष चलाया था, उन्हें भगतसिंह के विचारों की अच्छी खासी जानकारी थी। 23 मार्च 1931 को भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव की हुई शहादत के बाद 29 मार्च 1931 को पेरियार ई.वी. रामासामी ने अपने साप्ताहिक पत्र 'कुडि अरासु' में भगतसिंह की शहादत पर संपादकीय लेख लिखा था जिसमें उन्होंने उनकी शहादत पर अपना गहन शोक व्यक्ति करते हुए लिखा था कि, 'हम दृढ़ता से कह सकते हैं कि केवल भगतसिंह क विचारों की ही भारत को जरूरत है।' उन्होंने अपने संपादकीय में भगतसिंह के तार्किक विचारों और दलित समुदाय के प्रति भगतसिंह की सोच और दिशा की भी सराहना की थी। पेरियार के उक्त संपादकीय लेख को आधारित करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकर एस. इरफान हबीब ने अंग्रेजी दैनिक 'द हिंदू' के मार्च 22, 2008 वाले संस्करण में एक विस्तृत लिखा, जहां से ये तथ्य लिये गये हैं। पाठक स्वयं इन्हें और भी विस्तार के साथ इस समाचार पत्र में पढ़ सकते हें। पेरियार ई. वी.रामासामी पूर्णतः नास्तिक थे और वे ब्राह्मण धर्म के इलावा शेष सभी धर्मों के भी विरुद्ध थे। लेकिन डा.बाबासाहेब आंबेडकर ब्राह्मणवादी धर्म की प्रतिक्रियास्वरूप बौद्ध बन गये थे, और अंततोगत्वा उनके अनुयायी भी उसी ओर झुक गये। बाबा साहेब तो कार्ल मार्क्स की विचारधारा के विरुद्ध थे ही, भगतसिंह के बाद भी देश ऐसा भी कोई कम्युनिस्ट चिंतक अस्तित्व में नहीं आया जो दलितों को 'दलितवाद' से बचाकर उन्हें मार्क्सवादी-विचारधारा के साथ जोड़ पाता। आज दलित-समाज के सामने वही प्रश्न मुंह बाये खड़ा है कि बुद्ध और डॉ.भीमराव के द्वारा दर्शाए रास्ते को अपनाएं या कार्ल मार्क्स और भगतसिंह द्वारा दर्शाये मार्ग पर आगे बढ़ें।

(श्याम सुंदर, राष्ट्रीय संयोजक, 'शहीद भगत सिंह दिशा मंच' की पुस्तक 'शहीद भगतसिंह-लक्ष्य और विचारधारा' से साभार।)

अंतरिक्ष विज्ञान की बुनियाद रखने वाला वैज्ञानिक
कॉपरनिकस

ब्लैक डैथ हैजे से फैली महामारी थी जिसने यूरोप की आधी आबादी का सफाया कर दिया था. 14वीं शताब्दी के इस त्रासद दौर के बाद अगले तीन सौ बरस तक यूरोप ने अपना पुनर्निर्माण किया. ग्रीक और रोमन सभ्यताओं के ज्ञान को दोबारा से खोजा गया. कला और विज्ञान के प्रति लोगों में नई दिलचस्पी जागी और पढ़े-लिखे लोगों ने इस सिद्धांत का प्रचार-प्रसार किया कि आदमी के विचारों की क्षमता असीम है और एक जीवन में वह जितना चाहे उतना ज्ञान बटोर कर सभ्यता को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है. तीन सौ बरस का यह सुनहरा अंतराल रेनेसां यानी पुनर्जागरण कहलाया.

रेनेसां के मॉडल के तौर पर अक्सर पोलैंड के निकोलस कॉपरनिकस का नाम लिया जाता है. गणितज्ञ और खगोलशास्त्री कॉपरनिकस चर्च के कानूनों के ज्ञाता, चिकित्सक, अनुवादक, चित्रकार, गवर्नर, कूटनीतिज्ञ और अर्थशास्त्री भी थे. उनके पास वकालत में डॉक्टरेट की डिग्री थी और वह पोलिश, जर्मन, लैटिन, ग्रीक और इटैलियन भाषाओं के विद्वान थे. 19 फरवरी 1473 को तांबे का व्यापार करने वाले परिवार में जन्मे कॉपरनिकस चार भाई-बहनों में सबसे छोटे थे. दस साल के थे जब माता-पिता दोनों का देहांत हो गया. आगे की परवरिश मामा ने की.

मामा ने ही उन्हें क्राकाव यूनिवर्सिटी पढ़ने भेजा जहां उन्होंने गणित, ग्रीक और इस्लामी खगोलशास्त्र का अध्ययन किया. वहां से लौटने के बाद मामा ने आगे की पढ़ाई के लिए अपने काबिल भांजे को इटली भेजने का मन बनाया. यातायात के साधन दुर्लभ थे और दो महीनों की लम्बी पैदल यात्रा के बाद कॉपरनिकस किसी तरह इटली पहुंचे जहाँ अगले छः साल तक यूरोप के सबसे प्राचीन और सर्वश्रेष्ठ दो अलग-अलग विश्वविद्यालयों बोलोना और पाडुआ में उनकी पढ़ाई हुई. यहीं उन्होंने उन सारी चीजों पर सवाल करना शुरू किया जो उनके अध्यापक कक्षाओं में पढ़ाया करते रहे थे. ब्रह्माण्ड की संरचना के बारे में अरस्तू और टॉल्मी के सिद्धन्तों में उन्हें घनघोर विसंगतियां नजर आईं.

1503 में जब वे वापस घर लौटे उनकी उम्र तीस की हो चुकी थी. मामा प्रभावशाली आदमी थे और उनकी सिफारिश पर उन्हें स्थानीय चर्च में कैनन की नौकरी मिल गई. इस पेशे में उन्हें नक्शे बनाने के अलावा टैक्स इकठ्ठा करना और चर्च का बही-खातों को देखना होता था. आराम की नौकरी थी. 1510 में मामा सिधार गए.

कॉपरनिकस ने अपना अलग घर बनाया और अपने खगोलीय अध्ययन के वास्ते एक टावर बनवाई. उस समय तक टेलीस्कोप का अविष्कार नहीं हुआ था. लकड़ियों और धातु के पाइपों की मदद से वे नक्षत्रों की गति का अध्ययन किया करते. 1514 में उन्होंने एक वैज्ञानिक रपट लिख कर अपने दोस्तों को बांटी. भौतिकविज्ञान के इतिहास में इस रपट को अब 'द लिटल कमेंट्री' के नाम से जाना जाता जाता है. कॉपरनिकस ने दावा किया कि धरती सूरज के चारों ओर घूमती है न कि सूरज धरती के, जैसा कि धर्मशास्त्रों में लिखा था. इस सिद्धांत से अरस्तू और टॉल्मी के सिद्धान्तों की दिक्कतें दूर हो जाती थीं. इस शुरुआती काम के बाद अगले दो दशक गहन अध्ययन के थे.

1532 के आते-आते कॉपरनिकस अपने सिद्धांतों को एक पांडुलिपि का रूप दे चुके थे. इसका प्रकाशन उन्होंने जानबूझ कर रोके रखा क्योंकि उन्हें आशा थी वे कुछ और सामग्री जुटा सकेंगे. इसके अलावा उन्हें यह भय भी था कि पादरी लोग भगवान के नाम पर बड़ा बखेड़ा खड़ा करेंगे. कुछ सालों बाद जर्मनी से एक नामी गणितज्ञ जॉर्ज रेटीकस उनके साथ काम करने पोलैंड आए. कॉपरनिकस अड़सठ के हो चुके थे जब उनकी सहमति से संशोधित पांडुलिपि को लेकर जॉर्ज रेटीकस नूरेमबर्ग पहुंचे जहाँ योहान पेट्रीयस नाम के प्रिंटर ने उसे 'ऑन द रेवोल्यूशंस ऑफ द हेवनली स्फीयर्स' नामक क्रांतिकारी किताब की शक्ल दी.

किताब की शुरुआत में कॉपरनिकस एक

रेखाचित्र के माध्यम से ब्रह्माण्ड के आकार के बारे में बताया. इसमें सूर्य को केंद्र में रख उन्होंने उसके चारों तरफ अलग- अलग कक्षाओं में परिक्रमा करने वाले सभी ग्रहों को दिखाया गया था. जटिल गणनाओं के बाद उन्होंने यह भी बताया था कि इनमें से हर ग्रह को सूर्य का एक फेरा लगाने में कितना समय लगता है. आज के उन्नत खगोलविज्ञान और उसकी तकनीकों की मदद से जो ग्रहों की परिक्रमा का जो समय निकलता है, कॉपरनिकस की गणना आश्चर्यजनक रूप से उसके बहुत करीब है.

किताब छपकर नहीं आई थी और लम्बे समय से बीमार कॉपरनिकस कोमा में जा चुके थे. बताते हैं कि जब पहली प्रति उनके पास पहुंचाई गई वे बेहोशी से उठ बैठे और लम्बे समय तक आंखें मूंदे किताब को थामे रहे. कुछ दिनों बाद उनकी मौत हो गई. वे यह देखने को जीवित नहीं बचे कि कैसे उनकी महान क्रांतिकारी रचना ने पादरियों और धर्मगुरुओं के बनाए संसार को उसकी धुरी से रपटा दिया था.

जाहिर है कॉपरनिकस की किताब ने धर्म के कारोबारियों को बौखला दिया. चर्च का आधिकारिक बयान आया जिसमें किताब 'झूठा और पवित्र धर्मशास्त्र की खिलाफत करने वाल' बताया गया.

कोई 60 साल बाद इटली के ब्रूनो को सिर्फ इसलिए ज़िंदा जलाए जाने की सजा दी गयी कि उसने कॉरनिकस के सिद्धांत का प्रचार-प्रसार किया. इसी अपराध के लिए गैलीलियो को भी ज़िंदा तो नहीं जलाया गया अलबत्ता उसके समूचे जीवन को अपमान और तिरस्कार से भर दिया गया.

आज जब आदमी मंगल पर घर बनाने की कल्पना कर रहा है हमें कॉपरनिकस को याद रखना चाहिए, समूचे अन्तरिक्ष विज्ञान की बुनियाद में जिसकी चालीस-पचास सालों की साधना चिनी हुई है. कॉपरनिकस का जीवन बताता है कि सच्चाई की खोज कभी निष्फल नहीं जाती और उसकी रोशनी सदियों बाद तक आदमी के रास्ते को आलोकित करती रहती है.

1543 में कॉपरनिकस की बेशक मृत्यु हो ग ई मगर वे आज भी दुनिया भर की प्रयोगशालाओं में जीवित है.

(अशोक पांडे की वाल से)

दादागीरी

-डॉ. रणजीत

एक अपनी दादागीरी को कहता हैः स्वतन्त्रता
और दूसरा ः क्रांति
तीसरा नाम देता है उसे-
शांति और व्यवस्था का
तीनों भाषा को भ्रष्ट करते हैं
इन्सान के सुन्दरतम्
सपनों के हत्यारे हैं

-2-

अभी आदमी

बहुत दूर मंज़िल है, लम्बा सफर है
अपने ही अस्त्रों से मरने का डर है
अभी से न खुश हो मनुज की प्रबति पर
अभी आदमी बहुत जानवर है।

पाठकों के पत्र

तर्कशील पथ पत्रिका का कई वर्षो से मैं नियमित पाठक रहा हूँ, ये पत्रिका अपने उद्देश्य में कामयाब दिख रही है । इसमें प्रकाशित प्रत्येक लेख बेहद महत्वपूर्ण होने के साथ वैज्ञानिक समझ विकसित करने वाले भी है इसके लिये संपादक मण्डल का आभार ! पत्रिका के एक लेख में रूस को एक नास्तिक देश बताया गया है जो कि तथ्यात्मक रूप से सही नही है। कृपया सही जानकारी प्रकाशित किया करें। दूसरे 'अंधविश्वास के चलते' कॉलम में जो भी खबर प्रकाशित की जाती है उनका सन्दर्भ भी स्पष्ट होना चाहिये।

-सत्यमेव जयते
-9720004963

असहमत होना मानवीय विकास श्रृंखला की पहली सहमति है

-सलिल सरोज

कोई भी सत्य त्रुटि के मिश्रण के बिना नहीं है, और कोई भी त्रुटि इतनी असत्य नहीं है कि उसमें सत्य का कोई तत्व नहीं है। यदि कोई व्यक्ति किसी त्रुटि को छोड़ने के लिए बहुत जल्दी में है, तो वह इसके साथ कुछ सत्य को त्यागने के लिए उत्तरदायी है, और दूसरे व्यक्ति के तर्कों को स्वीकार करने में उसे इसमें कुछ त्रुटियां होना निश्चित है। ईमानदार तर्क केवल एक-दूसरे की आंखों से चुप सहमति को चुनने की प्रक्रिया है ताकि दोनों स्पष्ट रूप से देख सकें। गलत होने की संभावना के प्रति मनुष्य का सहज विरोध होता है। एक परिकल्पना के साथ, हम इसके चारों ओर वास्तविकता को झुकाते हैं, इसके विपरीत साक्ष्य के सामने भी अपनी राय से चिपके रहते हैं। बुद्धिमत्ता, पुष्टिकरण पूर्वाग्रह से कोई सुरक्षा नहीं है, न ही ज्ञान है। वास्तव में, चतुर और जानकार व्यक्तियों को इसके प्रति अधिक प्रवण दिखाया गया है, क्योंकि वे जो पहले से विश्वास करते हैं उसका समर्थन करने के लिए कारण खोजने में बेहतर हैं, और अपने स्वयं के गलत विचारों में अधिक आत्मविश्वास रखते हैं। पुष्टिकरण पूर्वाग्रह हमारी प्रजातियों के लिए एक बड़ी समस्या प्रतीत होगी क्योंकि इससे हमें दुनिया की प्रकृति के बारे में खुद को धोखा देने की अधिक संभावना होती है। यह हमें उन लोगों के झूठ के लिए गिरने की अधिक संभावना भी बनाता है जो हमें ऐसी बातें बताते हैं जिन पर हम पहले से ही विश्वास करने के लिए तैयार हैं। यदि कोई मानवीय तर्क के एक समस्यात्मक पहलू की पहचान करने का प्रयास करता है जो अन्य सभी के ऊपर ध्यान देने योग्य है, तो पुष्टिकरण पूर्वाग्रह विचार के लिए उम्मीदवारों के बीच होना चाहिए। यह एक कठिन प्रश्न खड़ा करता है। तर्क करने की क्षमता का मतलब मानवता की सर्वोच्च विशेषता है, वह विशेषता जो हमें अन्य जानवरों से अलग करती है।

मनुष्यों ने सामूहिक ज्ञान का एक विशाल भंडार जमा किया है, जबकि हम में से प्रत्येक अकेले आश्चर्यजनक रूप से बहुत कम जानता है, और अक्सर वह हमारी कल्पना से कम ही होता है। फिर भी हम में से प्रत्येक एक विशाल खुफिया नेटवर्क से जुड़ा हुआ है, जिसमें मृत और जीवित दोनों शामिल हैं। आपका स्थानीय नेटवर्क जितना अधिक खुला और तरल होगा, आप उतने ही अधिक स्मार्ट हो सकते हैं। इसके अलावा, खुली असहमति उन मुख्य तरीकों में से एक है जो हमारे पास अन्य लोगों की विशेषज्ञता पर छापा मारने के लिए है। दृढ़ विश्वास का पीछा करना, भले ही वह गलत हो, समूह स्तर पर उत्पादक हो सकता है। यह एक सुंदर विरोधाभास हैः एक समूह के लिए तर्कसंगत निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए, कम से कम उसके कुछ व्यक्तिगत सदस्यों को थोड़ा तर्कहीन रूप से बहस करनी चाहिए। जब हर कोई तर्क उत्पन्न करने और प्रतिस्पर्धी तर्कों को खारिज करने के लिए मजबूर महसूस करता है, तो सबसे कमजोर तर्क खारिज हो जाते हैं जबकि सबसे मजबूत तर्क जीवित रहते हैं, अधिक सबूत और बेहतर कारणों से मजबूत होते हैं। परिणाम किसी एक व्यक्ति द्वारा अकेले किए जाने की तुलना में तर्क करने की एक गहरी और अधिक कठोर प्रक्रिया है। भावना इस प्रक्रिया में बाधा नहीं डालती है। यह इसे विद्युतीकृत करता है। खुले और पूरे दिल से तर्क एक समूह की सामूहिक बुद्धि को बढ़ा सकते हैं।

'दुनिया को लम्बे समय तक मूर्ख नहीं बना सकते। लेकिन धर्म एक ऐसा क्षेत्र है, जहां लोग पीढ़ी दर पीढ़ी मूर्ख बनते हैं।'

-अब्राहम लिंकन,

(पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति)

राजनीति में बढ़ता अपराधीकरण

-आर.पी.गांधी

मैंने अपने जीवन मे ंलोगों की वह दीवानगी देखी है कि किस तरह से युवक बुजुर्गों की अगुवाई में राजनीति में घुसते थे। स्वतंत्रता संग्राम में अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने की एक ललक हुआ करती थी उनमें भूख, प्यास की परवाह न करते हुए जनता में जागृति पैदा करने के लए लम्बी पद-यात्राएं करने की सामर्थ्य होती थी। ये यात्राएं अधिकतर पैदल या साईकिल द्वारा होती थीं। कीमती पोशाकें छोड खादी का कुर्ता पायजामा पहनना पहचान होती थी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की। डंडे लाठियों की परवाह न करते हुए अपने मकसद के लिए आगे बढ़ना नेताओं की बात को मानते हुए जेलें भरना, विदेशी कपडों का बहिष्कार। महात्मा गांधी की अगुवाई में चरखे पर सूत कातना, अपने ही काते हुए सूत से बने कपडे पहनना ये नौजवानों में एक बहुत बडी लग्न देखने को मिलती थी। राम प्रसाद बिसमिल जैसे लोग जिनका नाम काकोरी कांड से भी जुड़ा है, असफ़ाक उल्ला के साथ जुडकर सरकारी खजाना लूटना ताकि हथियार खरीदे जा सके। जवानी की उम्र में ही फांसी के फंदे पर झूल गए । राम प्रसाद बिसमिल का प्रसिद्ध गीत :

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।

यह गीत जब युवाओं के लूबों पर गूंजता है तो कुर्बानी के जज्बे से जिन्दगी में जोश भर जाता है। अदालत के अन्दर भी भगत सिंह के नारे 'इन्कलाब जिन्दाबाद' से वातावरण गूंज उठता था। पेशी के लिए पुलिस जब राजगुरू, सुखदेव एवं भगत सिंह को ले जाती थी तो तीनों के कंठ से एक ही आवाज पूरे जोश के साथ वातावरण में फैल जाती। साम्राज्यवाद, मुर्दाबाद और इन्कलाव जिन्दाबाद । जब साईमन कमीशन भारत आया तो पूरे देश में कमीशन को काले झण्डे दिखाए गए और नारे लगते थे साईमन कमीशन वापिस जाओ। इसी दौरान लाला लाजपत राय पुलिस की लाठियों के शिकार हुए और इन चोटों को सहन न करते हुए मौत को प्राप्त हुए।

13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग अमृतसर में जनता शांतिपूर्वक रोष दिवस मना रही थी जिसका नेतृत्व डा. किचलू कर रहे थे। उस बाग में अन्दर आने और बाहर जाने का केवल एक ही रास्ता था। जनरल डायर ने उसी रास्ते में खड़े होकर निहत्थे और निर्दोष लोगों पर गोली चलाने का आदेश दिया जिससे अनेक लोग मारे गए इस अवसर पर ऊधम सिंह एक पेड़ पर चढ़ा हुआ था जब गोली कांड खत्म हुआ तो नीचे उतरा वहां पर एक महिला अपने पति की लाश के पास बैठी विलाप कर रही थी। ऊधम सिंह ने उस महिला को अपनी धर्म बहन बनाया और लाश को वहां से ले जाने में सहायता की। साथ ही इस बात की कसम खाई कि मैं इस कांड का बदला लेकर रहूँगा। इसी कसम को पूरी करने के लिए वह एक लम्बे समय तक उचित अवसर की तलाश करता रहा और अंत में 1940 में अपने मकसद में कामयाब हुआ। इसी जनरल डायर की हत्या के कारण उनको 31 जुलई 1940 में फांसी दे दी गई और ऊधम सिंह अब शहीद उद्यम सिंह बन चुके थे। ऐसे कितने ही शहीद हुए है जिनके नाम इतिहास की पुस्तकों मे ंभी नहीं मिलते और उन्होनें अपनी जिन्दगियां देश के लिए कुर्बान कर दी। हॉ, कुछ नाम स्मारक स्तम्भों पर पढ़ने को मिल जाते हैं परन्तु शहीदों की संख्या इससे भी कहीं अधिक है। ऐसे ही गुमनाम शहीदों के नाम पर एक स्मारक लखनऊ में रैजीडेंसी के पास गोमती नदी के किनारे बना हुआ है जहां पर पानी का एक ऊँचा फव्वारा भी बना हुआ है।

मोहनदास कर्मचन्द गांधी जिनको राष्ट्रपिता के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है दक्षिणी अफ्रीका में वकालत के लिए गए थे जहां इनके साथ एक दुर्घटना हुई। एक रेलगाड़ी में प्रथम श्रेणी का टिकट लेकर यात्रा कर रहे थे। उस डिब्बे में दो अंग्रेज आ घुसे। वे दोनों रंग भेद में विश्वास रखते

थे उन्हें एक काले व्यक्ति का प्रथम श्रेणी में सफर करना पसंद नहीं आया। उन गोरों ने गांधी जी को डिब्बा छोड़ने को कहा। गांधी जी ने जवाब में प्रथम श्रेणी का टिकट दिखाया और सीट छोड़ने से इन्कार कर दिया। इस पर उन दो अंग्रेजों ने उसके साथ जबरदस्ती थी। पहले उसका सामान बाहर फैंका और फिर गांधी जी को भी उठाकर बाहर फैंक दिया इससे गांधी जी के स्वाभिमान को गहरा आघात लगा। तब गांधी जी ने दक्षिणी अफ्रीका में रह रहे भारतीयें को इकटठा किया और रंग नसल भेद के विरूद्ध संघर्ष किया जिसमें उन्हें सफलता मिली। जब गांधी जी वापिस भारत आए तो कांग्रेस के नेताओं ने गांधी जी से नेतृत्व करने की अपील की लेकिन गांधी जी ने साफ इन्कार कर दिया उन्होंनें कहा कि मैं भारत के हालात से अनजान हूँ उसके बाद भारत के लोगों के बारे में जानकारी लेने के लिए वे गांव गांव में गए। मजदूरों किसानों की दुर्दशा देखकर गांधी जी ने अपना सूट उतार दिया और अर्ध-नग्न अवस्था में रहना शुरू कर दिया। जो लंगोटी पहनते थे वह भी हाथ से कते हुए सूत की होती थी। वे इसी अवस्था में प्रयत्नशील रहे। उनकी जीवन की आवश्यक वस्तुंए सीमित थी। सत्याग्रह के पथ पर चलते हुए अनेक यातनाएं सही और अनेक बार जेल भी जाना पड़ा। गांधी जी के निकट सबसे अधिक पं. नेहरू और सरदार पटेल थे। इन्होंने भी स्वतंत्रता के संग्राम में बहुत बड़ा योगदान दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पं. नेहरू पहले प्रधान मंत्री बने और सरदार पटेल गृह मंत्री बने। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी लगभग 525 रियासते थी जिनको सश्रद्वार पटेल ने अपनी सूझ बूझ से भारत में मिला लिया। हैदराबाद के नवाब ने भारत के साथ विलय से इन्कार कर दिया था जिस पर सैनिक कारवाई करनी पड़े और उसके बाद विलय हो पाया। प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद एक आदर्श राजनीतिज्ञ थे लोकमान्य तिलक का यह विचार था कि स्वतंत्रता छीनी जाती है मांगी नहीं जाती। बीबी अमृत कौर स्वास्थ्य मंत्री जैसे अनेक लोग थे जो राजनीति के आदर्श थे।

आज के राजनेताओं की दौड़ सत्ता और कुर्सी तक सीमित है। वे आए दिन अपने विचार और ईमान बदलते रहते हैं। मजे की बात यह है कि जब एक नेता एक पार्टी को छोड दूसरी पार्टी में घुसता है तो उसको एम.पी अथवा एम.एल.ए का टिकट थमा दिया जाता है। यह आज की राजनीति की गिरावट का ही परिणाम है। नेता लोग एम.पी. अथवा एम.एल.ए बनकर पार्टी बदल लेते हैं जो उस जनता से सरासर धोखा होता है जिन्होंने उन्हें अमुक पार्टी से चुना होता है। भजनलाल इसका ठोस उदाहरण है जो अपनी पूरी मंत्री मण्डल व पार्टी को लेकर कांग्रेस पार्टी में चले गए थे। इस तरह का दलबदल जहां जनता की भावनाओं से खिलवाड़ होता है वहीं नैतिक पतन भी प्रकट करता है। इस तरह से नेता लोग भले ही अपना स्वार्थ सिध्द कर लें मगर यह राजनीति के पतन को दिखाता है। कई बार कुछ अल्पमत सरकारें अपना बहुमत सिद्व करने के लिए एम.पी अथवा एम.एल.ए. का क्रय विक्रय करती हैं। बिकने वाले नेता अपनी कीमत लगाते है और चन्द सिक्कों के बदले अपना ईमान व देश हित बेच डालते है जब कि नैतिकता त्याग और बलिदान की बात करती है।

ऐसा भी नहीं कि राजनीति में नैतिकता का बिल्कुल विनाश हो गया है। रफी अहमद किदवई जिस विभाग में मंत्री रहे बहुत ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाया। लाल बहादुर शास्त्री जिनका नारा था 'जय जवान, जय किसान' उनके प्रधानमंत्री होते हुए पाकिस्तान के साथ युद्ध जीता गया रूस से सम्बन्ध अच्छे थे। पाकिस्तान के साथ समझौते के लिए उनको ताशकन्द बुलाया गया। वहीं उनकी मृत्यु हो गई। उनके मरने के पश्चात उनके पास न कोई बैंक बैलेंस था और न ही कोई बड़ी जायदाद। आज भी उनका नाम ईमानदार राजनेताओं में नाम लिया जाता है। सुभाष चन्द्र बोस हमारे देश की एक मशहूर हस्ती का नाम है जिसने भारत से बाहर जाकर जापानी जेलों में पडे भारतीय सैनिकों को आई.एन.ए में भर्ती किया। उसमें कैप्टन लक्ष्मी सहगल का भी एक नाम है। वह एक अच्छी डाक्टर थी। सुभाष चन्द्र बोस ने अपने सिपाहियों से यह बात कही थी- तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा। उसने मणिपुर तक अपनी फौज द्वारा कब्जा भी किया। प्रचलित मत अनुसार एक हवाई दुर्घटना

में उनकी मृत्यु हो गई। वे अपने पीछे कोई सम्पत्ति न छोड़ गए। यही उनकी महानता और त्याग का प्रमाण था।

1975 में भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी द्वारा आपातकाल घोषित कर दिया गया। विपक्ष की राजनीतिक पार्टियों के बडे बडे नेता जेल में डाल दिए गए। उस दौरान श्री जय प्रकाश नारायण जिन्हे कायदे इनकलाब भी कहा गया देश की सभी राजनीतिक पार्टियां को इकटठा करके कांग्रेस के विरूद्ध जनता पार्टी को जन्म दिया। इस पार्टी ने 1977 के लोक सभा चुनाव में कांग्रेस को बुरी तरह परास्त किया यहां तक कि स्वयं इन्दिरा गांधी अपनी प्रतिद्वंदी राज नारायण से हार गई। राज नारायण राम मनोहर लोहिया का अनुयायी था। राम मनोहर लोहिया उन दिनों समाजवादी पार्टी का संचालन कर रहे थे । ये नेता बेईमानी रहित, ईमानदार राजनीति के द्योतक थे। कांग्रेस के हारने के बाद जनता पार्टी सरकार में श्री मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने। इनकी भी राजनीति में एक स्वच्छ छवि रही है। इन्होने अनैतिक साधन अपनाने की बजाय प्रधानमंत्री पद से त्याग पत्र देना बेहतर समझा। इसके पश्चात चौ. चरण सिंह प्रधानमंत्री बने। यह वह दौर था जब राजनीति में अनैतिकता ने प्रवेश कर लिया था। पद की लोलुपता ने जनता पार्टी को टुकड़ो में विभाजित कर दिया और इस प्रकार एक संगठित पार्टी टुकडों में बिखर गई।

जनसंघ नाम की पार्टी ने अपना नाम बदल कर भारतीय जनता पार्टी रख लिया। शरद यादव ने अपने गुट का नाम जनता दल यूँ रखा। लालू प्रसाद यादव ने राष्ट्रीय जनता दल नाम से अलग पार्टी बना ली। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रीय पार्टियों का उदय हुआ। क्षेत्रीय पाटियों के अस्तित्व में आने पर राष्ट्रीय पार्टियों की शक्ति कम हुई। परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस को सरकार चलाने के लिए दूसरी सहयोगी पार्टियों का साथ लेकर यू.पी.ए. और यू.पी.ए.-2 सरकारें चलाई। इसी प्रकार 2004 से पूर्व भारतीय जनता पार्टी ने दूसरी क्षेत्रीय पार्टियों के साथ मिलकर एन.डी.ए. सरकार चलाई। हैरानी की बात तो यह है कि कुछ पार्टियां ऐसी रही जो एन.डी.ए सरकार में भी भागीदार रही और फिर यू.पी.ए. सरकार में भी भागीदार रही। यह सब नैतिक मूल्यों को ताक पर रख कर किया गया सौदा था। इससे राजनीति को बहुत बडी हानि हुई राजनेताओं की विश्वसनीयता का ह्रास हुआ। राजनीति को व्यापार और धोखा समझे जाने लगा। सामान्य लोगों की नजरों में राजनेताओं की छवि बदनाम हुई।उन्हें ठग, डाकू और अपराधी समझा जाने लगा। इस प्रकार राजनीति और राजनेता बदनाम होकर रह गए।

आज की राजनीति में घोटालों का बहुत बोलबाला है जैसे चारा घोटाला, 2-जी घोटाला, कोयला घोटाला, कामन वैल्थ गेमज घोटाला, हैलीकाप्टर घोटाला, जमीन घोटाला, कफन घोटाला आदि। इन सभी घोटालों में अधिकतर राजनेताओं के नाम शामिल है। कुछ राजनेता तो इसी सिलसिले में जेल की हवा भी खा चुके हैं और खा रहे हैं। ये सारी बातें इस बात का प्रमाण है कि राजनीति में कितनी गिरावट आ गई है । हद तो तब हो गई जब राखी सामन्त जैसी आईटम गर्ल ने भी अपनी एक राजनीतिक पार्टी बना ली और लोकसभा के चुनाव में मुकाबले के लिए कूद पड़ी। जो व्यक्ति पहले ही समाज में अश्लीलता बांटता हो ।......... . ऐसे दोहरे चरित्र वाले लोगों के लिए शेअर है :

वह राहबर भी है राहजन भी है,
फकत पिरहान बदला हुआ है।

एक जमाना वो भी था जब शहीदे आजम भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह का मशहूर गीत 'पगडी संभाल जट्टां' लोगों की जबान पर होता था। इस गीत में किसानों को सम्बोधित किया गया है कि अपने स्वाभिमान की रक्षा करो। यहां तक कि भगत सिंह की कुर्बानी में घोडियां गाई जाती थी जैसे : **मौत कुडी नूँ व्यावण चलिया, भगत सिंह बन के लाहड़ा।**

लोगों की बढती हुई इच्छाएं नित नई राजनीतिक पार्टियों को जन्म दे रही है। जब कोई राजनेता अपनी पार्टी में सम्मान जनक स्थान नहीं बना पाता या अपनी इच्छाओं के अनुसार उसको उँचा पद नहीं मिलता या किसी अपराध के कारण उसको पार्टी से निष्कासित किया गया हो तो वह कुछ खुशामदी लोगों को साथ लेकर और धन के बल पर एक नई पार्टी को जन्म देता है। इन दिनों

हरियाणा में दो नई पार्टियां को उदय हुआ है। ये है हरियाणा लोकहित पार्टी और 'राष्ट्रीय लोक स्वराज पार्टी' । इनमें पहली पार्टी के संस्थापक श्री गोपाल कांडा हरियाणा सरकार में मंत्री रह चुके हैं और गीतिका ार्मा आत्महत्या मामले में आरोपी है। इसी आरोप के चलते जेल की हवा भी खा चुके हैं और केस चल रहा है। ऐसे लोगों द्वारा पार्टी की स्थापना करना राजनीति का घोर अपमान है। ऐसे लोग ही राजनीति को गंदा किए हुए है। दूसरी पार्टी के संस्थापक श्री रणबीर शर्मा पुलिस विभाग में एक ऊँचे पद पर अधिकारी रहे है। सत्ता की भूख ने उनको राजनीति की और आकर्षित किया। स्वैच्छिक सेवा निवृति लेकर पहले 'आम आदमी पार्टी में शामिल हुए। लोक सभा का टिकट न मिलने पर तीन मास के अन्दर ही पार्टी छोड दी और कुरूक्षेत्र लोकसभा क्षेत्र से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा। चुनाव परिणाम की प्रतीक्षा किए बिना ही एक नई पार्टी का गठन कर दिया। ये सब घटनाएं संकेत देती है कि ऐसे लोग निजी महत्वकांक्षां के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। राजनीति को निजी महत्वकांक्षाएं पूरी करने का एक साधन मानते है। ऐसे लोगों का वास्तव में देशहित और जनहित से कोई लेना देना नहीं होता। इन्हें तो अपार सम्पत्ति और सत्ता शक्ति चाहिए जिसके बलबूते पर ये जनता में अपनी धाक जमा सके ऐसे ही लोग राजनीति को एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करते हैं और अपनी निजी महत्वकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भ्रष्ट तरीकों का प्रयोग करने से भी बाज नहीं आते। ऐसे लोग ही राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण के लिए दोषी है। ऐसे लोग की पहचान किया जाना अति आवश्यक है।

इस समय देश में राजनीतक पार्टियों की बाढ़ सी आ गई है नित नई पार्टियां बन रही हैं। इनमें कुछ तो थोडे अन्तराल के बाद ही दम तोड़ देती है। अनेक राजनीतिक पार्टियों के बनने से राष्ट्रीय एकता को नुकसान पहुंचता है। लोग अनेक वर्गो में बंट जाते है। राष्ट्रीय स्तर के मुद्दों की ओर लोगों का ध्यान कम जाता है। स्थानीय पार्टियां स्थानीय मुददों को ही महत्व देती है जिससे रा ट्रीय मुददे गौण होकर रह जाते है। इस प्रकार राजनीतिक पार्टियों का अधिक संख्या में होना रा ट्रीय एकता और राष्ट्रहित में नहीं है।

राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण को रोकने के लिए हमें कुछ ठोस कदम उठाने होगें। राजनीति में भाग लेने वाले लोगों के लिए विशेष आचार संहिता और नियम बनाने होगें ताकि उनके क्रिया कलापों पर कडी नजर रखी जा सके। उनके स्वयं और निकट के सगे सम्बन्धियों को सम्पत्ति का ब्यौरा देना अनिवार्य किया जाए। किसी भी तरह की अनियमितता पाए जाने पर कठोर दंड का प्रावधान होना चाहिए और किसी भी प्रकार की अनियमतता सिद्व होने पर सम्पत्ति जब्त होने का प्रावधान हो। साथ में पद से भी हटाया जाना चाहिए और भवि य के लिए भी प्रतिबंध होना चाहिए। राजनेताओं को उचित नैतिक मार्गदर्शन देकर और भ्रष्ट व अपराधी राजनेताओं को कठोर दंड देकर ही राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण पर अंकुश लगाया जा एकता है।

लघुकथा–

हद

–श्याम सुन्दर 'दीप्ति'

''एक अदालत में मुकदमा पेश हुआ ।

'साहब, यह पाकिस्तानी है । हमारे देश में हद पार करता हुआ पकड़ा गया है ।'

'तू इस बारे में कुछ कहना चाहता है ?' मजिस्ट्रेट ने पूछा ।

'मैंने क्या कहना है सरकार । मै खेतों में पानी लगाकर बैठा था । 'हीर' के सुरीले बोल मेरे कानों में पड़े। मै उन्हीं बोलों को सुनता चला आया, मुझे तो कोई हद नजर नहीं आई ।''

(अशोक भाटिया, लघुकथाकार के सौजन्य से)

विज्ञान के टॉपर बच्चे भी वैज्ञानिक सोच से कोसों दूर हैं

पिछले साल की बात है, एक मित्र के घर बारहवीं क्लास में टॉप किये एक बच्चे से बात हो रही थी। वह अपने कुत्ते के साथ खेल रहा था, अचानक उसका पैर एक किताब पर लगा और उसने तत्काल अपने कान पकड़े और किताब को प्रणाम किया। इसी बीच खेलते हुए उसका पैर कुत्ते को भी लगा। उसने फिर कुत्ते के प्रति भी क्षमा व्यक्त की। मैंने पूछा कि ऐसा क्यों किया? तो उसने कहा कि यह कुत्ता नहीं भैरूजी महाराज हैं। मैंने एक टीवी सीरियल में देखा था, एक देवता की तस्वीर में भी मैंने कुत्ते देखे हैं।

मैंने उसकी किताब को गौर से देखा उसकी किताब पर नेम चिट में हवा में उड़ने वाले एक देवता की तस्वीर के बगल से उसका नाम लिखा हुआ था। मैंने पूछा यह किस तरह का जीव है? उसने कहा यह जीव नहीं भगवान् हैं जो हवा में उड़ सकते हैं।

मैंने इस बात को इग्नोर करके उससे गुरुत्वाकर्षण के बारे में पूछा। उसने गुरुत्वाकर्षण का पूरा नियम एक सांस में सुना दिया। फिर मैंने उससे पलायन वेग 'एस्केप वैलोसिटी' और प्लेनेटरी मोशन पर कुछ पूछा। उसने तुरंत दूसरी सांस में इनसे सम्बंधित सिद्धांत सुना दिए। यह सुनाते हुए वह बहुत प्रसन्न था।

मैंने फिर पूछा कि एक रॉकेट को उड़ने और जमीन के गुरुत्व क्षेत्र से बाहर जाने में कितना समय और ऊर्जा लगती है? क्या यह ऊर्जा एक इंसान या जानवर में हो सकती है? उसने कहा ''नहीं, इतनी ऊर्जा एक बड़ी मशीन में ही हो सकती है जैसे कि हवाई जहाज या रॉकेट।''

मैंने उससे फिर पूछा कि ये उड़ने वाले देवता कैसे उड़ते होंगे? उसे यह प्रश्न सुनकर बिलकुल आश्चर्य नहीं हुआ। उसने बड़ी सहजता से उत्तर दिया कि वे भगवान हैं और भगवान कुछ भी कर सकते हैं।

आखिर में मैंने पूछा कि क्या भगवान प्रकृति के नियम से भी बड़ा होता है? उसने कहा ''मुझे यह सब नहीं पता लेकिन भगवान जो चाहें वह कर सकते हैं।''

अभी देश भर में परीक्षा में टॉप कर रहे बच्चों की खबरें आ रही हैं और हर शहर में जश्न हो रहा है। जिन बच्चों ने टॉप किया है निश्चित ही वे बधाई के पात्र हैं। उन्होंने वास्तव में कड़ी मेहनत की है और जैसी भी शिक्षा उन्हें दी गयी उसमें वे ज्यादा अंक लाकर सफल हुए।

लेकिन इन बच्चों की सफलता का वास्तविक मूल्य क्या है? क्या ये वास्तव में अच्छे इंसान और अच्छे नागरिक बन पाते हैं? क्या इनकी शिक्षा जो अधिकाँश मामलों में विज्ञान विषयों के साथ होती है इन्हें वैज्ञानिक विचार और सोचने-समझने की ताकत देती है?

ये टॉपर बच्चे अक्सर ही रट्टू तोते होते हैं जिन्हें मौलिक चिंतन और विचार नहीं बल्कि विश्वास सिखाये जाते हैं। ये पश्चिमी बॉसेस के लिए अच्छे बाबू, टैक्नीशियन और मैनेजर साबित होते हैं। ये खुद कुछ मौलिक नहीं कर पाते।

परीक्षा परिणामों का यह जश्न मैं 20 सालों से देख रहा हूँ और दावे से कह सकता हूँ कि इन टॉपर्स में से अधिकांश बच्चों को IIT, JEE, AIIMS इत्यादि की स्पेशल कोचिंग वाले भयानक दबाव वाले रट्टू और प्रतियोगी वातावरण में तैयार किया जाता है।

ये बच्चे किसी खास परीक्षा में पास होने के लिए तैयार किये जाते हैं। इनमें ज्ञान के प्रति, सीखने और समझने के प्रति कितना लगाव है, यह एक अन्य तथ्य है, जिसका कोई सीधा सम्बंध इन बच्चों की उपलब्धियों से नहीं है। ऐसे अधिकांश बच्चे धर्मभीरु, विचार की क्षमता से हीन, आलोचनात्मक चिंतन से अनजान और समाज, सँस्कृति और प्रकृति के ज्ञान से शून्य होते हैं।

अधिकतर इन्हें प्रतियोगिता परीक्षाओं की स्पेशल कोचिंग में उच्चतर विज्ञान और गणित

इत्यादि घोट-घोटकर पिलाये जाते हैं और घर लौटते ही इन्हें मिथकीय शास्त्रों, महाकाव्यों, आसमानी बातों, तोता-मैना की कहानियां पिलाई जाती हैं।

ये न केवल मिथकों, महाकाव्यों, आसमानी बातों में श्रद्धा रखते हैं बल्कि स्कूल कॉलेज या परीक्षा के लिए जाते समय प्रसाद चढ़ाकर, नमाज पढ़ाकर या मन्नत मांगकर भी जाते हैं। ये बच्चे एक तरफ ग्रेविटी, एस्केप वैलोसिटी इत्यादि रटते हैं और दूसरी तरफ आसमान में पहाड़ लेकर उड़ जाने वाले देवताओं की पूजा भी करते हैं।

ये एक भयानक किस्म का सामूहिक स्कीजोफेनिया है जिसमें एक ही तथ्य के प्रति कई विरोधाभासी जानकारियाँ और अंधविश्वास लेकर बच्चे जी रहे हैं। वे ज्ञान के किसी भी आयाम में कुछ मौलिक नहीं खोज पाते। वे सिर्फ पहले से ही खोज ली गयी चीजों के अच्छे प्रबंधक या तकनीशियन या बाबू हो सकते हैं लेकिन विज्ञान, कला, साहित्य, दर्शन इत्यादि में कुछ नया नहीं दे पाते हैं।

इन बच्चों का एक ही लक्ष्य होता है कि किसी तरह से कोई परीक्षा पास करके जीवन भर के लिए कोई बड़ी डिग्री हासिल कर ली जाए और एक बड़ी कमाई तय कर ली जाए। इसके आगे-पीछे जो कुछ है उससे उन्हें कोई मतलब नहीं होता। अधिकाँश बच्चों में आरंभ में इस तरह की जिज्ञासा होती है लेकिन हमारी शिक्षा व्यवस्था, हमारे परिवारों के अंधविश्वास पूजा-पाठ, दुआ-मन्नतें और कर्मकांड इन जिज्ञासाओं को मार डालते हैं।

आप कल्पना कीजिये जिस परिवार में पहाड़ लेकर उड़ जाने वाले देवता की पूजा होती है उस घर का कोई बच्चा गुरुत्वाकर्षण के वर्तमान सिद्धांत में कोई कमी निकालकर उसे कभी चुनौती दे सकेगा? जो बच्चा मन्त्र की शक्ति से विराट रूप धर लिए किसी अवतार की पूजा करता आया है क्या वह जैनेटिक्स या जीव विज्ञान के स्थापित सिद्धांतों में कमियाँ खोजकर कुछ नया और मौलिक विचार प्रस्तुत सकता है?

निश्चित ही ऐसे बच्चे इस दिशा में अधिक सफल नहीं हो सकते। यह संभव भी नहीं है। जो मन आलोचनात्मक चिंतन कर सकता है वह परीलोक की कहानी को जीवन भर सहेजकर उसकी पूजा नहीं कर सकता। ये दो विपरीत बातें हैं।

इसीलिये भारत के करोड़ों-करोड़ बच्चे, जो किसी न किसी परीक्षा में पास होकर या टॉप करके निकलते रहे हैं उन्होंने ही मिलकर उस भारत को बनाया है जिसमें मंत्री नेता और अधिकारी लोग बारिश लाने के लिए हवन कर रहे हैं।

उन्ही बच्चों ने यह भारत बनाया है जिसमें आज सीमाओं की रक्षा के लिए राष्ट्र रक्षा महायज्ञ हो रहा है और डिफेंस की टैक्नोलॉजी फ्रांस और इजराइल से खरीदी जा रही है। उन्हीं बच्चों के बावजूद आज वह निष्कर्ष सामने है जिसमें गाय के नाम पर या लव जिहाद के नाम पर सरेआम लिंचिंग हो रही है या धर्म के नाम पर ईराक, ईरान से लेकर पाकिस्तान, अफगानिस्तान तक उत्पात मचाये हुए हैं।

-फेस बुक से प्राप्त पोस्ट

पृष्ठ 12 का शेष

कितने उचित हैं?

जब तक परख-पड़ाव पूर्ण नहीं हो जाते इनके उत्तर मिलना मुश्किल है। अभी तक हमें पता नहीं कि यह कितना असर करेगी तथा इसका असर कितने समय तक रहेगा। यहां तक कि इससे होने वाले अधिकतर प्रभाव भी पूरी तरह से ज्ञात नहीं हैं, जो कि चौथे पड़ाव के बाद में पता चलता है। एक बात जो कि जोर-शोर के साथ प्रचलित की जा रही है कि इनके इस्तेमाल के पश्चात् यदि कोरोना हो जाता है तो लक्षण बहुत कम होने तथा घातक परिणाम (मृत्यु) नहीं होंगे। जबकि हमारे पास इसका भी कोई आंकड़ा नहीं है। हम कह सकते हैं कि सभी टीकाकरण वाले भागीदार परख पड़ाव के वालंटियर ही हैं। एक बड़ा सवाल, जो हमेशा वैक्सीन के संदर्भ में चिकित्सा विज्ञान खासतौर पर जन-स्वास्थ्य वाले समझते एवं समझाते रहे हैं कि वैक्सीन क्या यह शर्तपूर्ण करती है कि वैक्सीन के बगैर जो स्थिति उत्पन्न हुई है, इसके पॉजिटिव केस, अस्पताल में दाखिल केस तथा मौतें इत्यादि तथा दूसरी ओर वैक्सीन लगवा कर यदि कोरोना फैलता है तो क्या कोई बड़ जिक्रयोग्य अन्तर पड़ेगा। कई माहिरों द्वारा यह संदेह दर्शाया जा रहा है कि नहीं, इस प्रकार का कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ने वाला। इसलिए कहीं न कहीं राजनीतिक हितों के पोषण की ओर भी ऊंगली उठती हैं।

(हिंदी अनुवाद - बलवन्त सिंह लेक्चरार)

आस्था से नहीं, विज्ञान से देश बढ़ेगा आगे

आज यदि भारत के लोगों को कोई आत्मा, परमात्मा, चमत्कार, भूत, प्रेत के अस्तित्व के बारे में कोई कह रहा हो, तो जल्दी से उनके दिमाग मे उतरने लगता है। लेकिन इसके विपरीत कोई कुछ कह रहा है, तो उल्टा उसे पागल करार कर दिया जाता है ।

इस मुल्क ने ध्यान समाधि आत्मा और मोक्ष पर सबसे ज्यादा साहित्य रचा है। सबसे ज्यादा गुरु, शिष्य, बाबा, योगी, सन्यासी, भक्त और भगवान पैदा किये। अगर ये सारे लोग पांच प्रतिशत भी सफल रहते तो भारत सबसे अमीर वैज्ञानिक लोकतांत्रिक और समतामूलक समाज का धनी होता। क्योंकि ध्यान के जो फायदे गिनाये जाते हैं, उसके अनुसार आदमी सृजनात्मक करुणावान तटस्थ और सदाचारी भेदभाव, छुआछुत, अन्धविश्वास, पाखण्ड, भाग्यवाद और गन्दगी देखकर आपको लगता है पिछले तीन हजार सालों में इसके अध्यात्म ने इसे कुछ भी क्रियेटिव करने दिया है?

पिछले बाइस सौ साल से ये मुल्क किसी न किसी अर्थ में किसी न किसी बाहरी कौम का गुलाम रहा है। मुट्ठी भर आक्रमणकारियों ने करोड़ों के इस देश को कैसे गुलाम बनाया, ये एक चमत्कार है। ऐसे हजारों अध्याय इस देश में छुपे हैं। इसीलिये इस मुल्क ने अपना वास्तविक इतिहास कभी नही लिखा बल्कि वह लिखा जिससे मूर्खताओं के सबूत मिटते रहे। गौरवशाली इतिहास की कल्पनाओं को गढ़कर गर्व करते हैं पर वह लुटा क्यों उसकी जिम्मेदारी कभी नहीं लेते।

ये सब देखकर दोबारा सोचिये भारत के परलोकवादी अध्यात्म आत्मा परमात्मा और ध्यान ने इस देश के लोगों को क्या दिया है। इन्होंने अलग किस्म के आविष्कार किये, ऊपर वाला खुश कैसे होता है? ऊपर वाला नाराज क्यों होता है? स्वर्ग में कैसे जायें? नरक से कैसे बचें? स्वर्ग में क्या-क्या मिलेगा? नरक में क्या-क्या सजा है? हलाल क्या है, हराम क्या है? बुरे ग्रहों को कैसे टालें? मुरादें कैसे पूरी होती है? पाप कैसे धुलते हैं? पित्तरों की तृप्त कैसे करें ?

ऊपरवाला किस्मत लिखता है..वो सब देखता है.. वो हमारे पाप-पुण्य का हिसाब लिखता है.. जीवन-मरण उसके हाथ में है.. उसकी मर्जी बगैर पत्ता नहीं हिलता.. ऊपरवाला खाने को देता है.. वो तारीफ का भूखा है.. वो पैसे लेकर काम करता है.

मंत्रों द्वारा संकट निवारण.. हजारों किस्म के शुभ-अशुभ.. हजारों किस्म के शगुन-अपशगुन.. धागे-ताबीज.. भूत-प्रेत.. पुनर्जन्म.. टोने-टोटके.. राहु-केतु.. शनि ग्रह.. ज्योतिष.. वास्तु-शास्त्र...पंचक. मोक्ष.. हस्तरेखा..मस्तक रेखा..वशीकरण.. जन्मकुंडली. .काला जादू.. तंत्र-मन्त्र-यंत्र.. झाड़फूंक.. वगैरह.. वगैरह..इस किस्म के इनके हजारों अविष्कार हैं।

अब यूरोप को देखीये वहां धर्म की परमात्मा की और अध्यात्म की बकवास को नकारते हुए चार सौ साल पहले व्यवस्थित ढंग से विज्ञान और तर्क पैदा हुआ। आज जो तकनीक और सुविधाएँ हैं वह उसी की उपज है। और मजे की बात यह है कि धर्म और सदाचार की बकवास किये बिना औसत आबादी में आपस में कहीं ज्यादा मित्रता समानता और खुलापन आया है। ट्रेन, होटल, थियेटर में सब बराबर होते हैं साथ में खाते पीते हैं।

पहली बार सबको शिक्षा स्वास्थ्य और मनचाहा रोजगार नसीब हुआ है। भारतीय माडल पर न तो कोई स्कूल खड़ा है न कालेज न कोई फैक्ट्री। न कोई तकनीक न कोई राजनितिक व्यवस्था। विज्ञान, समाजशास्त्र, तकनीक, मेडिसिन, लोकतन्त्र इत्यादि सब कुछ विश्व के उन नास्तिकों ने विकसित किया है जिन्हें हमारे बाबा लोग रात दिन गाली देते रहते हैं।

हमने विज्ञान को इतनी तवज्जो क्यों नहीं दी? इसका जवाब ये है कि बचपन से होनेवाले हमारे मन पर आस्तिक संस्कार। स्कूल हो, या घर हो, हर तरफ दैवीय शक्ति को बचपन से हमारे कच्चे मन में बिठा दी जाती है। ऐसे संस्कारों में हम पलते हैं, बडे

होते है और हमारे अंतर्मन मे यह बैठ जाता है कि भगवान का अस्तित्व हैं, शैतान भी है। उसे नकारने के लिए मन तैयार नही हो पाता। इसलिए अपने उन लोगो के सामने कितना भी माथा पीटे, तो भी वे यही कहेंगे कि कुछ तो है।

आज भी टी.वी सिरीयल मे अंधविश्वास ,काल्पनिक बातों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दिखाया जाता। हमें बचपन से कैसे तैयार किया जाता है यह जानना बेहद जरूरी है। बचपन में माँ कहती है उधर मत जाना भो आ जाएगा.. बचपन मे माँ बताती है भगवान के सामने हाथ जोडकर बोल 'भगवान मुझे पास कर दो।'

टीवी पर कार्टून मे चमत्कार, जादू जैसी अवैज्ञानिक बातें दिखाकर बच्चों का मनोरंजन किया जाता है, लेकिन चमत्कार और जादू की बच्चों के अंतर्मन मे गहराई तक असर होता है और बड़े होने के बाद भी इंसान के मन मे चमत्कार और जादू के लिए आकर्षण कायम रहता है.. स्कूल में जो विज्ञान सिखाया जाता है उसका संबंध रोजमर्रा की जिंदगी से न जोडना। Law Of Monopoly eryc& 99% समाज के लोग इसी राह पर चल रहे है तो जरूर वे सही ही होंगे, हमने उनका अनुकरण करना चाहिये ये समझ।

इंसानी जीवन भाव भावनाओं की ओर उलझा होने के कारण उसमें असीम सुख और दुख की विस्मयकारक शॉकिंग मिलावट है, जो बातें उसे हिलाकर रख देती हैं और उसका चमत्कारों पर यकीन पक्का होता जाता है। हमने यह किया इसिलिये ऐसा हुआ और हमने ऐसा नहीं किया इसलिए हमारे साथ वैसा कुछ हुआ है। ऐसी कुछ योगायोग की घटनाओं को इंसान नियम समझकर जीवन भर उसका बोझ उठाता रहता है।

Law Of Repeated Audio Visual Effect-

इस तत्व के अनुसार समाज मे मिडिया, माउथ पब्लिसिटी, सामाजिक उत्सव इत्यादि माध्यम से जो इंसान को बारबार दिखाया जाता है, सुनाया जाता है उस पर इंसान आसानी से यकीन कर लेता है।

'डर' और 'लोभ' ये दो नैसर्गिक भावनाएं हर इंसान के भीतर बड़े तौर पर होती हैं, लेकिन जिस दिन ये भावनाएं इंसान के जीवन पर प्रभुत्व प्रस्थापित करती हैं तब वह मानसिक गुलामगिरी मे फसता जाता है। और अंत में सभी में महत्वपूर्ण बात 'चमत्कार' होता है। ऐसा सौ बार आग्रह से बताने वाले सभी धर्म के ग्रंथ इस बात की वजह है। इसलिए धर्म ग्रंथ मे बतायी गयी अतिरंजित बातें कैसे गलत है, ये वक्त रहते ही बच्चों को समझाने की कोशिश करे।

जो इंसान भूत प्रेत के कारण रात के अंधेरे में अकेले सोने, चलने से डरता है, समझ लेना वह सबसे ज्यादा अंधविश्वासी है। उसका मन मानता है कि भूत है और यह धारणा यह साबित करती है कि भूत पहले है। भूत है तो ईश्वर है। उसका अंधविश्वासी होना एक प्रकार के डर से है।

इसमें धार्मिक प्राणियों की कमी नहीं है, जो साइंस की हर चीज इस्तेमाल करते हैं और साइंस के विरुद्ध भी बोलते हैं। साइंस की भावनाएं आहत नहीं होती क्योंकि उसका प्रचार प्रसार नहीं करना पड़ता। सत्य का कैसा प्रचार वह तो स्वतः ही स्वीकार हो जायेगा लेकिन झूठ को प्रचार की आवश्यकता होती है। जिन अविष्कारों ने हमारे जीवन और दुनिया को बेहतर बनाया है, वे सब अविष्कार उन्होंने किये, जिन्होंने धार्मिक कर्मकांडों में समय बर्बाद नहीं किया।

आज कोई भी धार्मिक प्राणी साइंस से संबंधित चीजों के बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता, लेकिन ये साइंसदानों का एहसान नहीं मानते, ये उस काल्पनिक शक्ति का एहसान मानते हैं, जिसने मानव के विकास में बाधा डाली है। जिसने मानवता को टुकड़ों में बांटा है। साइंसदान, अक्सर नास्तिक होते हैं। लेकिन धार्मिक प्राणी कहेंगें, ''साइंसदानों को अक्ल तो हमारे भगवान ने ही दी है''।

लेकिन ऐसे मूर्ख इतना नहीं सोचते कि उनके भगवान ने सारी अक्ल नास्तिकों को क्यों दे दी, धार्मिक प्राणियों को इतना मन्दबुद्धि क्यों बनाया?

पिछले 150 साल में, जिन अविष्कारों ने दुनिया बदल दी, वे ज्यादातर नास्तिकों ने किये या उन आस्तिकों ने किये जो पूजा-पाठ, इबादत नहीं करते थे। अंधविश्वास और कट्टरता से भरे किसी भी धर्म वालों ने ऐसा कोई अविष्कार नहीं किया, जिससे दुनिया का कुछ भला होता है। हाँ यह जरूर है कि ये अपनी किताबों में विज्ञान जरूर खोजते

रहते हैं लेकिन अगली खोज क्या होगी यह नहीं बताएंगे जब तक अगली खोज सफल न हो जाये उसके बाद कहेंगे यह तो हमारी किताब में पहले से ही मौजूद थी।

इन्सान को उसके विकसित दिमाग ने ही इन्सान बनाया है, नहीं तो वह चिंपैंजी की नस्ल का एक जीव ही है, जो इन्सान अपना दिमाग प्रयोग नहीं करते, वे इन्सान जैसे दिखने वाले जीव होते हैं, पूर्ण इन्सान नहीं होते। अपने दिमाग का बेहतर इस्तेमाल कीजिये अंदर जो अंधविश्वासों का कचरा भरा है, मान्यताओं को साइड कीजिए, पूर्वाग्रहों को जला दीजिये, अंधेरा मिट जायेगा। आपके अंदर रौशनी हो जायेगी।

आस्था से नहीं विज्ञान से देश आगे बढ़ेगा अध्यात्म, आस्था को अलग करके यदि किसी भी देश में केवल शिक्षक वर्ग धर्मनिरपेक्ष हो जाये, खासकर विज्ञान के शिक्षक तो यकीन कीजिए उस देश का मुकाबला पूरी दुनिया में कोई नहीं कर सकेगा। क्योंकि बाकी पीढियां शिक्षकों से सीखती है और एक शिक्षक का तथ्यात्मक होने की बजाय भावनात्मक होना या विचारधाओं के एवज में झूठ परोसना कई पीढ़ियों को अज्ञानी ही नहीं मानसिक अपंग भी बना सकता है।

गोह हानि नही पहुंचाती’

किसान मित्रों, आज बात करते हैं, गोह की। गोह जिसे भारतीय मॉनिटर छिपकली कहा जाता है। यह छिपकली परिवार का सदस्य है। दुनिया में इसकी 70 किस्में हैं। भारत में 4 किस्में हैंः बंगाल, येलो, कवरा, रेगिस्तानी। पंजाब में पाया जाने वाला प्रकार बंगाल मॉनिटर कहलाता है। यह सांडा दूर का रिलेटिव है। एक बात ध्यान देने योग्य है कि यह विषैला नहीं है। उसके दाँत भी नहीं होते, उसके मुँह की हड्डी पर बहुत महीन खोल होता है, जिससे वह अपने शिकार को पकड़कर साबूत खाता है। इसकी लार में बैक्टीरिया होते हैं। वे खुजली त्वचा पर खुजली करती है और कोई दूसरा जहर इसमें नहीं है। दोस्तो गोह शर्मीला प्राणी है, यह किसानों का सबसे अच्छा दोस्त है, दिन में 4-5 बड़े चूहे इसका भोजन है। टिड्डे, पतंगे, बिच्छू जैसे छोटे कीड़े सभी खा जाता है। यह कोरी अफवाह है कि गोह धान काटता है और खाता है। यह पूरा झूठ है। जबकि इसके दांत ही नही हैं। कारण यह है कि जब चूहों का झुंड धान के पौधे को अपने नुकीले दांतो से काटता है। जब धान का डंठल 25 दिन से अधिक पुराना हो जाता है तो चूहे उसे खाने लग जाते हैं । भोजन के लिए उसे काट कर खत्म करता है, फिर गोह उसकी लार की गंध का पीछा करता है। यह जीव चूहों का शिकार करने के लिए घूमता है। चूहे वहां से भाग जाते हैं और गोह वहां पर होती है जिसे किसान मार देते हैं जबकि वह तो किसान की कुदरती तौर पर मदद करती है। जो दवा चूहों को मारने के लिए किसान रखते हैं उससे भी गोह मर जाती है। गोह को अगर भगाना चाहें तो मुश्क कपूर का टिक्की वहां रख दें। इसे पौधे के तने में रखने की कोशिश करें और इसे छोटे कपड़े में लपेट कर रखें। यह, चूहों, बकरियों, सांपों को दूर रखने का एक बढ़िया देशी तरीका है। इसकी गंध उन्हें दूर रखती है। किसान चूहों को लंबे समय से मारने के लिए जहर डालते हैं। वह फिर भी बहुत होते हैं। सांप, गोह आदि चूहों को मार देते है जो कि कुदरती तरीका बना है।

सपेरे लोगों को गुमराह करते हैं कि गोह जहरीली होती है और किसान सपेरों को अपने खेतों से मारने देते हैं जबकि सपेरे इन्हें मार कर खाते हैं।

दुनिया की मंहगी घडियों के पट्टे इसकी खाल से बनते हैं। मध्य प्रदेश, राजस्थान और अन्य दक्षिणी राज्यों में, जहाँ इसके लिंग काटकर चांदी के डिब्बे में रखते हैं, यह वहम है कि ऐसा करने से धन की कमी नही आती।

हमे गोह के महत्व को समझना चाहिए बिना वजह गोह, सांपों को मत मारो। यह कुदरत के इको सिस्टम का हिस्सा है।

अनुवादः गुरमीत

बाबाओं के काले कारनामे

तीन तीन औरतों को फंसाकर लिव इन में रहता था ढोंगी बाबा, हुआ गिरफ्तार

जयपुरः राजस्थान पुलिस ने एक ऐसे फर्जी बाबा को गिरफ्तार किया है जो तंत्र-मंत्र के जरिए महिलाओं को वश में करके अपने साथ लिव इन रिलेशन में रहने को मजबूर करता था। आरोपी बाबा के वश में होकर महिलाएं भी अपना घर-परिवार छोड़ कर बाबा के पास रह रही थीं। आखिरकार एक महिला के पति ने पुलिस को बाबा की करतूत बताते हुए शिकायत दर्ज कराई। शिकायत पर जांच करते हुए पुलस ने ढोंगी बाबा को गिरफ्तार कर लिया है। जयपुर के इस फर्जी बाबा पर अय्याशी के अलावा महिलाओं से लाखों रुपए ठगने का भी आरोप है।

गौरतलब है कि यह मामला चाकसू थाना क्षेत्र का है, जहां सरकारी टीचर अशोक कुमार इस फर्जी बाबा के खिलाफ केस दर्ज कराया। अशोक कुमार ने पुलिस को बताया कि शाहनवाज नाम का एक शख्स जो खुद सीबाआई अफसर भी बताता है और तंत्र-मंत्र के जरिए विवाहित मलिाओं को प्रसाद देकर अपने चंगुल में फंसाता है। फेसबुक पर भी फर्जी बाबा की प्रोफाइल बनी है।

मंदिर गई विवाहिता से पुजारी ने किया बलात्कार

जयपुर सीकर जिले के ग्रामीण इलाके की 23 वर्षीय विवाहिता के साथ जयपुर के एक मंदिर में पुजारी द्वारा बलात्कार किए जाने का मामलां सामने आया है। 23 वर्षीय विवाहिता की चार साल पहले ही शादी हुई थी। जिसके बाद वह पति व पिता के साथ मंदिर में जात देने गई थी। जहां आरोपी पुजारी ने हवन के बहाने उसे रोककर उसे अपनी हवस का शिकार बना लिया। विवाहिता की रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी पुजारी को गिरफतार कर लिया है।

(Bhilwarahalchal.com)

दूध गर्म नहीं करने पर कर दी थी शिष्य की हत्या, बाबा को उम्रकैद

सोनीपत- अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. संजीव आर्य की कोर्ट ने गांव रिढ़ाना के डेरा बाब सबरंगी में शिष्य की हत्या करने के मामले में आरोपी बाबा कर्म गिरि को दोषी करार देते हुए अम्रकैद और पांच हज़ार रुपये जुर्माने की सजा सुलनाई है। वहीं दो अन्य युवकों को बरी कर दिया। बाबा ने दूध गर्म नहीं करने पर शिष्य की डंडा मारकर हत्या कर दी थी। गांव दुभेटा निवासी राजेंद्र ने 16 नवंबर 2017 को पुलिस को बताया था कि उसका भाई सत्यवान बाबा बना था। उसने अपना नाम शनिगिरि महाराज रखा था। वह गांव रिढ़ाणा स्थित डेरा बाबा सबरंगी में गुरु कर्म गिरि महाराज के पास रह रहा था। 13 नवंबर, 2017 की रात को शनि गिरि महाराज की हत्या कर दी गई थी और शव दफना दिया था। पुलिस ने कर्मगिरी पर हत्या का केस दर्ज किया था। मामले में पुलिस ने गांव के दो युवकों को भी गिरफ्तार किया था। उन पर गड्ढा खोदने व शव को खुर्द-बुर्द करने का आरोप था। संवाद।

अंधविश्वास के चलते

घर में निकला सांप तो गले में लपेटकर पूजा करने लगी महिला, सांप ने महिला को काटा, मौत

एक संदेश संवाददाता

चतराः आस्था और अंधविश्वास की वजह से अक्सर लोग अपनी जान जोखिम में डाल लेते हैं। चतरा में एक ऐसी ही एक घटना चर्चा का विषय बनी हुई है। हंटरगंज प्रखंड के रक्शी गांव के एक घर में बीते दिनों शिव चर्चा का आयोजन किया गया था। इसमें शामिल होने के लिए एक महिला तैयार होकर अपने घर से निकल ही रही थी कि इसी बीच कहीं से जहरीला सांप निकल आया। सांप को देख घर में हड़कंप मच गया, लेकिन महिला को लगा कि शिव-चर्चा से पहले उसके घर 'साक्षात भगवान' आ गये हैं। अंधविश्वास में आकर उसने अपने गले में सांप को लपेट लिया और पूजा में बैठ गई। इसी दौरान सांप ने उसे कई बार डसा जिसके कारण महिला की मौत हो गई। सांप काटने से जिस महिला की मौत हुई, उसका नाम रुनिया देवी था। वह इसी गांव के रहने वाले लालदेव भुइयां की पत्नी थीं। कुछ गांव वालों ने बताया कि पूजा के दौरान गले में सांप लपेटकर बैठी रुनिया देवी को देखने के लिए ग्रामीणाों की भीड़ जुट गई थी। सांप के साथ वह भजन-कीतन करती रही और इस दौरान गांव वाले भी ढोल बजाकर महिला का साथ देते रहे। भजन-कीर्तन के दौरान ही जहरीले सांप ने महिला को कई जगह डस लिया। पूजा-पाठ में मग्न हुए लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। जहरीले सांप का जहर जब महिला के शरीर में असर दिखाने लगा तो पूजा के दौरान ही रुनिया देवी अचानक अचेत होकर गिर पड़ी। तब आनन-फानन में गांव के ही किसी झाड़-फूंक करने वाले को बुलाया गया। लेकिन किसी ने महिला को अस्पताल पहुंचाने की कोशिश नहीं की। जब तक सांप का जहर उतारने का प्रयास किया जाता, उसके पहले ही महिला की मृत्यु हो गई इस घटना के के चश्मदीद ग्रामीणों ने कहा कि अगर समय पर रुनिया देवी को अस्पताल पहुंचाया जाता तो हो सकता था कि उसकी जाहन बच जाती। रक्शी गांव समेत आसपास के गांवों में इस घटना को लेकर लोगों में काफी कौतुहल है।

असम में मानव बलि मामले में बच्ची की मौत, तांत्रिक गिरफ्तार

चराइदेव। असममें मानव बलि मामले में पांच साल की बच्ची की हत्याकर दी गई। तांत्रिक को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने बताया कि बच्ची का घर से अपहरण हुआ था। शव सिंगलू नदी से बरामद किया गया। राख के साथ लाल कपड़ा व तांत्रिक अनुष्ठान की सामग्री नदी केतट पर मिली। एजेंसी। अमर उजाला 12-9-2021

21 दिन बाद फिर मिला ढाई साल की मासूम का शव, बलि देने की आशंका

गुरुग्राम : धनकोट नहर में शुक्रवार की दोपहर ढाई साल की बच्ची का शव मिला। शव को एक तौलिये में लपेट कर उसे पत्थर से बांधकर पानी में डाला गया है। शव के पास ही शेरांवाली माता की मूर्ति भी मिली। जिससे वहां मौजूद लोगों ने बलि के लिए हत्या का संदेह जत्या है। राजेंद्रा पार्क थाना पुलिस ने शव को पहचान के लिए पोस्टमार्टम हाउस में रखवाया है। इससे पहले वेस्ट जोन में शिवाजी नगर थाना क्षेत्र में 21 दिन पहले एक मासूम का शव बैग में मिला था जिसका अभी तक खुलासा नहीं हुआ है। राजेंद्रा पार्क थाना पुलिस को सूचना मिली कि धनकोट गांव के पास नहर में जाल लगा हुआ है। वहां पर कपड़े में बच्ची का शव देखा गया है। सूचना मिलने के बाद राजेंद्रा पार्क थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को बाहर निकाला। बच्ची की उम्र करीब ढाई से तीन साल होगी। ब्यूरो।

-अमर उजाला : 21-8-2021

अंधविश्वासःकिशोरी ने मां दुर्गा को चढ़ाया आंख

दरभंगा। नगर प्रतिनिधि-

हाईटेक युग में भी लोग अंधविश्वास छोड़ने को तैयार नहीं हैं। शनिवार को अंधविश्वास मे डूबी एक किशोरी ने मां दुर्गा को अपनी बायीं आंख अर्पित कर दी। गंभीर हालत में इलाज के लिए उसे डीएमसीएच लाया गया। मामला बहेड़ी थाना क्षेत्र के सिरुआ गांव का है। किशोरी की पहचान अरुण सिंह की पुत्री सोना कुमारी उर्फ कोमल के रूप में की गई है। वह करीब 16 साल की बतायी जाती है।

डीएमसीएच में पाथमिक उपचार के बाद उसे नेत्र विभाग में रेफर कर दिया गया है। वहां उसका इलाज चल रहा है। उसकी आंख बाहर आकर लटकी हुई है। डॉक्टरों का कहना है कि आंख की रोशनी लौटना अब संभव नहीं लगता। सोना की मां ने बताया कि वह पिछले आठ-दस वर्षो से मां दुर्गा की भक्ति में लीन रहती है। सुबह-शाम वह दुर्गा सप्तशती का पाठ करती है। आज बेलन्योति के बाद दुर्गा का दर्शन करने धमासायर भगवती स्थान गई थी। इसी दौरान मूर्छित होकर वहां गिर पड़ी। सूचना मिलने पर परिवार वाले पहुंचे। वहां उन लोंगों ने देखा कि सोना की बायीं आंख बाहर लटकी हुई है। उसे डीएमसीएच लाया गया। मां ने बताया कि वह दो बार मैट्रिक में फेल होने के बाद पढाई छोड़ चुकी है। मंदिर में क्या हुआ, इससे वे अनभिज्ञ हैं। इधर, किशोरी ने बताया कि दो साल से भगवती उसके सपने में आती थीं। दो दिन पहले भी वे सपने में आयीं। उन्होंने कहा कि तुम अपने शरीर की कोई कोमल अंग मुझे दान कर दो। उनकी इच्छा का पालन करते हुए मैंने अपनी एक आंख उन्हें अर्पित कर दी। भगवती ने उससे कहा था कि हम तुम्हारे हैं, तुम हमारी हो। बेंता ओपी की पुलिस ने किशोरी के डीएमसीएच आने की पुष्टि की।

बच्चा नहीं चाहती थी, इसलिए डेढ़ माह की बेटी को मार डाला

तांत्रिक के बहकावे में आकर वारदात करने की बात भी आई सामने।

संवाद न्यूज एजेंसी

भिवानी। शहर की पीपलीवाली जोहड़ी की न्यू आंबेडकर कॉलोनी निवासी एक महिला ने मंगलवार रात अपनी डेढ़ माह की मासूम की गला घोंटकर हत्या कर दी। सिटी थाना पुलिस ने पति की शिकायत पर आरोपी महिला वैशाली के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया है। पुलिस की प्रथमिक पूछताछ में सामने आया कि महिला बच्चा नहीं चाहती थी। इसीलिए बच्ची को मार डाला।

वहीं दूसरी ओर महिला के तांत्रिक के बहकावे में आकर बच्ची की हत्या की बात भी सामने आ रही है। बुधवार को पुलिस ने नागरिक अस्पताल में चिकित्सकों के बोर्ड से बच्ची के शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया है। वहीं मामले की तह तक जाने के लिये पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

भिवानी निवासी वैशाली का जून 2020 में न्यू बांबेडकर कॉलोनी निवासी मोहन से अंतरजातीय प्रेम विवाह हुआ था। करीब डेढ़ माह पहले ही वैशाली ने एक बेटी जीया को जन्म दिया था। आरोप है कि मंगलवार रात को वैशाली ने डेढ़ माह की बेटी का गला घोंटकर उसे मौत के घाट उतार दिया। इसकी जानकारी पति मोहन को लगी तो उसने पुलिस को सूचना दीं इसके बाद सिटी पुलिस थराना एसएचओ संदीप शर्मा मौके पर पहुंचे । मामले की गंभीरता को देखते हुए डीएसपी हेडक्वार्टर वीरेंद्र सिंह भी वहां पहुंचे। तथ्य जुटाने के मौके पर फोरेंसिक एक्सपर्ट टीम भी पहुंची।

खोज-खबर

कृत्रिम 'पैंक्रियाज' जो बचायेगा 'डायलिसिस'

जनसत्ता संवाद।

मधुमेह के मरीजों को राहत देने के लिए वैज्ञानिकों ने कृत्रिम 'पैंक्रियाज' का परीक्षण कर रहे हैं। इससे खासतौर पर उन मरीजों को रहात मिलेगी जो टाइप-2 मधुमेह के मरीज हैं और जिन्हें किडनी के डायलिसिस की जरूरत है। कृत्रिम 'पैंक्रियाज' की मदद से मधुमेह के मरीज अपने शरीर में उच्च और निम्न स्तर की शर्करा की मात्रा को नियंत्रित कर सकेंगे। मरीज को अलग से इंसुलिन के इंजेक्शन लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह परीक्षण केंब्रिज यूनवर्सिटी और स्वटजरलैंड कीयूनिवर्सिटी हॉस्पिटल ऑफ बन के वैज्ञानिक कर रहे हैं।

शोध के क्रम में 13 महीने तक 26 मरीजों पर परीक्षण किया गया। शोधकर्ता डॉ. शेरलोट बॉगटन का कहना है, 'शरीर में उच्च और निम्न स्तर की शर्करा की स्थिति में सबसे ज्यादा खतरा मधुमेह और किडनी के मरीजों को रहता है। इससे निपटने के लिए कृत्रिम 'पैंक्रियाज' को तैयार किया गया है।

इसके ट्रायल के लिए अक्तूबर 2019 और नवंबर 2020 के बीच मधुमेह के 26 ऐसे मरीजों को चुना गया जो डायलिसिस पर थे। इनमें से 13 मरीजों में कृत्रिम 'पैंक्रियाज' लगाया गया। वहीं, अन्य 13 को इंसुलिन थैरेपी दी गई। दोनों तरह के मरीजों की तुलना की गई। 20 दिन बाद देखा गया कि मरीजों में शर्करा की बढ़ी हुई मात्रा नियंत्रित हो गई। जर्नल 'नेचर मेडिसिन' में डछपे शोध के मुताबिक, कृत्रिम 'पैंक्रियाज' को एक सॉफ्टवेयर उपयोक्ता के स्मार्टफोन में मौजूद रहता है और मरीज में इंसुलिन नियंत्रित करने के लिए कृत्रिम 'पैंक्रियाज' को संकेत भेजता है। ग्लुकोज मॉनिटर की मदद से मरीज में रक्त शर्करा का स्तर चेक किया जाता है और उसके मुताबिक सिग्नल भेजे जाते हैं। अब स्वस्थ किडनी वाले मरीजों में परीक्षण हो रहा है। यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल ऑफ बर्न की शोधकर्ता डॉ.लिया बेली कहती हैं, कृत्रिम 'पैंक्रियाज' की मदद से मरीज अपनी गंभीर बीमारी को खुद नियंत्रिक कर सकेंगे। अब इसका परीक्षण ऐसे लोगों पर किया जा रहा है जो मधुमेह से तो पीड़ित है, लेकिन उन्हें डायलिसिस की जरूरत नहीं हैं जल्द ही इसके नतीजे जारी हो सकते हैं।

मधुमेह के रोगियों के मामले में 'इंटरनेशनल रिसर्च इंस्टीट्यूट' की अन्य एक शोध में पाया गया है कि बाजरे के इस्तेमाल से 15 फीसद तक रक्त शर्करा घटा सकते हैं। यह स्वस्थ लोगों में भी टाइप-2 मधुमेह का खतरा कम करता है। ऐसे लोग जो स्वस्थ हैं और बाजरे को खानपान में शामिल करते हैं उनमें इस बीमारी की आशंका कम हो जाती है। यह दावा इंटरनेशनल क्रॉप्स रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर द सेमी एसिड टॉपिक ने अपने हाल के शोध में किया है। 'फ्रंटियर्स इन न्यूट्रिशन' जर्नल में पब्लिश रिसर्च के मुताबिक, बाजरा का औसत 'ग्लाइसीमिक इंडेक्स' 52.7 होता है। यह चावल और रिफाइंड गेहूं के मुकाबले 30 फीसद तक कम होता है। वहीं, मक्के के मुकाबले भी बाजरे का ग्लाइसीमिक इंडेक्स कम कहोता है। किसी चीज का ग्लाइसीमिक इंडेक्स जानकर पता लगाया जा सकता है वे चीज ब्लड शुगर लेवल कितना बढ़ायेगी और कितने समय में बढ़ाएगी। इसीलिए चावल गेहूं और मक्के का ग्लाइसीमिक इंडेक्स बाजरे से ज्यादा होने के कारण इनसे ब्लड शुगर बढ़ने का खतरा ज्यादा है।

इंडियन नेशनल बोर्ड ऑफ न्यूट्रीशन के प्रतिनिधि और शोशकर्ता डॉ. राज भंडारी का कहना है, शोध के दौरान अनाज को उबालकर, बेक करके और भाप में पकाकर देख गया है। इसके बाद सामने आए नतीजों को पेश किया है। इंसान का खानपान मधुमेह को नियंत्रित करने में अहम भूमिका अदा करता है।
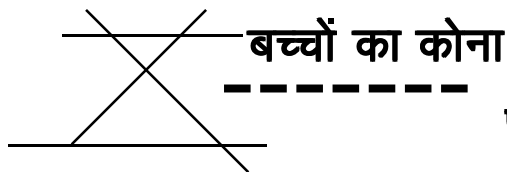
बादल लाते कैसे पानी ?

एक दिवस जब उमड़-धुमड़कर
नभी में काले बादल छाए
तो अति भारी गर्जन लेकर
बिजली के संग पानी लाए

रामू ने पूछा चाचा से
बादल लाते कैसे पानी
चाचा ने वर्षा होने की
कहदी सब सम्पूर्ण कहानी
पानी को गर्माने पर हम
भाप रूप में उसको पाते
और उसे ठण्डा करने पर
जलकण तैर कहां से आते
सूरज की गर्मी पाकर के
सागर जल जब तप जाता है
बन कर भाप पहुंचता नभ पर
बादल काला कहलाता है
ये ही बादल जल से भरकर
आसमान में छा जाते हैं
हवा झकोरों से उड़-उड़कर
इधर-उधर ये मंडराते हैं

यही हवाएं पर्वत से रुक
ऊपर को जो उठ जाती हैं
पानी की बूंदे बन कर वे
वे धरती पर बरसाती हैं
महासागरों से उठकर जो
भाप हवाएं बन जाती हैं
धरती से ऊपर आगे बढ़
पर्वत से वह टकराती है
एक दिवस जब उमड़-घुमड़ कर
नभ में काले बादल छाए
तो अति भारी गर्जन लेकर
बिजली के संग पानी लाए।

पृथ्वी अगर चपटी होती तो..

परेशान बैठा-बैठा
राम सोच रहा मन में
बाबू जी ने आकर पूछा
रामू है किस उलझन में
रामू बोला बाबूजी ये
धरा गोल है आज पढ़ा
किन्तु देखने में यह चपटी
विधि ने कैसे इसे गढ़ा
परेशान बैठा-बैठा..
बोले बाबू जी पृथ्वी
गोल संतरा हो जैसे
इतनी बड़ी भूमि बोलो
कोई देख सके कैसे
एक जगह से चलकर हम
लौट वहीं है आ जाते
पृथ्वी यदि चपटी होती तो
नहीं वहां हम आ पाते..
जब जहाज सागर के तट पर
बहुत दूर से है आता
दिखता है मस्तूल प्रथम फिर
वह जहाज़ है दिख पाता
चन्द ग्रहण में तुम देखोगे
पृथ्वी शशि को ढक लेती
गोल-गोल परछाई तब है
पृथ्वी पर दिखलाई देती
परेशान बैठा बैठा
राम सोच रहा मन में
बाबू जी ने आकर पूछा
राम है किस उलझन में।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति,हरियाणा की पुस्तक 'हम भारत के बच्चे' से साभार

केस रिपोर्ट

आप बीती

तर्कशीलों ने घर को उजड़ने से बचाया

-सोहन लाल अंबाला
मो. 94166 34397

प्रस्तुतिः बलवन्त सिंह लेक्चरार

मैं यमुनानगर में एक सरकारी स्कूल में टी. जी.टी. अध्यापक के तौर पर कार्यरत हूं। इससे पूर्व मैं अंबाला के एक निजी स्कूल में अध्यापन का कार्य करता रहा था। निजी स्कूल में अध्यापन के दौरान मेरा मेजलोल आर्यसमाजी विचारधारा वाले एक दो साथियों के साथ हो गया था। मैं भी अपने आप को आर्यसमाजी कहने लग गया था।

बात दिसंबर 2020 की है, मैं यमुनानगर में अपने घर में बैठा था। अचानक शाम को 6 बजे के करीब मेरी बड़ी बहन जी का फोन आया कि 'मैं पुलिस चौकी में खड़ी हूं। आज सुबह से ही हमारे घर में कोई ईंटें, रोड़े और पत्थर के टुकड़े गिरा रहा हैं आसपास में सबदेख लिया लेकिन कोई इंसान नजर नहीं आया। इसलिये मैं पुलिस में शिकायत दर्ज करवाने के लिए आई हुई हूं।'

बहन जी के शिकायत करने पर पुलिस वाले हमारे घर में गये। उन्होंने सारे घर की चैकिंग की तथा आसपास के सभी पड़ोसियों से भी पूछताछ की, परंतु कोई भी सुराग नहीं मिला। पुलिस वाले सारी चैकिंग कर के वापिस चले गये। फिर रात को 2-3 बजे के लगभग ईंट-पत्थर गिरना शुरू हो गये। फिर से पुलिस को बुलाया गया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। फिर इतनी ठण्डी रात को चौबारे की छत पर पहरा भी दिया परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। अगले दिन पड़ोसियों पर संदेह करते हुए उन्हें खूब गालियां भी निकालीं, परंतु थोड़े-थोड़े समय के पश्चात् ईंट-रोड़े गिरते ही रहे। यह बात सारे मोहल्ले में फैल गई। अब मोहल्ले के लोगों ने अपनी हमदर्दी जताते हुए इस भयंकर समस्या के समाधान के लिए उपाय भी बताना शुरू कर दिये। किसी ने इसे आपरी-पराई और किसी ने इस पितृ दोष बताया। उन के सुझाव पर एक पंडित जी को बुलाया गया। उसने इसे पितृ दोष एवं वास्तुदोष बताया और अपनी दक्षिणा ले गया। उसने इसके स्थायी समाधान के लिए पूजा-पाठ करने का खर्च 10000/- रुपये बताया। फिर किसी ने हनुमान चालीसा का पाठ किसी ने सुंदर कांड का पाठ का उपाय बताया। जितने लोग उतनी बातें, परंतु मामला हल नहीं हुआ।

मैं खुद एक सप्ताह की छुट्टी लेकर घर पर आ गया। मेरे वहां पर रहते हुए भी पूरा सप्ताह घर में ईंट-पत्थर गिरते ही रहे। इससे घर के सभी सदस्य आपस में लड़ाई-झगड़ा करने लग गये। परेशान हो कर हम एक मौलवी के पास गये। उसने ईंट-पत्थरों को देख कर जिन्न होने की बात कही और कुछ ताबीज उपाय के तौर पर दे दिये। लेकिन ईंट-पत्थरों का गिरना जारी रहा। फिर यमुनानगर के काली माता मंदिर के पंडित ने पितृदोष बता कर 17000/- रुपये में मंदिर में बैठ कर ही पूजा-पाठ करने की बात की और बाद में उसने वास्तुदोष भी बता दिया और आदेश सुना दिया कि उस मकान को बेच दो। फिर किसी अन्य पुजारी ने कह दिया कि वह पंडित खुद मकान लेना चाहता है, इसी लिए तुम्हें डरा रहा है।

मेरे दो-तीन आर्यसमाजी मित्र भी हमारे घर पर आये। उन्होंने जिन्न, भूत-प्रेतों की बात को तो नकार दिया। परंतु हमारे घर की समस्या का समाधान उनके पास भी नहीं था। फिर मेरा भाई एक मुल्ला के पास गया। उसने तीन दिन में कुरान की आयतों का पाठ कर के जिन्न को दूर भगाने की बात की और खर्चा 10000/- ले लिया। उसके द्वारा दिये गये ताबीज बांधने के बाद उस दिन व रात में कोई भी ईंट-पत्थर नहीं गिरा। अगली रात को घर में रखे सोफे में अपने आप आग लग गई। फिर कुछ समय के पश्चात् रसोई में रखे कपड़ों में, फिर

बाथरूम में रखे तौलिये में भी आग लग गई। हम सब ने पूरी रात परेशानी में जाग कर बिताई। सुबह होते ही उस मौलवी के पास गये और उसे सारी बात बताई। उसने कहा कि तीन दिन-रात का पाठ जारी रखा हुआ है। अतः तीन दिन तक सावधानी रखें, कोई पुराना जिन्न है। उस द्वारा पाठ किया जल लेकर हम घर आ गये। परंतु उसी दिन दोपहर होते-होते कभी एक कमरे में कभी दूसरे कमरे में कभी तीसरे कमरे में तो कभी चौबारे में रखे कपड़ों में आग लग जाती रही। अब मामला और अधिक भयावह हो चुका था। हम फिर से उस मौलवी के पा गये। आगे से वह बोला कि 'अपना सारा सोना, जेवरी एवं सारी नगदी कहीं और जगह पर रख दो, वर्ना यह सभी कुछ जिन्न अपने साथ ले जाएगा।' हमने उसके निर्देशानुसार सारे जेवर इत्यादि अपने एक रिश्तेदार के पास रख दिये। हम सारी सारी रात जागते रहे और घर का पूरा ध्यान रखा, लेकिन फिर भी घर में दो बार आग लग गई। उस मौलवी के कथनानुसार हम तीन दिन तक 'जिन्न' द्वारा हमारा घर छोड़ कर जाने का इंतजार करते रहे। मौलवी ने घर में जो धूनी लगाई हुई थी, तीसरे दिन रात को 12 बजे उसके आगे माथा टेका और उस 'जिन्न' को हमारा घर छोड़ कर जाने की प्रार्थना की। अगले दो दिन तक हमारे घर में कोई भी अप्रिय घटना नहीं घटी। हमें कुछ राहत महसूस हुई और मन को शांति मिली।

परंतु चार दिन के पश्चात् हमारे घर में फिर से वही हाल होने लग गया। परेशान होकर हम किसी परिचित के बताये जाने पर एक अन्य बाबा, जो कि एक सरदार जी था, के पास समस्या के समाधान के लिए चले गये। उसने भी इसे 'जिन्न का कारनामा' बताया और अपना उपाय करने से पूर्व उसने मौलवी द्वारा दिया गया सामान नदी में बहाने के लिये कह दिया। उसने हमें रविवार वाले दिन अपने आश्रम में हमें परिवार सहित बुलाया। अब घर में ठक-ठक की आवाजें भी आने लग गई। ऐसा लगता था कि जैसे कोई दरवाजे पर अथवा खिड़की पर दस्तक दे रहा हो। इन आवाजों से हमारे मन का डर कई गुना और भी अधिक बढ़ गया। खैर, रविवार को हम उस सरदार बाबा के पास गये। उसने उपाय के लिए अपना कुछ सामान घर में रखने के लिए यिा, घर के दरवाजों व खिड़कियों परगाड़नेके लिए कुछ कील दिये तथा 'पवित्र जल' घर में छिड़कने के लिए दे दिया। इस उपाय के खर्च के तौर पर उसने 7000/- रुपये हम से वसूल लिए। इस उपाय से 3-4 दिन तक घर में कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। परंतु चार दिन के बाद घर में कभी कहीं तो कभी कहीं पर आग लगने लग गई। उस बाबा जी को फोन पर घटनाओं के बारे में बताया तो उसने कह दिया कि 'साल-छः महीने तो ऐसे ही रहेगा, क्योंकि ऐसे जिन्न-भूत धीरे-धीरे ही पीछा छोड़ते हैं। आप प्रत्येक रविवार आश्रम में आते रहिये, उपाय जारी रखिये।'

उसकी इस बात से मुझे तसल्ली नहीं हुई। फिर पता चला कि मेरा बड़ा भाई भी किसी बाबा के सेवक है और उसके बाबा जी के उपाय से ऐसी समस्याएं हल हो जाती हैं। मेरा वह भाई अनपढ़ है परंतु वह अपने अन्दर 'आध्यत्मिक शक्तियां' होने की बातें ऐसे करने लगा कि जैसे वह इस विषय में पीएचडी किया हुआ हो। मजबूरी में मैंने उससे हमारे धर का उपाय करने के लिए निवेदन किया। परंतु हमारे घर में कोई भी उससे उपाय करवाने के लिए तैयार न था, क्योंकि सभी को संदेह था कि शायद उसी ने ही कुछ उल्टा-पुल्टा न किया हो। क्योंकि इस बात का सभी को पता था कि वह किसी डेरे एवं बाबा के चक्कर में अवश्य है। मैंने बहुत मुश्किल के साथ घर वालों को समझाया और उस भाई से घर में चौकी लगवाई। फिर उसके 32 दिन तक जोत-बत्ती लगा कर उपाय करने के लिए कहा। उसने आगे कहा कि 'मुझ में हमारे बाबा की चौकी आती है।' मैंने व मेरी बहन ने उसमें आये हुई 'बाबा' की पैर पकड़ मिन्नतें कीं कि हमारा घर इन बलाओं से सुरक्षित कर दो।

अगले दिन लुधियाना में रहने वाली मेरी बहन हमारे घर में पता लेने के लिए आ गई। मैंने घर के हालात को ध्यान में रखते हुए हमारे साथ रहने वाली हमारी 11 वर्षीय भानजी को कुछ दिन के लिए उसके साथ भेज दिया। फिर मेरे भाई को एक पंडित ने हमारे घर में पितृ दोष बताया तथा पाठ-पूजा करने के नाम पर 10000/- रुपये की मांग की। हमने वह पाठ पूजा भी करवाई। चौकी लगाने वाले हमारे बड़े भाई की सहमति से हमने

पंडित जी से पाठ-पूजा भी करवाई । उसने 11 दिन तक हमारे घर में जोत जलाई। इस दौरान घर में कोई भी अप्रिय घटना नहीं हुई। हम समझ रहे थे कि भाई द्वारा चौकी लगाने से तथा पंडित जी द्वारा घर में पूजा-पाठ करने के कारण इन बलाओं ने हमारे घर का पीछा छोड़ दिया है। परंतु 26वें दिन लुधियाना से हमारी लुधियाना वाली बहन का फोन आया कि रात को उसके घर में वैसे ही ईंट-पत्थर बरस रहे हैं और सुबह होते ही घर में कपड़ों को आग लग गई है। मैंने तुरंत अपने उस भाई की चौकी लगवाई और फिर उसे लेकर लुधियाना चला गया। उसने वहां पर भी जोत लगवाई और उनको भी 40 दिन तक रात-दिन जोत जलाए रखने के निर्देश दे दिया। फिर मैं अपनी उस भानजी को वापिस अंबाला ले आया। उसके बाद लुधियाना में बहन के घर में कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। भानजी के घर आने के 3-4 दिन के बाद हमारे घर में फिर से आग लगने लग गई तथा ठक-ठक की आवाजें भी आना शुरू हो गई। भाई ने फिर से चौकी लगाई और बताया कि 'तुमने जो माता के जागरण की मन्नत मान रखी है, उसके पूरी करवाओ, तब जाकर सब ठीक होगा।'

हमारे घर में ऐसी विचित्र घटनाओं को होते हुए लगभग तीन महीने बीत चुके थे। सभी लोग भी हमारे घर में 'जिन्न, भूत-प्रेत' का साया मान कर दूर-दूर रहने लगे। हमारी जो बहन व भानजी हमारे साथ रहती हैं, वह भी किराये के मकान में जाने की जिद करने लगीं। हमने आग से बचाने के उद्देश्य से घर का बहुत सा सामान अपने अन्य परिचित लोगों के घर में पहुंचा दिया। मैंने चौकी लगाने वाले अपने भाई को लगभग दो-अढ़ाई महीने अपने घर में ही, सुरक्षा की गरज से, अपने साथ रखा। साथ ही मैं खुद भी जाग-जाग कर अपने भाई की भी निगरानी करता, ताकि वह हमारे घर में रह कर किसी प्रकार का नुकसान करने के लिए कोई 'सिद्धी' न कर रहा हो, परंतु वह तो आराम से सोया हुआ ही मिलता।

फिर मेरे एक पढ़े-लिखे परिचित ने मुझे एक ऐसे मुस्लमान तांत्रिक का पता बताया, जो कि जिन्नों को हांडी में बंद कर लेता था। हम उस के पास गये। उसी दिन घर में मेरी बहन और दूसरे भाई की आपस में लड़ाई पड़ गई। दोनों ही मरने-मारने के लिए तैयार हो गये। सभी ने मिल कर उन्हें बहुत मुश्किल के साथ शांत करवाया। लोग इस को भी भूत-प्रेत का असर हो जाना मान रहे थे। उस मुस्लमान तांत्रिक ने हम से 1500 रुपये का सामान मंगवाया और उपाय किया। सारा सामान हांडी में रख कर उस पर अपना तंत्र-मंत्र किया और हांडी को ऊपर से कपड़े के साथ बांध दिया। फिर उस हांडी को बहते हुए पानी में बहाने के लिए कह दिया। उसे लेकर हम 50-60 किलोमीटर दूर भाखड़ा नहर में किनारे पर गये और चलते हुए पानी में उस हांडी को बहा दिया। परंतु एक सप्ताह के बाद घर में फिर से आग लगने लग गई। इसी दौरान एक दिन रसोई में रखा हुआ राशन पोलीथीन के पैकटों पैक हो कर चौबारे में पड़ा हुआ मिलना। फिर एक दिन हमारे घर की पेटी एवं अल्मारी में रखे हुए नये व पुराने कपड़े अपने आप कट गये। फिर एक दिन घर में तीन जगह पर मानव-मल की गंदगी भी गिरी हुई पायी गई। यह सब देश कर मेरा चौकी लगाने वाला भाई सख्त लहजे में कहने लगा कि 'माता के जागरण की तारीख निश्चत करोगे तो ही यह सब कुछ रुकेगा, अन्यथा तुम्हारी मर्जी, फिर तुम रोते ही रहोगे।'

घर में सभी सदस्य परेशानी के कारण आपस में लड़ते-रहते थे। अब तो आत्महत्या की बात भी करने लग गये थे। ऊपर से हमारा चौकी लगाने वाला भाई अपने प्रवचन देने लग गया। ऐसे में समस्या के कारणों को न समझते हुए अपनी सहायता की संभावना से मैंने अपनी समस्या का वर्णन करते हुए एक छोटा सा मैसेज सोशल मीडिया पर डाल दिया। सर्च करने पर अगले ही दिन मुझे तर्कशील सोसायटी हरियाणा से जुड़े हुए एक साथी का फोन आया। ये तर्कशील साथी राजेश पेगा जी थे। उनके साथ बातचीत करके मुझे काफी हौसला मिला। उन्होंने मुझे तर्कशील-पथ के संपादक बलवन्त सिंह लेक्चरार का मोबाइल नंबर देकर दावे के साथ कहा कि आप इन से संपर्क स्थापित कर लो, आपकी समस्या का 100 प्रतिशत समधान हो जाएगा। मैंने तुरंत बलवन्त सिंह जी से संपर्क किया और उन्हें अपनी सारी समस्या बताई। उन्होंने कहा कि आज रविवार है और मैं आज मनोरोग परामर्श केंद्र में

व्यस्त हूं। यदि आप अधिक परेशान है तो तो आज ही केन्द्र में आ जाओ। जब हम परामर्श केन्द्र पर गये तो उन्होंने हम से सारी समस्या सुनी और फिर वहां पर गये हुए हमारे परिवार के सभी सदस्यों की बारी-बारी के साथकाऊंसलिग की। फिर उन्होंने हमें अपनी 11 वर्षीय भानजी को भी साथ लाने के लिए कहा। साथ ही उन्होंने हम से स्पष्ट रूप से कह दिया कि 'अभी भी अगर तुम्हारी नज़र में कोई तांत्रिक-मांत्रिक, मुल्ला-मौलवी कोई बाबा, कोई स्याना , कोई ओझा बचा हुआ तो पहले उससे अपना इलाज करवा लो। जब सभी अपने हाथ खड़े कर दें तो फिर मैं तुम्हारी समस्या का शर्तिया रूप से समाधान कर दूंगा।

फिर हम हमारी अपनी भानजी को भी बलवन्त सिंह जी के पास ले कर गये। उन्होंने हमारी भानजी की मनोवैज्ञानिक तौर पर काऊंसलिग की और उसके मन में बैठे हुए कथित भूत-प्रेत-जिन्न इत्यादि के मनोभ्रम को दूर किया और साथ ही मनोवैज्ञानिक तौर पर उसे समझा दिया कि 'घर में आग लगने, ईंट-पत्थर गिरने, कपड़े कटने एवं घर में गंदगी गिरने की सभी घटनाओं के पीछे किसी भूत-प्रेत, जिन्न इत्यादि का हाथ नहीं है; क्योंकि दुनिया में कहीं पर भी ओपरी-पराई, भूत-प्रेत जिन्न इत्यादि का अस्तित्व नहीं है। यह भी किसी मानव के अवचेतन मन में बैठे हुए मनोभ्रम के कारण चेतन अथवा अवचेतन तौर पर उसी मानव के हाथों द्वारा की गई क्रियाओं का ही परिणाम होता है।

'ये सभी क्रियाएं, सभी घटनाएं तुम्हारे (भानजी) द्वारा ही अवचेतन तौर पर की गई हैं।' फिर हमारी भानजी ने सचेत रूप में मान लिया कि वह ही अपनी छत पर पड़े हुए ईंटों के छोटे टुकड़े घर के आंगन में चुपके से फैंक देती थी। ज्यों घर के तांत्रिक, बाबा और चौकियां लगाने वाले आने लगे और वे सभी इसे कथित भूत-प्रेत एवं जिन्न इत्यादि का का कारनामा घोषित करते रहे तो अवचेतन तौर पर उसक हौसला बढ़ता चला गया तथा वह और अधिक तेजी के साथ ऐसी घटनाओं को अंजाम देती चली गई। उसने यह भी बताया कि एक दिन जब वह शौचालय में शौच के लिए गई तो अपने साथ एक पोलीथीन का लिफाफा ले गई तथा अपने ही मानव-मल को उसने उस लिफाफे में डाल लिया और परिवार वालों से आंख बचा कर घर में दो-तीन जगहों पर फैंक दिया। इसी प्रकार ठक-ठक की आवाज के बारे में उसने बतया कि अपने मामा के साथ बिस्तर में पड़ी हुई ही वह अपने हाथ में किसी चीज द्वारा फर्श पर मार कर ठक-ठक की आवाज बना देती थी।

वास्तव में उसकी एक मृतक मामी बार-बार उसके सपने में आती थी। इस कारण अवचेतन तौर पर वह परेशान रहती थीं उसकी अपनी मां विधवा है और वह अपनी बेटी के साथ अपने मायका परिवार में रह रही है। उसकी मां एक फैक्ट्री में मजदूरी करती है। उसका एक मामा (हमारा एक भाई) कोई काम नहीं करता और घर वालों से फिजूल में पैसे मांगता रहता है। यहां तक कि उसकी मां से भी पैसे मांग लेता है और फिजूल खर्ची कर देता है। इन सभी बातों के कारण अवचेतन तौर पर भानजी के मन मे कुण्ठा भरी हुई थी। सर्दियों में एक दिन छत पर ईंट-रोड़ों के साथ खेलते हुए उसके हाथ से ईंट का एक टुकड़ा नीचे आंगन में गिर गया, जिसे उसकी नानी ने देख लिया और उसने डर कर शोर मचा दिया। बातों बातों में जब सभी ने इसको किसी पड़ोसी की शरारत अथवा भूत-प्रेत का कारनामा घोषित कर दिया तो उसका हौसला बढ़ता चला गया। तांत्रिकों एवं बाबाओं के द्वारा घर में आकर इसे भूत-प्रेतों के साथ जोड़ने के कारण वह और अधिक उद्दण्डता के साथ वह सब कुछ करती रही।

इसी कारण जब वह कुछ दिनों के लिए लुधयाना चली गई तो हामरे घर में ऐसी घटनाएं बिल्कुलन बन्द रहीं। इसे हम बाबाओं व तांत्रिकों द्वारा किये गये 'उपायों का फल' मान रहे थे। परंतु जब लुधियाना में हमारी बहन के घर में भी ऐसी घटनाएं होने लगीं तो मैं भानजी को वापिस ले आया। तब उसके आते ही घर में फिर ऐसी घटनाएं घटने लग गईं।

यह सब कुछ हमारी कमज़ोर मानसिकता एवं रूढ़िवादी विचारों के कारण ही होता रहा। यदि हम वैज्ञानिक ढंग से इसके कारणों को समझने की कोशिशें करते तो इतना लंबा संताप न भोगते और अपने घर का इतना नुकसान न करवाते। जिस ढंग से बलवन्त सिंह जी ने हमें समझाया और हमारी समस्या का स्थायी समाधान किया उसके हम उनके

एवं तर्कशील सोसायटी के अहसानमंद हैं। इतना लंबा संताप भोगने के कारण मैं खुद भी अपने घर की समस्याओं की हमेशा के लिए मुक्ति की आशा ही छोड़ चुका था।

अब मैं बलवन्त सिंह जी द्वारा दिया गया तर्कशील साहित्य का अध्ययन करता रहता हूं। मेरी तमन्ना है कि मैं भी तर्कशील सोसायटी हरियाणा के साथ मेल-जोल रखूंगा और इसका सदस्य बन कर समाज की सेवा किया करूंगा। मैं तर्कशील सोसायटी का बहुत-बहुत धन्यवादी हूं जिन्होंने हमारे घर को उजड़ने से बचा लिया। मैं भी अब लोगों को वैज्ञानिक चिंतन एवं तर्कशीलता की ओर प्रेरित किया करूंगा।

रामसेतु बांध पर नासा की शोध रिपोर्ट का अवलोकन और सच्चाई

पुरातत्व विभाग द्वारा कई वर्षो के शोध के बाद 2008 मे यह सिद्ध हुआ था, कि रामसेतू 18 लाख वर्ष पूर्व 'tectonic plates' के घर्षण द्वारा उत्पन्न हुआ, जो समुद्र तल तक गड़ा हुआ है। जबकि मानव जाति के जन्मे हुए, अभी 1 लाख वर्ष भी नही हुए। करोडो वर्षो पूर्व के डायनासौर्स (Dianasaurs) के अवशेष भी मिल गये, लेकिन वानर सेना ने बनाया, इसका कोई अवशेष अभी प्राप्त नहीं हुआ है। यह महत्वपूर्ण बात है, तो हिन्दू धर्मावलंबी कैसे रामसेतु बता रहे हैं। यह भारतीय लोगों को समझने के लिए ऐसे सेतु कहां कहां है। यह समझाने का प्रयास किया जा रहा है। उदाहरण समझें ?

इस प्रकार का एक सेतू जापान-कोरिया के बीच मे भी है, और इससे कई गुना बड़ा सेतु तुर्की द्वीप मे भी है। रामसेतु 'Adams bridge' इससे अधिक पुराना होने के कारण आदम पुल भी कहा जाता है। राम सेतु Adams bridge पर नासा ने रिसर्च कर बताया गया है, कि यह पुल प्रकृतिक निर्मित है, मानव निर्मित नही है। यह समुद्र में पाये जाने वाले मूँगा (CORAL) में पाये जाने वाले केल्शियम कार्बोनेट के छोड़े जाने से निर्मित श्रंखला है। जिसकी लंबाई 30Km. है।

नासा ने इसके सैम्पल लेकर रेडियो कार्बन परीक्षण से बताया था, कि यह सेतु 17.5 लाख वर्ष पुराना है। मूंगा समुद्र के कम गहरे पानी में जमा होकर श्रंखला बनाते हैं। विश्व में मूँगा से निर्मित ऐसी 10 श्रृंखलाएँ हैं। इनमे से सबसे बड़ी ऑस्ट्रेलिया के समुद्र तट पर है। इसकी लंबाई रामसेतु से भी कई गुणा अधिक 2500 Km है।

विश्व की इन सभी देशों में मूँगा श्रंखलाओं को सेटेलाईट के द्वारा देखा जा चूका है। नासा के रिसर्च अनुसार रामसेतु जब 17.5 लाख वर्ष पुराना है, तो इसे राम निर्मित कैसे कहाँ जा सकता है। जबकि मानव ने खेती करना, कपड़े पहनना 8000 हजार वर्ष ईसा पूर्व सीखा है।

मानव ने लोहे की खोज 1500 ईसा पूर्व की है। मानव ने लिखना 1300 ईसा पूर्व सीखा है। फिर राम नाम लिखकर दुनिया के पहले पशु सिविल इंजनियर भालू नल-नील ने इसे कैसे बना डाला ? यह समझने का बिषय है।

इसी सन्दर्भ मे ''मनुस्मृति'' जैसे ग्रंथ को रच कर पाखन्ड का तान्डव किया गया। जब यह सत्य उजागर हुआ, तब से आसाराम, योगी, चिन्मियानन्द, नारायण साई, पंडित बाबा संतों के कारण लोगों का धर्म से मोहभंग होता जा रहा है। चूंकि बहुत से धार्मिक धर्मात्मात्माओं के अश्लील और अय्याशी कार्य सामने आते रहते हैं, लेकिन फिर भी धर्मात्मा जनता को धर्म मे उल्झा कर लोगों को लूटने के काम से बाज नहीं आते। लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ कर ये लूटपाट और लोगों को गुमराह और शोषण के अड्डे बन जाते हैं। विद्वानों और बिज्ञान ने शातिर लोगो के झूठ को उजागर कर दिया है।

(रुमसिंह राष्ट्रीय अध्यक्ष लेबर पार्टी आफ इंडिया)

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास से सामाजिक अंधविश्वास हटेंगे

धीरे धीरे कुछ परंपराएँ, अंधविश्वासों के रूप में बदल गई है।

-डॉ. दिनेश मिश्र

किसी भी व्यक्ति को बचपन से ही अक्षर ज्ञान के साथ सामाजिक अंधविश्वासों व कुरीतियों के संबंध में सचेत किया जाना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास से विभिन्न अंधविश्वासों व कुरीतियों का निर्मूलन संभव है, व्यक्ति को अपनी असफलता का दोष ग्रह-नक्षत्रों पर न थोपने की बजाय स्वयं की खामियों पर विश्लेषण करना चाहिए, उक्त विचार शासकीय काव्योपाध्याय हीरालाल महाविद्यालय अभनपुर द्वारा आयोजित व्याख्यान में अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष नेत्र विशेषज्ञ डॉ. दिनेश मिश्र ने व्यक्त किये। वे शासकीय महाविद्यालय अभनपुर में व्याख्यान दे रहे थे।

उन्होंने कहा हमारे देश के विशाल स्वरूप में अनेक जाति, धर्म के लोग हैं जिनकी परंपराएँ व आस्था भी भिन्न-भिन्न है **लेकिन धीरे धीरे कुछ परंपराएँ, अंधविश्वासों के रूप में बदल गई है।** जिनके कारण आम लोगों को न केवल शारीरिक व मानसिक प्रताडना से गुजरना पड़ता है बल्कि ठगी का शिकार होना पड़ता है। कुछ चालाक लोग आम लोगों के मन में बसे अंधविश्वासों, अशिक्षा व आस्था का दोहन कर ठगते हैं। उन अंधविश्वासों व कुरीतियों से लोगों को होने वाली परेशानियों व नुकसान के संबंध में समझा कर ऐसे कुरीतियों का परित्याग किया जा सकता है। विभिन्न सामाजिक व चिकित्सा के संबंध में व्याप्त अंधविश्वासों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा देश के विभिन्न प्रदेशों में अनेक प्रकार के अंधविश्वास प्रचलित हैं जो न केवल समाज की प्रगति में बाधक हैं बल्कि आम व्यक्ति के भ्रम को बढ़ाते हैं, उसके मन की शंका-कुशंका में वृद्धि करते हैं।

डॉ. मिश्र ने कहा छत्तीसगढ़ में टोनही के नाम पर महिला प्रताडना की घटनाएँ आम है जिनमें किसी महिला को जादू-टोना करके नुकसान पहुँचाने के संदेह में हत्या, मारपीट कर दी जाती है जबकि कोई नारी टोनही या डायन नहीं हो सकती, उसमें ऐसी कोई शक्ति नहीं होती जिससे वह किसी व्यक्ति, बच्चों या गाँव का नुकसान कर सके। जादू-टोने के आरोप में महिला प्रताडना रोकना आवश्यक है।

अंधविश्वासों के कारण होने वाली टोनही प्रताड़ना, बलि प्रथा,तथा सामाजिक बहिष्कार जैसी घटनाओं से भी मानव अधिकारों का हनन हो रहा है। अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों के निर्मूलन के लिये प्रदेश में पिछले 26 वर्षों से 'कोई नारी टोनही नहीं' अभियान चलाया जा रहा है।

कई बार लोग चमत्कारिक सफलता प्राप्त करने की उम्मीद में ठगी के शिकार हो जाते हैं, जबकि किसी भी परीक्षा, साक्षात्कार, नौकरी प्रमोशन के लिए कठोर परिश्रम व सुनियोजित तैयारी आवश्यक है। तुरन्त सफलता के लिए किसी चमत्कारिक अँगूठी, ताबीज, तंत्र-मंत्र कथित बाबाओं के चक्कर में फँसने की बजाय परिश्रम का रास्ता अपनाना ही उचित है। डॉ. मिश्र ने कहा समाज में जादू-टोना, टोनही आदि के संबंध में भ्रामक धारणाएँ काल्पनिक है, जिनका कोई प्रमाण नहीं है। पहले बीमारियों के उपचार के लिए चिकित्सा सुविधाएँ न होने से लोगों के पास झाड़-फूँक व चमत्कारिक उपचार ही एकमात्र रास्ता था, लेकिन चिकित्सा विज्ञान के बढ़ते कदमों व अनुसंधानों ने कई बीमारियों, संक्रामकों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया है तथा कई बीमारियों के उपचार की आधुनिक विधियाँ खोजी जा रही है। बीमारियों के सही उपचार के लिए झाड़-फूँक, तंत्र-मंत्र की बजाय प्रशिक्षित चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। कोरोना काल में भी आधुनिक चिकित्सा के सहयोग से महामारी पर नियंत्रण पाया जा रहा है.

आमतौर पर अंधविश्वासों के कारण होने वाली घटनाओं की शिकार महिलाएँ ही होती है। अपनी सरल प्रवृत्ति के कारण से सहज ही चमत्कारिक दिखाई देने वाली घटनाओं व अफवाहों पर विश्वास कर लेती है व ठगी व प्रताडना की शिकार होती है, जिससे भगवान दिखाने के नाम पर रुपये, गहने दुगुना करने के नाम पर ठगी की जाती है।

अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों के निर्मूलन व सामाजिक जागरण में अपना अमूल्य योगदान विद्यार्थी एवं स्थानीय ग्रामीण भी दे सकते हैं। उन्हें आस-पास के लोगों को इस संदर्भ में विज्ञान सम्मत जानकारी देनी चाहिए।

(व्यक्तित्व)

राम स्वरूप वर्मा

रामस्वरूप वर्मा (22 अगस्त 1923 – 19अगस्त 1998) उत्तर प्रदेश, जिला कानपुर देहात के गौरी करन गाँव में, पिता वंशगोपाल, माता सुखिया के परिवार में जन्मे, जो एक साधारण किसान परिवार था। उन्होंने उस जमाने में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. और आगरा विश्विद्यालय से एलएलबी की डिग्री प्राप्त की और दोनों बार उन्होंने यूनिवर्सिटी टॉप किया। उन्होंने सिविल सर्विसेज की परीक्षा पास की और फिर साक्षात्कार में सम्मिलित नहीं हुए, क्योंकि उनका मानना था कि अधिकारी बनकर आराम की जिंदगी जीने से बेहतर समाज की बेहतरी के लिए सामाजिक और राजनैतिक संघर्ष है। रामस्वरूपजी का नाम नयी पीढ़ी के लिए अनजाना हो सकता है, लेकिन वह उन लोगों में थे, जिन्होंने सत्ता की नहीं, विचारों की राजनीति की।

उन्होने 'अर्जक संघ' की स्थापना की। लगभग पचास साल तक राजनीति में सक्रिय रहे रामस्वरूप को राजनीति का 'कबीर' कहा जाता है। वे डॉ. राममनोहर लोहिया के निकट सहयोगी और उनके वैचारिक मित्र तथा 1967 में उत्तर प्रदेश सरकार के चर्चित वित्तमंत्री थे, जिन्होंने उस समय 20 करोड़ लाभ का बजट पेश कर पूरे आर्थिक जगत को अचम्भित कर दिया। उनका सार्वजनिक जीवन सदैव निष्कलंक, निडर, निष्पक्ष और व्यापक जनहितों को समर्पित रहा। राजनीति में, जो मर्यादाएँ और मानदण्ड उन्होंने स्थापित किये और जिन्हें उन्होंने स्वयं भी जिया, उनके लिए वे सदैव आदरणीय और स्मरणीय रहेंगे।

रामस्वरूप वर्मा में राजनैतिक चेतना का संचार डा. अम्बेडकर के उस भाषण से हुआ जिसे उन्होंने मद्रास के पार्क टाउन मैदान में 1944 में 'शेडय्यूल्ड कास्ट फेडरेशन' द्वारा आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन में दिया था। इस भाषण में डा. अम्बेडकर ने कहा था कि "तुम अपनी दीवारों पर जाकर लिख दो कि तुम्हें कल का शासक बनना है, जिससे आते-जाते समय तुम्हें हमेशा याद रहे'' इसके अतिरिक्त उन पर डॉ. अम्बेडकर के उस भाषण का भी बहुत ही प्रभाव पड़ा, जिसे उन्होंने 25 अप्रैल 1948 को बेगम हजरत महल पार्क में दिया था। उन्होंने कहा था कि ''जिस दिन अनुसूचित जाति, जनजाति और अन्य पिछड़े वर्ग के लोग एक मंच पर होंगे, उस दिन वे सरदार बल्लभ भाई पटेल और पंडित जवाहर लाल नेहरू का स्थान ग्रहण कर सकते हैं''। उत्तरप्रदेश विधानसभा के वह लम्बे समय तक सदस्य रहे और चरण सिंह के मुख्यमंत्रित्व में वित्तमंत्री रहे। रामस्वरूप वर्मा एकमात्र उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने कार्यकाल में मुनाफे का बजट पेश किया।

उनके द्वारा स्थापित सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था अर्जक संघ ने किसान-दस्तकार जातियों के बीच वैज्ञानिक-मानवतावादी नजरिया विकसित करने का प्रयास किया। बिहार के मशहूर नेता जगदेव प्रसाद ने उनसे ही प्रभावित होकर अपनी पिछड़ा वर्गीय राजनीति को ब्राह्मणवाद विरोधी राजनीति में तब्दील कर दिया।

हिन्दी क्षेत्र में साठ के दशक में समाजवादियों के बीच जाति और वर्ण के सवाल गहराने लगे थे। लोहिया के नेतृत्ववाली संयुक्त समाजवादी पार्टी अर्थात् संसोपा के नारे 'संसोपा ने बाँधी गांठ, पिछड़ा पावें सौ में साठ' ने बड़े पैमाने पर पिछड़े वर्ग के राजनीतिक कार्यकर्ताओं को इससे जोड़ा था। लेकिन इनलोगों ने अनुभव किया कि संसोपा इसे लेकर गंभीर नहीं है। रामस्वरूप जी ने राजनैतिक जीवन की एक घटना का खुलासा अपनी पुस्तक "क्रान्ति क्यों और कैसे" में किया है। वे लिखते हैं, 'मंगल देव विशारद उत्तर प्रदेश राज्य के सार्वजनिक विभाग में मंत्री रहे। वे संसोपा में रहते हुए जब उन्हें अपने जन्म के जिला आजमगढ़ में एक भूमिहार के अन्य उच्चवर्णीय साथियों से अलग बैठाकर पत्तल के अभाव में एक फोड़ी गयी हण्डिया (छोटा मिट्टी का बर्तन जिसका मुँह फोड़कर चौड़ा पात्र बनाया गया

था) चावल, दाल व सब्जी एक साथ दे दी गयी और पानी पीने के लिए एक कुल्हड़ के अभाव में दीवाली के दिये में पानी दिया गया। तब मंगल देव ऐसे विद्वान-सम्मानित व्यक्ति पर इस घृणा और तिरस्कार की कितनी चोट लगी होगी, इसका अनुभव दरिद्र बाह्मण कैसे कर सकता है। भले ही भूमिहार पाखाना खाने वाली गाय का झूठा बर्तन माँज डालते हों, पवित्र मानते हों और उनके पालतू कुत्ते रोज बर्तनों में दूध-रोटी खाते हों, जिनके माँजने में उन्हें रंचमात्र भी संकोच नहीं होता है। लेकिन मंगलदेव के खाने में धातु का उनका बर्तन किसी काम का नहीं रह जाता। ऐसे तिरस्कार और घृणापूर्ण विचार पुनर्जन्म पर आधारित ब्राह्मणवाद के अलावा कहाँ से आ सकते हैं। यह दशा उत्तर प्रदेश राज्य के एक अन्त्यज मन्त्री की है, तो फिर करोड़ों अन्त्यज मलेच्छ और शूद्र कितना तिरस्कार और घृणा पाते होंगे, इसका महज अनुमान लगाया जा सकता है। यह सही है मंगल देव विशारद इस अपमान को न सह सके और उन्होंने खाना नहीं खाया, लेकिन इतनी तेजस्विता तो उँगली में गिने जानेवाले लोगों में ही है''

आरक्षण और अवसर नहीं, इस वर्णवादी-जातिवादी व्यवस्था को खत्म करने की जरुरत है। स्वयं लोहिया की गाँधी में आस्था थी। गाँधी वर्णवाद को स्वीकृति देते थे। इसी सवाल पर अम्बेडकर गाँधी से दूर हुए थे। लोहिया गाँधीवादी थे, रामस्वरूपजी अम्बेडकरवादी। लोहिया के आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम राम और मोहनदास करमचन्द गाँधी थे, माननीय रामस्वरूप वर्मा के आदर्श बुद्ध, फूले, अम्बेडकर और पेरियार थे। डा. अम्बेडकर ने कहा था, ''असमानता की भावना ब्राह्मणवाद को उखाड़ फेकों, वेदों और शास्त्रों में डाइनामाइट लगा दो।''

अर्जक संघ के संस्थापक माननीय रामस्वरूप वर्मा ने अर्जक संघ के कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि पूरे देश में जहाँ-जहाँ अर्जक संघ के कार्यकर्ता हैं, वे बाबा साहब अम्बेडकर के जन्म दिन को 'चेतना-दिवस' के रूप में मनाएँ और मूलनिवासी बहुजनों को जागरूक करने के लिए 14 अप्रैल 1978 से 30 अप्रैल तक पूरे महीने रामयण और मनुस्मृति का दहन करें। अर्जक संघ के कार्यकर्ताओं ने रामस्परूप वर्मा के आदेशों का पालन करते हुए रामायण और मनुस्मृति को घोषणा के साथ जलाया। रामस्वरूप वर्मा और जगदेव प्रसाद जैसे नेताओं ने गाँधीवादी लोहियावाद से विद्रोह किया और फुले-अम्बेडकरवाद के नजदीक आये। जीवन के आखिरी समय में कर्पूरी ठाकुर का भी गाँधीवाद से मोहभंग हो गया था। वह भी फुले-अम्बेडकरवाद से जुड़ाव महसूस कर रहे थे। आनेवाली पीढ़ियाँ जब जागरूक होंगी, इस राजनीतिक विकास का सम्यक अध्ययन प्रस्तुत करेंगी। जब शासक जातियों ने बाबा साहब द्वारा लिखित- 'जातिभेद का उच्छेद' और 'धर्म परिवर्तन करें' दोनों पुस्तकों को जब्त करने का आदेश जारी कर दिया, तो शासनादेश के विरोध में रामस्वरूप वर्मा ने ललई सिंह यादव से हाईकोर्ट इलाहाबाद में याचिका दायर करवायी। ललई सिंह यादव ने विधिक लड़ाई जीतकर इलाहाबाद हाईकोर्ट से दोनों पुस्तकों को बहाल करवाया। इतना ही नहीं, उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार पर मानहानि का मुकदमा दायर कर उन्होंने उत्तरप्रदेश सरकार से पूरे मुकदमे का हर्जा-खर्चा भी वसूल किया।

डा. लोहिया को 'हिन्दुत्व' को खारिज किया जाये, कतई बर्दाश्त नहीं था। इन्ही मुद्दों पर डा. लोहिया का रामस्वरूपजी से भारी विवाद हुआ और यही विवाद डा. लोहिया की पार्टी से अलगाव का कारण बना। रामस्वरूपजी इस मुद्दे पर कितने सही थे, दूसरा बड़ा सबूत यही है लोहिया के रिश्ते तत्कालीन जनसंघ से बहुत गहरे हो गये थे। उनके हिन्दुत्व प्रेम का ही परिणाम था जो उन्होने जनसंघ प्रमुख दीनदयाल उपाध्याय के पक्ष में चुनाव प्रचार किया था और उनके महत्त्वपूर्ण साथी जार्ज फर्नांडीज जैसे लोग सीधे भारतीय जनता पार्टी में जुड़ गये थे। रामस्वरूप जी ने नारा दिया था, "मारेंगे, मर जायेंगे, हिन्दू नहीं कहलायेंगे"।

रामस्वरूप वर्मा का मानना था कि सामाजिक चेतना से ही सामाजिक परिवर्तन होगा और सामाजिक परिवर्तन के बगैर राजनैतिक परिवर्तन सम्भव नहीं। अगर येने-केन-प्रकारेण राजनैतिक परिवर्तन हो भी गया, तो वह ज्यादा दिनों तक टिकनेवाला नहीं

होगा।

रामस्वरूप वर्मा जी ने सामाजिक चेतना और जागृति पैदा करने के लिए 1 जून 1968 को सामाजिक संगठन 'अर्जक संघ' की स्थापना की। अर्जक संघ गाँव-गाँव जाकर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करता था, जिसने ब्राह्मणवाद की चूलें हिला दी थीं। कांग्रेस ने अर्जक संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। उसके बाद गाँवों में रात के अँधेरे में छिपकर नाटक होने लगे। अक्सर पुलिस और पीएसी आती थी पकड़ने के लिए। बहुत लोग गिरफ्तार हुए। धीरे-धीरे कांग्रेस ने इसे खत्म कर दिया।

अर्जक संघ से ब्राह्मण कितना भयभीत हो गया था इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि ब्राह्मणों ने नफरत से भरा हुआ नारा दिया था 'अर्जक संघी महा भंगी'। उनके अनुयायियों ने ही उत्तर प्रदेश विधान सभा में रामायण के पन्ने फाड़े। बाहर रामायण और मनुस्मति को जलाकर राख कर दिया।

रामस्वरूपजी ने वित्तमंत्री रहते हुए भी कभी पद का दुरूपयोग नहीं किया, व्यक्तिगत यात्रा वो रिक्शे पर करते थे, परिवार का कोई दूसरा सदस्य सरकारी गाड़ी में नहीं बैठा कभी।

मुझे याद है जब वो आखिरी चुनाव हारे थे। गाँव-गाँव वो पैदल ही घूमते थे, उनके पैरों से खून रिस रहा था। वह आखिरी चुनाव था उनका।

उनके पोते को मैंने साइकिल से स्कूल जाते देखा। गाँव में उनका घर वैसा ही सामान्य-सा है जैसा सबका होता है।

कभी ईमानदारी से जब भारत का इतिहास लिखा जायेगा, तो रामस्वरूप वर्माजी का नाम सामाजिक आन्दोलनकर्ता और सामाजिक बदलाव लाने वाले सबसे महत्त्वपूर्ण लोगों में शुमार होगा।

सामाजिक न्याय के पुरोधा एवं महान क्रन्तिकारी नेता को नमन!!

स्मृति-शेष

प्रगतिशील साहित्यकार डॉ. रणजीत की जीवन संगिनी डॉ. सुधा रणजीत का 23 अगस्त को दोपहर 1 बजे निधन हो गया। वह हिंदू गर्ल्स कॉलेज, सीतापुर, उत्तर प्रदेश से हिंदी के रीडर-अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्ति के बाद बैंगलोर में अपनी बेटी एंजिला रणजीत और बेटे अनुराग रणजीत, दोनों आईटी प्रोफेशनल्स के कारण, 2007 से बैंगलोर में रह रही थीं। सुधा रणजीत भारत के निरीश्वर मानववादी आंदोलन की एक कर्मठ कार्यकर्ता थीं और अक्टूबर 19 को बीकानेर में आयोजित उत्तर भारतीय नास्तिक सम्मेलन के आयोजन में एक सक्रीय भूमिका अदा की थी। वे अपनी आंखें और शरीर दान कर चुकी थीं और उनके निश्चय के अनुसार उनकी आंखें बैंगलोर के डॉ. राजकुमार आई बैंक को और शरीर रमैया मेमोरियल अस्पताल को सौंप दिया गया। डॉ. सुधा की प्रकाशित पुस्तकें हैं -- 'सातवें दशक की कविता का शब्द विधान', 'समकालीन कविता के बदलते सरोकार' और निबंधों का सम्पादित संकलन 'ललित उत्सव'। वे पंजाब और हरियाणा की तर्कशील सोसाइटी तथा विजयवाड़ा के नास्तिक केंद्र को एक-एक लाख का अनुदान देने का निश्चय कर गयी थीं।

तर्कशील साथी रशपाल सिंह ढिलों गांव मांडी सदरा जिला कैथल का 30-8-2021 को निधन हो गया।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा उक्त साथियों के निधन पर उनके परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

-महासचिव, तर्कशील सोसायटी हरियाणा

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

रागणी

हिन्दू-मुस्लिम न्यारे-न्यारे, कित चाल पड़े भाई
धरी ठीकरी आंख्या पै, ना रही पड़े दिखाई।

करै बुराई छुप-छुप कै, धर्म ढाल बणा राखी
कलयुग म्हां माणस नै, कैसी चाल बणा रखी
काम भेडिये आले सैं, भेड़ की खाल खिणा रखी
पूत होण्े कपूत अड़ै, मां तंग-हाल बणा रखी
बेईमानी करैं राज वास्ते, सै उनकी कला सवाई

धर्म के ठेकेदार जौण से, हम नै धर्म सिखावैं
अपणे फैदे के वास्ते, हम नै लड़ाणा चाहवैं
उनकी कुर्सी रहै सलामत, बीज फूट के पावैं
नकटी देवी, ऊत पुजारी, ये ऐसे ढौंग रचावैं
उनके चक्कर म्हं पड़ कै, घर म्हां आग लगाई

कुछ मस्जिद के दीवाने, कुछ मंदिर की बात करैं
हम थारे वफादार सैं, जनता की गेल्यां घात करैं,
तन के उजले मन के काले, नए-नए उत्पात करैं
कठे होण नहीं दें हम नै, इसी कसूती बात करैं
गाम शहर और गली-गली म्हं, धर्म बारूद बिछाई

'रामेश्वर' हम भी चुप चाप, क्यूं झुकाए नाड़ खड़े
बिना समझे अर बिन जाणे, तनै झूठी टेक उठाई।

–रामेश्वर 'गुप्त'

आर्थिक सहयोग

तर्कशील साथी मनोज मलिक, चण्डीगढ़ ने अपनी माता सावित्री देवी जी जिनका देहांत 25 जुलाई 2021 के दिन हृदयघात हुआ है, की याद में तर्कशील पथ पत्रिका के लिए 1500/-रुपये (पन्द्रह सौ रुपये) का सहयोग भेजा है। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनके इस सहयोग के लिए उनका हार्दिक आभार प्रकट करती है।

महासचिव,
तर्कशील सोसायटी हरियाणा

रेशनेलिस्ट सोसायटी हरियाणा की ओर से-

पांच लाख रुपए जीतने की चुनौती

रेशनेलिस्ट सोसयटी हरियाणा (रजि.) की ओर से घोषणा की जाती है कि सोसायटी भारतीय मुद्रा का 5 लाख रुपया पुरस्कार हेतु संसार के किसी भी ऐसे व्यक्ति को देने के लिए वचनबद्ध है जो धोखारहित अवस्थाओं में अपनी दिव्य अथवा आलौकिक शक्ति का प्रदर्शन निम्नलिखित शर्तों में से किसी एक अथवा अधिक को पूरा करके कर सकता हो। यह पेशकश तर्कशील सोसायटी से किसी व्यक्ति द्वारा प्रथम पुरस्कार जीतने तक जारी रहेगी।

सभी देव पुरुष, बाबा, साधु, योगी, सिद्ध, गुरु, तांत्रिक, स्वामी, ज्योतिषी, मुल्ला-मौलवी, पादरी, भिक्षुक, मुनि एवं कोई भी ऐसा अन्य व्यक्ति जिसने आध्यात्मिक क्रिया-कलापों, प्रभु भक्ति अथवा वरदान से कोई दिव्य शक्ति प्राप्त की हो, इस पुरस्कार को निम्नलिखित चमत्कारों में से किसी एक का प्रदर्शन करके जीत सकता है :

जो अपनी दिव्य शक्ति द्वारा :

1. सील बन्द करंसी नोट का क्रमांक पढ़ सकता हो। 2. करंसी नोट की ठीक नकल उसी समय पैदा कर सकता हो। 3. ऐसी वस्तु जिसकी मांग करें, हवा में से प्रकट कर सकता हो। 4. हवा में उड़ सकता हो। 5. शुद्ध जल की ऊपरी सतह पर चल सकता हो। 6. जलते हुए अंगारों पर नंगे पांव आधे मिन्ट तक खड़े रहकर भी न झुलसे। 7. किसी विशेष वस्तु को हिला या मोड़ सकता हो। (बिना कोई शारीरिक, यांत्रिक, प्राकृतिक बल लगाए।) 8. टैलीपैथी द्वारा किसी विशेष दूसरे व्यक्ति के विचार पढ़ सके। 9. प्रार्थना, भक्ति, जल या पवित्र राख द्वारा मानव शरीर के कटे हुए अंग को एक इंच तक बढ़ा सके। 10. अपना शरीर एक स्थान पर छोड़ स्वयं दूसरे स्थान पर प्रकट हो सकता हो। 11. अपनी श्वास-क्रिया को 30 मिन्ट तक रोक सकता हो। 12. जो आदमी को कुत्ते में या कुत्ते को किसी अन्य जानवर में बदल सके। 13. किसी ऐसे भूत-प्रेत या आत्मा को प्रकट कर सके, जिसका कैमरे द्वारा फोटो लिया जा सके। 14. ताला लगे कमरे में से बाहर आ सकता हो। 15. किसी वस्तु का भार बढ़ा सकता हो। 16. पानी को शराब, पैट्रोल अथवा खून में परिवर्तित कर सकता हो। 17. छुपी हुई वस्तु को खोज सके। 18. मंत्र-तंत्र अथवा टोने सोसायटी के किसी विशेष सदस्य को निर्धारित समय में शारीरिक क्षति पहुंचा सके। 19. संगीत पैदा करने वाले किसी यंत्र बीन, बांसुरी, बाजा या ढोलक को बंद कर सकता हो। 20. पुनर्जन्म के आधार पर कोई विशेष भाषा बोल सकता हो। 21. घरों में होने वाली आग-लगने की, ईंट-पत्थर गिरने की तथा अपने-आप कपड़े कटने की घटनाओं में किसी भूत अथवा दिव्य शक्ति का प्रमाण दे सके। 22. जो ज्योतिषी, पांडा व मुफ्त में हाथ देखने वाला व्यक्ति ज्योतिषी को 'विज्ञान' बतलाकर लोगों को गुमराह करता हो, हमारे पुरस्कार को जीत सकता है। यदि वह 10 विभिन्न व्यक्तियों की जन्म कुंडलियों व 10 हस्त चित्रों को देखकर संबंधित पुरुषों तथा स्त्रियों की अलग-अलग संख्या, मृत और जीवित लोगों की संख्या या जन्म का ठीक समय व स्थान, अक्षांस-रेखांश के साथ बता दे, इसमें 5 प्रतिशत गलती की छूट दी जाएगी।

इन उपरोक्त 22 चुनौतियों के अतिरिक्त कोई भी ऐसी चुनौती जिसे तर्कशील सोसायटी किसी विशेष समय व अवस्था में मंजूरी दे, वह भी पुरस्कार जीतने के लिए माननीय होगी।

उपरोक्त चुनौतियां निम्नलिखित शर्तों के साथ क्रियान्वित होंगी।

1. जो व्यक्ति सोसायटी की इस चुनौती को स्वीकार करेगा, चाहे वह पुरस्कार लेने की इच्छा रखता हो अथवा न उसे सोसायटी के किसी मनोनीत किए हुए व्यक्ति के पास 5 हजार रुपया धरोहर राशि के रूप में जमा करवाने होंगे। यह राशि शर्त जीत लेने पर पुरस्कार की राशि के साथ लौटा दी जाएगी। यह धरोहर की राशि ऐसे लोगों को दूर भगाने के लिए है, जो सस्ती प्रसिद्धि चाहते हैं, नहीं तो वे हमारे समय, धन व शक्ति को व्यर्थ में नष्ट करेंगे।

2. धरोहर राशि जमा करवाने के बाद संबंधित व्यक्ति के चमत्कारों का पहले सोसायटी के विशिष्ट सदस्य किसी निश्चित समय पर प्रारंभिक परीक्षण लेंगे।

3. यदि चुनौती स्वीकार करने वाला व्यक्ति प्रारंभिक परीक्षण में असफल रहता है तो उसकी धरोहर राशि जब्त कर ली जाएगी तथा उसे अंतिम परीक्षण में भाग लेने की मंजूरी नहीं दी जाएगी।

4.यदि वे प्रारंभिक परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है तो अंतिम प्रदर्शन हमारे द्वारा लोगों की उपस्थिति में होगा।

5.यदि वह अंतिम प्रदर्शन जीत जीत जाता है तो उसे 5 लाख रुपया पुरस्कार तथा 5 हजार रुपया धरोहर राशि दे दिए जाएंगे।

6.सभी प्रदर्शन, धोखा न दिए जाने वाली अवस्थाओं में हमारी पूर्ण संतुष्टि तक किए जाएंगे।

7. भाषा संबंधी विवाद पर डा. अब्राहम थामस काव्वूर द्वारा 1968 में जारी अंग्रेजी भाषा में चुनौती ही मान्य होगी।

राज्य कार्याकारिणी

रेशनलिस्ट (तर्कशील)सोसायटी हरियाणा (रजि).

उलटफेर का दौर

जैसे-जैसे सामंती समाज एक नई पूंजीवादी व्यवस्था में तब्दील हुआ, सामंती मूल्य चरमराने लगे। कई नई अवधारणाएँ उभरने लगीं - लोकतंत्र, महिला अधिकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवाधिकार, शिक्षा, मानव समानता, आदि। लेकिन जल्द ही यह बाजार में मुक्त प्रतिस्पर्धी पूंजीवाद से इजारेदार पूंजीवाद (3) की ओर बढ़ जाता है, यानी कम से कम हाथों में पूंजी जमा होने लगती है। छोटे पूंजीपति प्रतिस्पर्धा से बाहर हैं। अमीर और गरीब के बीच की खाई न केवल चौड़ी होती है बल्कि ज्ञान और अज्ञान के बीच की खाई भी चौड़ी होती है। लब्बोलुआब यह है कि एक तरफ पूंजी और वैज्ञानिक प्रगति का शिखर है और दूसरी तरफ अत्यधिक गरीबी और अज्ञानता। साथ ही सूचना के क्षेत्र में वैज्ञानिक क्रांति हो रही है और सभी मूल्य उलटे हो गए हैं। अब सामंती मूल्य आधुनिक वेश में लौट रहे हैं। अंधविश्वास भी नए जमाने के हो जाते हैं। अंधविश्वास की साक्षर लोगों की अपनी वैज्ञानिक व्याख्या है। हमारे देश में ही कोरोना के इलाज के लिए थाली बजाई जाती थी, मोमबत्तियां जलाई जाती थीं, गोमूत्र/गोबर का भी इस्तेमाल किया जाता था और आखिरकार लाला रामदेव ने कोरोनिल के साथ इस संकट से करोड़ों रुपये कमाए।

गरीबों की कलाई पर बनी मौली का तर्क तो समझ में आता है लेकिन जो लोग अपने हाथ की पांचों अंगुलियों में महंगी पलकों वाली अंगूठियां पहनते हैं, वे आपको समझाना शुरू कर देते हैं कि कैसे इन महंगी नगों से निकलने वाली %किरणें% खुशियां लाती हैं. प्रत्येक राशि के लिए एक अलग धातु है, और कई सोने की अंगूठी में नीलम, पुखराज, डाल कर रखते हैं। लाफिंग बुद्धा की मूर्तियाँ, रेकी क्रिस्टल के गहने आदि अंधविश्वासी आधुनिक समाज का बड़ा बाजार हैं। नींबू - मिर्च को खाने के रूप में खाने की बजाय हर शनिवार को दुकानों, घरों और वाहनों में लटकाकर और जलाकर सड़कों पर फेंक दिया जाता है।

यह एक ऐसा समय है जब धर्म अपनी बुराइयों को सुधारने की बजाय महिमामंडित करने और उन्हें बचाने का काम करने लगता है। अखबार में छपी खबरें कॉरपोरेट मशीनों में छपने से सूचना देने का काम नहीं होता, छुपाने का काम शुरू हो जाता है। धर्म का उपयोग धर्म के प्रचार और तर्क को नीचा दिखाने के लिए किया जाता है। हालांकि शिक्षा नीति नई है, लेकिन पुरानी शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। सीखने की बुनियादी प्रवृत्ति के खिलाफ शिक्षा प्रणाली की स्थापना की जा रही है। देश अहिंसा के पुजारी गांधी का है, लेकिन हिंसक लोगों का वर्चस्व है। धार्मिक दंगों में आम आदमी की जान गई है, धर्म को खतरा है।

यदि हम अपने समाज में प्रचलित अंधविश्वासों और अंधविश्वासों का विश्लेषण करें तो हम कह सकते हैं कि आज का मनुष्य आधुनिक है, जब तक कि वह चीजों को खरीद और उपयोग नहीं करता है, लेकिन अपने मस्तिष्क का उपयोग करने में वह एक आदिम इंसान की तरह व्यवहार करता है। जब सबसे अच्छे उपकरणों से घर बनाने की बात आती है तो यह आधुनिक है लेकिन एक %भौतिकवादी% द्वारा बनाए गए घर को गिराने और फिर से बनाने में लाखों रुपये खर्च हो सकते हैं। विद्वान आधुनिक काल को उत्तर आधुनिक काल कह सकते हैं। लेकिन आम आदमी के लिए यह एक एक समझ न आने वाली भाषा है। यह आधुनिकता किस स्टेशन से समय और थल की ट्रेन में सवार हुई? पढ़े-लिखे आदमी अनपढ़ के हाथ में हाथ डाले बैठे हैं। पंडा आप के हाथ की हथेली में आपकाभविष्य देखता है, पहले थोड़ा डरावना और फिर अच्छे की उम्मीद कराता है ताकि उसका हाथ खुशी-खुशी आपकी जेब में पहुंच जाए और पण्डे के लिए एक बड़ा नोट लेकर आए। देश का मुखिया गन्दे नाले की गैस से चाय बनाने की कहानियां सुनाता है वह गैस सिलेंडर पर सब्सिडी छो?ने की अपील भी करता है मुझे नहीं पता कि इसे उत्तर-आधुनिक युग क्यों कहा जाता है। आने वाले समय में वर्तमान को शायद ही आधुनिक युग कहा जाएगा। ---जसवंत मोहाली

किसान मोर्चा - पुस्तकों के साथ संवाद

किसान मोर्चा में, साहित्य वाहन के साथ तर्कशील कार्यकर्ता

तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के साथी यमुनानगर में साहित्य वाहन के साथ

सिंघु बार्डर पर तर्कशील काफिला

तर्कशील कार्यकर्ता गाज़ीपुर बार्डर पर

तर्कशील कार्यकर्ता टिकरी बार्डर पर

संदेश और वादा

तर्कशील पत्रिका वैज्ञानिक चेतना की एक प्रहरी पत्रिका है। देश-विदेश में इसके पाठकों की बड़ी संख्या है। हजारों तर्कशील कार्यकर्ता हैं जो इस को जन जन पहुंचाने के लिए कृत संकल्प हैं। यह पत्रिका, वैज्ञानिक चेतना, ज्ञान- विज्ञान, स्वास्थ्य, मनोविज्ञान और सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों का महत्वपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इसे और व्यापक बनाने की आवश्यकता है।तर्कशील के माध्यम से एक पाठक दूसरे पाठकों से जुड़ता है। यह अभ्यास वैज्ञानिक चेतना और तर्कशील जीवन जीने को प्रेरित करता है। हम इसे और व्यापकता में ले जाएंगे , यह संदेश और वादा है।
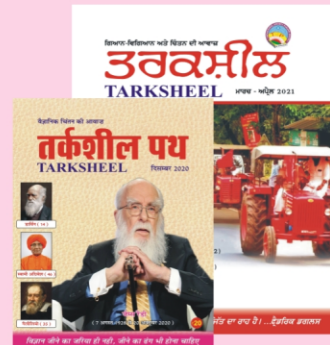
अक्तूबर 2021 Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 8 अंक 5

तर्कशील सोसायटी पंजाब के राज्यस्तरीय प्रतिनिधि सम्मेलन में आगामी दो वर्षों के लिए 13 सदस्यों की राज्य कार्यकारिणी चुनी गई

राज्य स्तरीय प्रतिनिधि सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधि एंव दर्शकगण

https://www.youtube.com/channel/UCqYAGMmTHN4YnfiV6BUgZjg

If undelivered please return to :
Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक, मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।